श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

खुलासा

किताब खुलासा वानी हकी सूरत फजर की।
रूहें अर्स की दिल दे देखो।

खुलासा फुरमान का
कुरान का खुलासा

ए होत फुरमाया हक का, जो किया खुलासा ए।
किए हादीने जाहेर, याही मगज मुसाफ के।। १ ।।

हक श्री राजजी महाराज के हुकम से यह कुरान का खुलासा हादी श्री प्राणनाथजी ने कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को जाहिर किया है।

ए देखो खुलासा फुरमान का, मोमिन करें विचार।
रूहें हक सूरत दिल में लई, छोड़ी दुनियां कर मुरदार।। २ ।।

हे मोमिन! विचार करके देखो। यह कुरान का सार (खुलासा) है जो ब्रह्मसृष्टियों ने युगल स्वरूप श्री राजजी महाराज को दिल में बिठाकर दुनियां को मुरदार (नाचीज) समझा और छोड़ दिया।

चौदे तबक होसी कायम, इन नुकते इलम हुकम।
हक अर्स वाहेदत में, हुआ रोसन दिन खसम।। ३ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से और श्री राजजी महाराज के हुकम से सारे ब्रह्माण्ड (चौदह लोकों की दुनियां) को इस तारतम वाणी से मुक्ति मिलेगी। श्री राजजी महाराज का अर्श परमधाम है जहां सब एकदिली है, जो आज दिन तक किसी को पता नहीं था उसकी पहचान इस दुनियां में अब जाहिर हो गई। अज्ञानता हटकर ज्ञान का दिन जाहिर हो गया।

बड़ाई नुकते इलम की, कहूं जाहेर न एते दिन।
खोले द्वार खिलवत के, एही कुंजी बका वतन।। ४ ।।

तारतम ज्ञान ही अखण्ड परमधाम की जानकारी देने वाली कुंजी है जो अभी तक जाहिर नहीं हुई थी। अब इस तारतम से परमधाम के छिपे रहस्यों को जाहिर कर दिया।

खुले द्वार सब अर्सों के, एही रूह अल्ला इलम।
एही लदुन्नी खुदाई, ए कौल हक हुकम।। ५ ।।

रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) के इल्म और तारतम वाणी से तीन सृष्टियों के अर्शों के द्वार खुल गए, अर्थात् क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के धाम, बैकुण्ठ, अक्षरधाम और परमधाम की सबको पहचान हो

Nijanand App

गई। श्री राजजी महाराज ने वायदा किया था कि मैं आकर कुरान के भेद खोलूंगा, उसी के अनुसार यह उन्हीं के मुख की वाणी है। जो दुनियां में नहीं थी, वह तारतम वाणी भेज दी।

ए कलाम आए हक से, ए नुकता कह्या जे।
ए जानें विचारें मोमिन, जिन वास्ते हुआ ए।। ६ ।।

यह तारतम वाणी श्री राजजी महाराज के अपने मुखारबिन्द की वाणी है। इसी को नुक्ता इलम कहा है। इसको मोमिन ही समझेंगे और विचारेंगे जिनके वास्ते यह आई है।

किया बेवरा इन वास्ते, उतरे अर्स से रूहें फरिस्ते।
मोमिन मुतकी ए सुन के, रेहे न सकें जुदे।। ७ ।।

रूहें और फरिश्ते (ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि) अपने अर्शों से आए हैं। उन्हीं के वास्ते कुरान का यह खुलासा किया है। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि इसको सुनकर इससे अलग नहीं रह सकतीं।

जाहेर हुआ फुरमान से, क्यों आरिफ करें न सहूर।
रूहें फरिस्ते और दुनियां, ए लिख्या तीनों का मजकूर।। ८ ।।

यह बात कुरान से जाहिर हो गई है। कुरान के ज्ञानी फिर इस पर विचार क्यों नहीं करते। कुरान में ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टि तीनों की हकीकत लिखी है।

देखो दोऊ पलड़े, एक दुनी और अर्स अरवाए।
रूहें फरिस्ते पूजें बका सूरत, और लिख्या दुनियां खुदा हवाए।। ९ ।।

एक तरफ अर्श की अरवाहें ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि हैं, दूसरी तरफ दुनियां की जीवसृष्टि का खुलासा है। ब्रह्म और ईश्वरीसृष्टि श्री राजजी महाराज अखण्ड पारब्रह्म की पूजा करेंगी और जीवसृष्टि निराकार की पूजा करेंगी।

ए जो गिरो अर्स अजीम की, तिन पे हकीकत मारफत।
बड़ी बड़ाई रूहन की, बीच लाहूत बका वाहेदत।। १० ।।

जो परमधाम की जमात ब्रह्मसृष्टियां हैं वही हकीकत और मारफत, ज्ञान और विज्ञान की वाणी को समझती हैं। रूहों की अखण्ड परमधाम में, जहां एकदिली है, बड़ी बड़ाई है।

नूर मकान से पैदा हुई, ए जो गिरो फरिस्तन।
कायम वतन से उतरे, सो पोहोंचे न हकीकत बिन।। ११ ।।

अक्षरधाम से जो सृष्टि यहां पैदा हुई है वही ईश्वरीसृष्टि हैं यह भी अपने अखण्ड घर से उतरकर खेल में आई हैं यह भी हकीकत की वाणी के बिना अपने घर नहीं पहुंच सकेंगे।

ए बेवरा सिपारे आम में, इन्ना इन्जुलना सूरत।
रूहें फरिस्ते दे सलामती, करें हुकम फजर बखत।। १२ ।।

यह विवरण कुरान के आम सिपारा की इन्ना इन्जुलना सूरत में लिखा है जिसमें रूहें और फरिश्ते फजर तक सलामती (सुरक्षित) से दुनियां में रहेंगे और फजर के वक्त दुनियां को अखण्ड करने का हुकम देंगे।

ए पैदा बनी-आदम की, ए जो सकल जहान।
सो क्यों कर आवे अर्स में, बिना अपने मकान।। १३ ।।

सारी दुनियां आदि आदम (नारायण) की औलाद है और इसलिए यह अपने मुकाम बैकुण्ठ (निराकार) को छोड़कर अखण्ड परमधाम में नहीं आ सकते।

Nijanand App

जाहेर सिपारे आठमें, लिख्या पैदा आदम हवाए।
अबलीस लिख्या दुनी नसलें, और दिल पर ए पातसाह।। १४ ।।

कुरान के आठवें सिपारे में आदम और हव्वा की हकीकत लिखी है। आदम की औलाद (जीवसृष्टि) के दिल पर शैतान अबलीस (नारद दिलों पर बैठा है) की हुकूमत है।

भया निकाह आदम हवा, दुनी निकाह अबलीस।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पूजे हवा अपनी खाहिस।। १५ ।।

आदम और हव्वा (नारायण और माया) की शादी हुई और दुनियां की शादी अबलीस (नारद) से हुई। कुरान में साफ लिखा है कि यह इच्छाओं की पूर्ति के लिए निराकार की पूजा करेंगे।

तिन हवा हिरस से पैदा हुई, अपनी खाहिसें जे।
सो फैल कर जुदे पड़े, ए जो फिरे दुनियां के फिरके।। १६ ।।

अपनी-अपनी चाहनाओं से माया के अन्दर जिसकी जहां से इच्छा पूरी हुई, उसी के अनुसार कर्म करके दुनियां अलग-अलग धर्मों में बंट गई।

पैदास बीच अबलीस कह्या, ए जो आदम की नसल।
पूजे हवा को खुदा कर, दुनियां एह अकल।। १७ ।।

आदम की औलाद (आदमी) के दिल में शैतान (अबलीस, नारद) की बैठक बतलाई। इस वास्ते दुनियां वाले अपनी अकल से निराकार को ही खुदा करके पूज रहे हैं।

कह्या कुलफ आड़े ईमान के, हवाई का देख।
दुनी का लिख्या बेवरा, सो ए कहूं विवेक।। १८ ।।

दुनियां के दिलों में खुदा के लिए ईमान लाने के वास्ते निराकार का ताला लगा है, अर्थात् नारद उनको नारायण निराकार से आगे नहीं जाने देता। ऐसा दुनियां का विवरण है जो विचार कर कह रहा हूं।

राह पकड़े तौहीद की, धरे महंमद कदमों कदम।
सो जानो दिल मोमिन, जिन दिल अर्स इलम।। १९ ।।

एक पारब्रह्म अक्षरातीत की पूजा करना तथा आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बताये हुए रास्ते पर केवल मोमिन (ब्रह्मसृष्टि), जिनके दिलों में खुदाई इल्म (जागृत बुद्धि का ज्ञान) है, ही चलेंगे।

कह्या सिजदा आदम पर, अजाजीलें फेरया फुरमान।
सो लिखी लानत सबन को, जो औलाद आदम जहान।। २० ।।

अजाजील को आदम के ऊपर सिजदा बजाने का हुकम खुदा ने दिया। इसे अजाजील (विष्णु भगवान) ने ठुकरा दिया और हुकम नहीं माना। इसके कारण सारी दुनियां जो आदम की औलाद है उसको सजा मिली, क्योंकि अजाजील का मन नारद सबके अन्दर बैठा है।

असल दुनी की ए भई, जो लिखी माहें फुरमान।
पातसाही अबलीस दिल पर, जो करत है सैतान।। २१ ।।

कुरान के बीच में दुनियां की हकीकत इसी तरह की लिखी है। यह शैतान अबलीस दुनियां के दिलों पर बैठकर हुकूमत कर रहा है।

Nijanand App

गुनाह किया अजाजीलें, दुनी दिल लगी लानतः
ढूंढ़ें दज्जाल को बाहेर, पावें ना लिखी इसारत।। २२ ।।

गुनाह किया अजाजील (विष्णु भगवान) ने और सजा मिली दुनियां को, इसलिए दुनियां वाले शैतान को बाहर ढूंढ़ते हैं और कुरान में लिखी इशारतों को नहीं समझते जो इस तरह हैं।

अबलीस लिख्या दुनी नसलें, पातसाही करे दिलों पर।
ऐसा लिख्या तो भी ना समझे, ए देखें ना रूह की नजर।। २३ ।।

आदम की नस्ल दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस (नारद) की बादशाही है, ऐसा कुरान में स्पष्ट लिखा है। फिर भी आत्म दृष्टि से न देखते है और न समझते हैं।

चौदे तबक के तखत, बैठा मलकूत अजाजील।
राह मारत सब दुनी दिलों, अबलीस इनों वकील।। २४ ।।

चौदह लोकों के सिंहासन (बैकुण्ठ में) पर अजाजील (विष्णु) फरिश्ता बैठा है। जिसका वकील अबलीस शैतान (नारद) है जो सब दुनियां के दिलों पर बैठकर खुदा के रास्ते पर चलने नहीं देता।

बुरका हवा का सिर पर, ले बैठा बुजरक।
दे कुलफ आड़े ईमान के, किए सब हवा के तअलुक।। २५ ।।

यह अजाजील फरिश्ता अपने ऊपर निराकार का आवरण (बुर्का) ओढ़े बैठा है। दुनियां खुदा पर ईमान न ला सके, इसलिए इसने निराकार का ताला लगा रखा है। सारी दुनियां को इस तरह से निराकार का पूजक बना दिया है।

तोड़ हवा कुलफ ले ईमान, सोई कह्या सिरदार।
हवा तरक कर लेवे तौहीद, ए बल पैगंमरी हुसियार।। २६ ।।

जो निराकार के ताले को तोड़कर खुदा (पारब्रह्म) पर यकीन लाएगा वही ब्रह्मसृष्टि है। निराकार को छोड़कर एक पारब्रह्म को पाने की ताकत केवल ब्रह्मसृष्टियों में है।

पूजे हवा कौल तोड़ के, ए फौज सबे अबलीस।
लेने बुजरकी जुदे पड़े, कर एक दूजे की रीस।। २७ ।।

जो पारब्रह्म को छोड़कर निराकार को पूजते हैं वह सब शैतान की फौज जीवसृष्टि है। जो आपस में एक-दूसरे से ज्ञानी बनने के लिए लड़-झगड़कर अलग हो गये।

सिपारे आठमें मिने, जहूद नसारे जुदे पड़े।
त्यों कौल तोड़ महंमद के, एक दीन पर रहे ना खड़े।। २८ ।।

कुरान के आठवें सिपारे में लिखा है कि यहूदी और अंग्रेज (यहूदी और निसारी) बुजरकी के वास्ते लड़-झगड़कर अलग हो गए। इस तरह से रसूल मुहम्मद के मानने वाले भी एक दीन में नहीं खड़े रहे।

कह्या अर्स दिल महंमद का, ए पूजें सब पत्थर।
माएने मुसाफ सब बातून, और ए लेत सब ऊपर।। २९ ।।

कुरान में खुदा का घर मुहम्मद का दिल कहा है और यह सब पत्थरों पर सिजदा बजाते हैं। कुरान की वाणी के अर्थ बातूनी हैं और यह मुसलमान सब जाहिरी अर्थ लेते हैं।

Nijanand App

लोक लानत जाने अबलीस को, सो तो सब दिलों पातसाह।
लोक ढूंढ़ें बाहेर दज्जाल को, इन किए ताबे अपनी राह।। ३० ।।

संसार वाले जानते हैं कि सजा अबलीस को मिली है। वह यह नहीं समझ पाए कि वह दुनियां के देलों पर बादशाही कर रहा है और इसलिए दुनियां मन के अधीन है (मन ही नारद है, अबलीस है)। फेर भी लोग समझते हैं कि बंदगी करते समय अबलीस बाहर से आएगा।

आकीन न रहे ऊपर का, जो होए जरा समया सखत।
तो आकीन उठ्या सबन से, जो आए पोहोंची सरत।। ३१ ।।

खुदा की बंदगी करने में जरा भी कठिनाई आए तो सबके ईमान गिर जाते हैं, क्योंकि यह समय आखिरत का आ गया है, इसलिए सबके दिलों से यकीन उठ गया है।

तो जोरा किया दज्जाल ने, देखो आए नामे वसीयत।
लिखाए महंमद मेंहेदिए, तो भी देखें न पोहोंची कयामत।। ३२ ।।

मुहम्मद साहब ने कुरान में पहले से लिख रखा है कि जब इमाम मेंहदी जाहिर होंगे तो उनके मोमिन ारीयत और हुकूमत के बादशाह को पैगाम देंगे। उन पर कष्ट आएगा। देखो, वही समय आ गया है। उसी तरह से वसीयतनामे आए हैं। जिनसे जाहिर हो गया है कि इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी प्रकट हो ाए हैं और कयामत आ गई है। इस बात को वह नहीं समझते।

दिल मोमिन अर्स कह्या, कह्या दुनी दिल सैतान।
ए जाहेर इन बिध लिख्या, आरिफ क्यों न करें बयान।। ३३ ।।

मोमिनों के दिल में खुदा की बैठक है और दुनियां के दिल में शैतान की बैठक है। यह बिल्कुल ाफ लिखा है। फिर भी कुरान के पढ़े-लिखे इलमी बताते नहीं हैं।

जो कोई दुनियां कुंन से, आए न सके मांहें अर्स।
जो रूहें फरिस्ते उतरे, सोई अर्सों के वारस।। ३४ ।।

जो दुनियां खुदा के हुकम से (कुंन कहने से, 'हो जा' कहने से) पैदा हुई है, वह माया के जीव अखण्ड परमधाम में नहीं आ सकते। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि खेल में उतरी हैं। वही अखण्ड घरों, अक्षर धाम और परमधाम के वारिस हैं।

रूहें आइयां जुदे ठौर से, और जुदा ही चलन।
दुनियां राह क्यों ले सके, जिन राह मह होवें मोमिन।। ३५ ।।

ब्रह्मसृष्टियां अखण्ड परमधाम से आई हैं और उनका चलन ही अलग है। जिस रास्ते पर मोमिन कुर्बानी देते हैं उस रास्ते पर दुनियां वाले नहीं चल सकते।

मोमिन रूहें करें कुरबानियां, और मता वजूद समेत।
छोड़ दुनी इस्क लेवहीं, दिल अर्स हुआ इन हेत।। ३६ ।।

ब्रह्मसृष्टियां और ईश्वरीसृष्टि अपने को धन-सम्पत्ति और तन सहित कुर्बान कर देंगे। वह दुनियां की चाहनाओं को छोड़कर खुदा का इश्क लेंगे और इसलिए इनके दिलों को खुदा का अर्श (घर) कहा है।

Nijanand App

अर्स कह्या दिल मोमिन, कोई एता न करे सहूर।
आए वजूद बीच आदम, इनों दिल क्यों हुआ रोसन नूर।। ३७ ।।

मोमिनों के दिल को खुदा का अर्श (घर) कहा है। फिर भी कोई विचार नहीं करता। यह मोमिन इस संसार में आदमियों के तनों में आए हैं, तो भी संशय करते हैं कि यह भी आदमी ही हैं। इनके दिल में खुदाई ज्ञान कैसे आ गया है?

दुनी दिल पर अबलीस, दिल मोमिन अर्स हक।
कुरान कौल तो ना विचारहीं, जो इनों अकल नहीं रंचक।। ३८ ।।

दुनियां के दिल में शैतान है। मोमिनों के दिल में पारब्रह्म विराजमान हैं। जो कुरान के इन वचनों पर विचार नहीं करते उनमें जरा भी अक्ल नहीं है।

ए देखें दिल अर्स मोमिन, अर्स हक बिना होए क्यों कर।
एह विचार तो न करे, जो कुलफ कहे दिलों पर।। ३९ ।।

मुसलमान जाहिरी में कुरान में पढ़ते हैं कि मोमिनों का दिल अर्श है, परन्तु संशय करते हैं कि खुदा तो अपने अर्श में ही हो सकता है। इनके दिलों के आगे निराकार का ताला लगा है। इससे आगे समझ नहीं सकते, इसलिए विचार नहीं करते कि इनका दिल अर्श है और खुदा तो अभी आया नहीं है, तो इनका दिल अर्श कैसे हो सकता है?

बीच कुरान रूहों का लिख्या, इनों असल अर्स में तन।
यों हक कलाम कहे जाहेर, मैं बीच अर्स दिल मोमिन।। ४० ।।

कुरान में साफ लिखा है कि रूहों के असल तन परमधाम में हैं (अर्श में हैं) खुदाई इलम कहता है कि मैं सदा मोमिनों के दिल में हूं। वही मेरा ठिकाना है, अर्श है।

पत्थर पानी आग पूजत, किन जानी ना हक तरफ।
कह्या दरिया हैवान का, समझ ना करे एक हरफ।। ४१ ।।

यह सब पत्थर, पानी, आग को पूजते हैं। किसी को भी खुदा के घर की तरफ की पहचान नहीं है। इस संसार को जानवरों का दरिया कहा है, इसलिए यह कुरान के एक शब्द को भी समझ नहीं पाते।

होए भोम बका की कंकरी, ताए पूजे चौदे तबक।
कुरान बतावे बका मोमिन, पर दुनियां अपनी मत माफक।। ४२ ।।

परमधाम की रेत की एक कंकरी (कणिका) जो अखण्ड है, उसे चौदह लोकों की ुनियां पूजती है। कुरान में भी लिखा है कि मोमिन अखण्ड हैं और वह भी पूज्य हैं। फिर भी दुनियां वाले अपनी अक्ल के अनुसार उन्हें साधारण आदमी समझते हैं।

इत सहूर दुनी का ना चले, सुरिया छोड़े ना इनों अकल।
सरभर करे मोमिन की, जिनकी अर्स असल।। ४३ ।।

दुनियां वालों की बुद्धि निराकार को छोड़कर आगे नहीं गई, फिर भी वह उन मोमिनों की बराबरी करते हैं जिनके मूल तन परमधाम में हैं।

Nijanand App

केहेलावें महंमद के, चलें ना महंमद साथ।
डारें जुदागी दीन में, कहें हम सुन्नत जमात।। ४४ ।।

अपने आपको मुहम्मद साहब के ऊपर पक्का यकीन रखने वाले कहलाते हैं, परन्तु मुहम्मद साहब के बताये रास्ते पर चलते नहीं है। दीन में (धर्म में) फूट डालने वाले यहीं हैं और भी सुन्नत जमात (सुनकर ईमान लाने वाले मोमिन) का दावा लेते हैं।

पेहेचान नहीं मोमिन की, जिनमें अहमद सिरदार।
जो रूहें कही दरगाह की, बीच बका बारे हजार।। ४५ ।।

इन्हें मोमिनों की पहचान नहीं है। ब्रह्मसृष्टियों के सिरदार रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) मुहम्मद हैं। परमधाम में बारह हजार ब्रह्मसृष्टियां हैं।

ढूंढ़ पाए ना पकड़े मोमिन के, पर हुआ हक हाथ सहूर।
जो मेहेर करे मेहेबूब, तब ए होए जहूर।। ४६ ।।

यह दुनियां वाले ऐसे मोमिनों को ढूंढकर उनके कदम नहीं पकड़ते। पर बेचारे क्या करें? खुदा की भर्जी ही ऐसी है। जब खुदा ही मेहरबानी करें तो एक क्षण में उन्हें मोमिनों की पहचान हो जाएगी।

दिल मोमिन अर्स कह्या, बड़ा बेवरा किया इत।
दुनी दिल पर अबलीस, यों कहे कुरान हजरत।। ४७ ।।

इस तरह से बड़े विवरण के साथ मोमिनों के दिल को अर्श कहा है और दुनियां के दिलों में शैतान की बैठक कुराने पाक में कही गई है।

दुनी न छोड़े तिन को, जो मोमिनों मुरदार करी।
दुनी हवा को हक जानहीं, रूहों हक सूरत दिल धरी।। ४८ ।।

जिस माया को मोमिनों ने मुरदार कर छोड़ दिया है। दुनियां उसे नहीं छोड़ सकती, क्योंकि दुनियां निराकार को ही खुदा समझ बैठी है। रूहों ने अपने दिल में खुदा की सूरत को बिठा रखा है।

राह दोऊ जुदी पड़ी, दोऊ एक होवें क्योंकर।
तरक करी जो मोमिनों, सो हुआ दुनी का घर।। ४९ ।।

इस तरह मोमिन और दुनियां (जीवसृष्टि) के रास्ते अलग-अलग हो गये। दोनों एक कैसे हो सकते हैं? जिस दुनियां को मोमिनों ने छोड़ दिया, वही दुनियां वालों का घर है।

मोमिन उतरे अर्स से, सो अर्स बिलंदी नूर।
ए जो रूहें कहीं दरगाह की, हक वाहेदत जिनों अंकूर।। ५० ।।

मोमिन अर्श से उतरे हैं और वह अर्श नूर बिलंद (परमधाम) है। इन्हीं रूहों को ही दरगाह की रूहें (पूज्यस्थान की परमधाम की रूहें) कहा गया है। श्री राजजी महाराज की एकदिली के यह निसबती है।

रूहें अर्स अजीम की, जाकी हक हादी सों निसबत।
ए हमेसा बीच अर्स के, हक जात वाहेदत।। ५१ ।।

यह ब्रह्मसृष्टियां अखण्ड घर परमधाम की हैं जो राजजी श्यामाजी के निसबती हैं और हमेशा ही अखण्ड परमधाम में रहती हैं और इसलिए इनको ही खुदा के अंग और एकदिली कहा गया है।

Nijanand App

रूहों तीन बेर खेल देखिया, बीच बैठे अपने वतन।
बड़ी दरगाह अर्स अजीम की, जित असल रूहों के तन।।५२ ।।

इन रूहों ने अपने घर में बैठकर तीन बार खेल देखा। जहां रूहों के असल तन हैं, वही बड़ी दरगाह अर्श अजीम अखण्ड परमधाम कहलाता है।

ए हुकमें कजा करी, अव्वल से आखिर।
हक अर्स मता मोमिन का, लिया सब फिरकों दावा कर।।५३ ।।

यह श्री राजजी महाराज ने हुकम से शुरू से अन्त की हकीकत पहले से लिखा दी है। श्री राजजी महाराज और मोमिनों का घर परमधाम है। सभी दुनियां के धर्म वाले दावा लेकर बैठे हैं कि हम भी वही हैं।

करनी को देखे नहीं, जो हम चलत भांत किन।
वह दुनियां को छोड़े नहीं, जो मुरदार करी मोमिन।।५४ ।।

अपनी करनी को तो दुनियां वाले देखते नहीं हैं कि हम किस तरीके से चल रहे हैं। वह दुनियां को छोड़ते नहीं जिसे मोमिनों ने नाचीज समझकर छोड़ दिया है।

मोमिनों के माल का, दावा किया सबन।
तब हो गए खेल कबूतर, हुआ जाहेर बका अर्स दिन।।५५ ।।

मोमिनों के जाहिर होने से पहले सभी मोमिनों का दावा लिए बैठे थे। जब अखण्ड परमधाम की तारतम वाणी से परमधाम का सब ज्ञान जाहिर हो गया तो यह सब दुनियां वाले झूठे खेल के कबूतरों की तरह उड़ गए।

गुनाह एही सबन पर, ए जो झूठी सकल जहान।
दावा किया वाहेदत का, पछतासी हुए पेहेचान।।५६ ।।

दुनियां वालों के ऊपर सबसे बड़ा गुनाह यही है कि उन्होंने मोमिन होने का झूठा दिखावा किया और जब उनको असल मोमिनों की पहचान होगी तो अपने को मोमिन कहने का झूठा दावा लेने का पश्चाताप करेंगे।

अब ए सुध किनको नहीं, पर रोसी हुए रोसन।
ए सब होसी जाहेर, ऊगे कायम सूरज दिन।।५७ ।।

अभी इस बात की पहचान किसी दुनियां वाले को नहीं है। जब जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी जाहिर होगी तब सबको पहचान हो जाएगी। उस दिन सब अपनी करनी पर रोएंगे।

रूहें जो दरगाह की, हक जात वाहेदत।
ए जाने अर्स अरवाहें, जिन मोमिनों निसबत।।५८ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वही श्री राजजी महाराज के अंग हैं और उन्हीं की एकदिली है। इस बात को वही ब्रह्मसृष्टि ही अच्छी तरह से समझती है, क्योंकि इनकी निसबत (रिश्ता) हक से है।

और गिरो फरिस्तन की, जिनका कायम वतन।
दुनियां कायम होएसी, सो बरकत गिरो इन।।५९ ।।

और दूसरी जो ईश्वरीसृष्टि है, उनका अखण्ड घर अक्षर धाम है। सारी दुनियां को इन दोनों जमात की कृपा से अखण्ड मुक्ति मिलेगी।

Nijanand App

और जो उपजे कुंन से, जो आदम की नसल।
दावा किया मोमिन का, जो दुस्मन अबलीस असल।। ६० ।।

जो सृष्टि 'कुंन' शब्द कहने से पैदा हुई है, वही आदम की औलाद आदमी है। इन्होंने ही मोमिन होने का दावा किया जबकि इनके दिलों पर दुश्मन शैतान (अबलीस) नारद बैठा है।

लिख्या सिपारे चौदमें, गिरो भांत है तीन।
महंमद समझाओ तिनों त्यों कर, जिनों जैसा आकीन।। ६१ ।।

कुरान के चौदहवें सिपारे में लिखा है कि सृष्टि तीन तरह की है। खुदा ने मुहम्मद साहब को कहा कि इन तीनों में से जिसको जैसा यकीन है उसको वैसा समझाओ।

किया तीनों गिरो का बेवरा, सरीयत तरीकत हकीकत।
हुकम हुआ महंमद को, कर तीनों को हिदायत।। ६२ ।।

तीनों तरह की सृष्टि की हकीकत लिखते समय शरीयत, तरीकत और हकीकत के ज्ञान से समझाना है, ऐसा हुकम मुहम्मद साहब को खुदा ने दिया।

हकीकत सों समझावना, समझे इसारत सों मोमिन।
हक सूरत द्रढ़ कर दई, तब दिल अर्स हुआ वतन।। ६३ ।।

मोमिनों को इशारे मात्र से हकीकत का ज्ञान समझाना। इन मोमिनों के दिल में हक की सूरत विराजमान है, ऐसा दृढ़ कर दिया तभी मोमिनों के दिल को अर्श कहा है।

और राह जो तरीकत, गिरो फरिस्तों बंदगी कही।
सो समझे मीठी जुबांन सों, समझ पोहोंचे जबरूत सही।। ६४ ।।

ईश्वरीसृष्टि के लिए तरीकत (उपासना) की बन्दगी बताई है। वह मीठी जबान से अर्थात् प्यार से समझेंगे और समझकर अक्षर धाम तक का उन्हें ज्ञान होगा।

तीसरी गिरो सरीयत से, जो करसी जेहेल जिदाल।
सो समझेंगे जिद्दैसों, क्या करें पड़े बंध दज्जाल।। ६५ ।।

जीवसृष्टि की तीसरी जमात को कर्मकाण्ड से समझाना है। यह अपनी मूर्खता से वाद-विवाद करेंगे और जिद से ही (हठ से ही) समझेंगे। वह विचार क्या करें, शैतान के बन्ध में बंधे हैं।

ए पढ़े सब जानत हैं, दिल पर दुस्मन पातसाह।
ले लानत बैठा दिल पर, ए अबलीस मारत राह।। ६६ ।।

कुरान के पढ़े-लिखे इलमी लोग यह सब जानते हैं, पर उनके दिलों पर भी शैतान की बैठक है। क्या करें? वह शैतान लानत लेकर सबके दिलों पर बैठा है और इस कारण से सबों को भटकाता है।

कुरान पढ़े चलें सरीयत, करें दावा मोमिनों राह।
पर क्या करें कुंजी बिना, पावें ना खुलासा।। ६७ ।।

कुरान के पढ़े-लिखे लोग कर्मकाण्ड में चलते हैं और दावा मोमिनों का लेते हैं। श्री प्राणनाथ इमाम मेंहदी कहते हैं कि तारतम ज्ञान नहीं होने से उन्हें इन रहस्यों का पता नहीं है।

मोमिन दुनी ए तफावत, ज्यों खेल और देखनहार।
मोमिन मता हक वाहेदत, दुनियां मता मुरदार।। ६८ ।।

मोमिन और दुनियां में इतना ही फर्क है जैसे खेल करने वाले और खेल देखने वाले में, मोमिनों के पास जागृत बुद्धि से हक की वाहेदत है और दुनियां के पास नाचीज माया की बुद्धि है।

Nijanand App

सबों दावा किया अर्स का, हिंदू या मुसलमान।
वेद कतेब दोऊ पढ़े, परी न काहूं पेहेचान।।६९ ।।

हिन्दू या मुसलमान दोनों ने परमधाम का दावा कर रखा है। हिन्दुओं ने वेदों को पढ़ा और मुसलमानों ने कतेबों को पढ़ा, परन्तु पहचान किसी को नहीं हुई।

कह्या दावा सब का तोड़या, दिया मता मोमिनों को।
लिए अर्स वाहेदत में, और कोई आए न सके इनमों।।७० ।।

खुदा ने मोमिनों को जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर झूठे दावेदारों का दावा तोड़कर मोमिनों को अपने घर परमधाम में ले लिया, जहां और कोई नहीं जा सकता।

सिपारे सत्ताईस में, लिखे दुनी के सुकन।
ए क्योंए पाक न होवहीं, एक तौहीद आब बिन।।७१ ।।

कुरान के सत्ताईसवें सिपारे में दुनियां के लिए लिखा है कि एक ही परमात्मा के पूजक बने बिना निर्मल (पाक) नहीं हो सकते।

मोको पाक होए सो छूइयो, यों केहेवे फुरमान।
करे गुसल तौहीद आब में, इन पाकी पकड़ो कुरान।।७२ ।।

कुरान कहता है कि पाक हुए बिना मुझे छूना मत। उस पारब्रह्म की एकदिली में जो स्नान करे, वही पाक है और उसे ही मुझे छूने का अधिकार है।

सो पाक कहे रूह मोमिन, जिनको तौहीद मदत।
सो पीठ देवें दुनीय को, जिनपे मुसाफ मारफत।।७३ ।।

मोमिन ही केवल पाक हैं, क्योंकि इनके पास ही तौहीद का ज्ञान (जागृत बुद्धि का ज्ञान) तारतम वाणी है और पारब्रह्म की पहचान है, इसीलिए यही दुनियां को पीठ दे देंगे।

सो सरीयत को है नहीं, ए तो खड़े जाहेर ऊपर।
एक हादी के लड़ जुदे हुए, ए जो नारी फिरके बहत्तर।।७४ ।।

दुनियां के जीव जो जाहिरी अर्थ लेते हैं और कर्मकाण्ड पर चलते हैं उनके पास यह शक्ति नहीं है, इसीलिए मुहम्मद के दीन को मानने वाले आपस में लड़-झगड़ कर बहत्तर फिरकों में बंट गये हैं।

लिख्या कुरान का माजजा, और नबी की नबुबत।
एक दीन जब होवहीं, दोऊ तब होवे साबित।।७५ ।।

कुरान के रहस्य और रसूल साहब की पैगम्बरी तभी सच्ची साबित होगी, जब सब दुनियां एक पारब्रह्म को मानने वाली हो जाएगी।

महंमद चाहे सबों मिलावने, ए सब जुदागी डारत।
ए सब गुमाने जुदे किए, दुस्मन राह मारत।।७६ ।।

मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) साहब का ज्ञान सबको मिलाना चाहता है और यह सब अहंकार में लड़कर अलग-अलग हो गए हैं। इस तरह दुश्मन शैतान ने अहंकार द्वारा सबको अलग-अलग टुकड़ों में बांट दिया है।

Nijanand App

एक फिरका नाजी कह्या, जित लिखी हक हिदायत।
एक दीन किया चाहे, एही मोमिन वाहेदत।।७७ ।।

इनसे अलग एक फिरका नाजी (मर्द मोमिनों) का कहा गया है जिसे हक खुदा श्री राजजी महाराज का आदेश प्राप्त है। सब दुनियां को एक दीन में लाने वाले परमधाम की ब्रह्मसृष्टि मोमिन होंगे।

बसरी मलकी और हकी, लिखी महंमद तीन सूरत।
होसी हक दीदार सबन को, करसी महंमद सिफायत।।७८ ।।

बसरी (मुहम्मद साहब), मलकी (श्री श्यामाजी) और हकी (श्री प्राणनाथजी) तीन सूरतें मुहम्मद की होंगी, यह कुरान में लिखा है और इनकी कृपा से ही न्याय के दिन खुदा के दर्शन सभी को होंगे।

इनों हक बका देखाए के, करसी सबों एक दीन।
हक सूरत दृढ़ कर दई, देसी सबों आकीन।।७९ ।।

यह आखिरी मुहम्मद की हकी सूरत अखण्ड पारब्रह्म के दर्शन कराकर एक ही पारब्रह्म का पूजक बनाएगी (एकेश्वरवाद) जिससे पारब्रह्म निराकार नहीं है, उस की सूरत है, उसका धाम अखण्ड है, का सबको यकीन आ जाएगा।

मोमिन गुसल हौज कौसर, माहें ईसा मेंहेदी महंमद।
पकड़ें एक वाहेदत को, और करें सब रद।।८० ।।

मोमिन (ब्रह्मसृष्टियां) हौज कौसर तालाब (श्री श्यामाजी मुहम्मद साहब और इमाम मेंहदी) का ज्ञान है जिसमें नहाना है और एक पारब्रह्म अक्षरातीत की पहचान कर सारी दुनियां को रद्द करना है।

हक बतावत जाहेर, मेरे खूबों में महंमद खूब।
सो मोमिन छोड़ें क्यों कदम, जाको हकें कह्या मेहेबूब।।८१ ।।

पारब्रह्म श्री राजजी महाराज स्पष्ट कहते हैं कि मेरे प्यारों में प्यारे इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) हैं, इसलिए मोमिन अब इनके चरण भी कैसे छोड़ेंगे, जिनको श्री राजजी महाराज स्वयं ही अपना प्यारा कह रहे हैं।

मासूक आसिक दोऊ जाने दुनी, हक मोमिन माहें खिलवत।
उतरी अरवाहें अर्स से, तो भी पढ़े न पावें वाहेदत।।८२ ।।

श्री राजजी महाराज और ब्रह्मसृष्टि मूल-मिलावे में एक ही आशिक माशूक हैं पर दुनियां इनको दो समझती है। परमधाम से रूहें खेल देखने के लिए उतरी हैं और इनके अन्दर पारब्रह्म बैठे हैं तो भी पढ़े-लिखे इलमी इन दोनों की एकदिली को नहीं समझ पाते।

महंमद बतावें हक सूरत, तिनका अर्स दिल मोमिन।
सो अर्स दिल दुनी छोड़ के, पूजे हवा उजाड़ जो सुंन।।८३ ।।

मुहम्मद बताते हैं कि हक की सूरत है और वह मोमिनों के दिल में बैठे हैं। दुनियां इन मोमिनों और पारब्रह्म, जो इनके दिल में बैठे हैं, को छोडकर निराकार और शून्य को पूजती है।

अबलीस कह्या दुनी दुस्मन, तो किया मोमिनों मता का दावा।
सो समझे न इसारतें, जिन ताले अबलीस हवा।।८४ ।।

दुनियां के दिलों में दुश्मन अबलीस बैठा है, इसलिए दुनियां वालों ने अपने को मोमिन कहा है। जिनके नसीब में शैतान लिखा है वह इन इशारतों को नहीं समझता है।

Nijanand App

जोस गिरो मोमिनों पर, हकें भेज्या जबराईल।
रूहें साफ रहें आठो जाम, और अबलीस दुनी दिल।। ८५ ।।

पारब्रह्म ने जोश के फरिश्ते जबराईल को मोमिनों के वास्ते भेजा जिससे मोमिन पारब्रह्म के जिक्र में मग्न रहें। दुनियां के दिल पर शैतान लिखा है।

अर्स से आया असराफील, दिया कई बिध सूर बजाए।
सो सोर पड़या ब्रह्मांड में, पाक किए काजी कजाए।। ८६ ।।

जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील ने घर (परमधाम) से आकर ज्ञान का बिगुल बजाकर तारतम वाणी जाहिर की जिससे सारे संसार में वाणी का उजाला हो गया कि पारब्रह्म (श्री प्राणनाथजी) न्यायाधीश बन सबको तारतम वाणी से पाक कर न्याय कर रहे हैं।

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, पाया अर्स खिताब।
इतहीं गिरो पैगंमरों, काजी कजा इत किताब।। ८७ ।।

इसलिए मोमिनों के दिल को खुदा के अर्श होने का खिताब मिला। इन्हीं मोमिनों के पास ईश्वरीसृष्टि आएगी। इन्हीं मोमिनों के दिल में पारब्रह्म न्याय करने के लिए बैठे हैं।

फुरमान आया इमाम पर, कुंजी रूह अल्ला इलम।
खुली हकीकत हुकमें, इसारतें रमूजे खसम।। ८८ ।।

सब कुरान के ज्ञान का अधिकार इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के पास आया। तारतम ज्ञान की कुंजी रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी) के पास आई। तब पारब्रह्म के हुकम से जो बातें उन्होंने इशारतों में लिखवा रखी थीं, खुलीं।

जो लिख्या जिन ताले मिने, माहें हक फुरमान।
रूहें फरिस्ते और कुंन से, तीनों की नसल कही निदान।। ८९ ।।

ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टि जिनके ताले में जो कुछ कुरान में लिखा था, वह सब हकीकत जाहिर कर दी।

बेवरा हुआ मुसाफ का, एक दुनियां और अर्स हक।
हक अर्स में सब कह्या, दुनियां नहीं रंचक।। ९० ।।

अब श्री प्राणनाथजी ने कुरान की हकीकत को जाहिर कर दिया। दुनियां और पारब्रह्म के घर परमधाम की हकीकत बताई और कहा कि हक के अर्श परमधाम में सब कुछ है और यह दुनियां कुछ भी नहीं है।

और बेवरा कह्या जाहेर, दुनियां और मोमिन।
दुनी पैदा जुलमत से, मोमिन असल अर्स तन।। ९१ ।।

मोमिनों और दुनियां के बीच में और भी फर्क है। उसका विवरण स्पष्ट कहा है कि दुनियां की उत्पत्ति निराकार से है, जबकि मोमिनों के मूल तन परमधाम में हैं।

ए जो दुनियां चौदे तबक, हक के खेलौने।
ऐसे कई पैदा होत हैं, कोई कायम न इनों में।। ९२ ।।

यह चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड पारब्रह्म के सामने एक खिलौने के समान है। ऐसे कई ब्रह्माण्ड पैदा होते हैं पर इनमें अखण्ड एक भी नहीं है।

Nijanand App

सांच और झूठ को, दोऊ जुदे किए बताए।
हक मोमिन बिन दुनियां, बैठी कुफर खेल बनाए।। ९३ ।।

इस तरह से सच मोमिन और झूठ दुनियां को अलग-अलग बताया है। पारब्रह्म और मोमिन के बिना यह दुनियां वाले कुफर का खेल बनाकर बैठे हैं।

जब खुली मुसाफ मारफत, तब हुआ बेवरा रोसन।
खेल भी हुआ जाहेर, हुए जाहेर बका मोमिन।। ९४ ।।

जब कुरान के सार और हकीकत खुली तब सबको ज्ञान मिला कि खेल क्या है, इसकी जानकारी मिली और मोमिन जो अखण्ड हैं, वह जाहिर हुए।

दुनियां दिल पर अबलीस, तो राह पुलसरात कही।
वजूद न छोड़े जाहेरी, तो दस भांत दोजख भई।। ९५ ।।

दुनियां के दिल पर शैतान अबलीस (नारद) की बैठक होने से इसको कर्मकाण्ड के रास्ते पर चलने वाला कहा है। दुनियां वाले जाहिरी कर्मकाण्ड नहीं छोड़ते, इसलिए इसको दस तरह की सजा कही है। (दस तरह की सजा का वर्णन बड़ा कयामतनामा पृष्ठ २२, चौपाई २३ से २८ तक में है।)

भिस्त दई तिन को, जो हुते दुस्मन।
सबों लई थी हुज्जत, हम वारसी ले मोमिन।। ९६ ।।

जो जीव दुश्मन बने बैठे थे उनको भी अखण्ड बहिश्तों में कायमी दी, क्योंकि इससे पहले सभी ने मोमिनों के वारिस होने का दावा ले रखा था।

मेहेर हुई दुनियां पर, पाई तिनों आठों भिस्त।
बीज बुता कछू ना हुता, करी हुकमें किसमत।। ९७ ।।

दुनियां पर श्री प्राणनाथजी की मेहर हुई और उन्होंने जीवों को आठ तरह की बहिश्तों में अखण्ड किया। इन जीवसृष्टि का कुछ भी नहीं था पर पारब्रह्म के हुकम से इनकी किस्मत खुल गई।

मेहेर करी बड़ी महंमदें, आठों भिस्तों पर।
दोऊ गिरो दोऊ अर्सों, पोहोंचे रूहें फरिस्ते यों कर।। ९८ ।।

श्री प्राणनाथजी ने जीवों पर बड़ी कृपा की। जीवों को उन्होंने आठ बहिश्तों में कायम किया और दोनों गिरोह (ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि) को परमधाम और अक्षरधाम में पहुंचने का रास्ता खोल दिया।

कोई आए न सके अर्स में, जाकी नसल आदम निदान।
दई हैयाती सबन को, मेहेर कर सुभान।। ९९ ।।

जो आदम (नारायण) से पैदा हुए हैं, वह परमधाम नहीं आ सकते। उनको श्री प्राणनाथजी ने कृपा कर आठ बहिश्तों में कायम किया।

करें हिन्दू लड़ाई मुझ से, दूजे सरीयत मुसलमान।
पाया अहमद मासूक हक का, अब छोड़ों नहीं फुरकान।। १०० ।।

श्री इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मुझसे कर्मकाण्डी हिन्दू भी लड़ते हैं और शरीयत के मानने वाले मुसलमान भी लड़ते हैं। अब श्री राजजी महाराज के माशूक श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) मिल गए हैं और इसलिए मैं कुरान को नहीं छोड़ूंगा।

Nijanand App

छत्ते आगा लिया इन समें, जब दोऊ सों लागी जंग।
हुकम लिया सिर आकीन, छोड़ दुनी का संग।। १०१ ।।

जब हिन्दू और मुसलमान श्री प्राणनाथजी से झगड़ा कर रहे थे तो उस समय छत्रसालजी आगे आये और दुनियां का साथ छोड़कर श्री प्राणनाथजी के हुकम को सिर चढ़ाया।

किया खुलासा जाहेर, ले बेसक हक इलम।
दिया महंमद मेंहेदी ने, गिरो मोमिनों हाथ हुकम।। १०२ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी लेकर सब धर्मग्रन्थों के रहस्य खोल दिए और जागनी का काम मोमिनों को करने के लिए दिया।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १०२ ।।

खुलासा गिरो दीन का

ए देखो खुलासा गिरो दीन का, कहूं फुरमाया फुरमान।
हक हादी गिरो अर्स की, सक भान कराऊं पेहेचान।। १ ।।

कुरान में लिखे के अनुसार मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) की जमात की हकीकत तुम देखो, पहचानो। श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ परमधाम के रहने वाले हैं। सब संशय मिटाकर उनकी पहचान कराता हूं।

हक सूरत हादी साहेद, मसहूद है उमत।
सो हक खिलवत सब जानहीं, और ए जाने खेल रोज कयामत।। २ ।।

पारब्रह्म की शक्ल है, वह निराकार नहीं है। इस बात की गवाही हादी श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियां दे रही हैं। यह पारब्रह्म के एकांत और उनके दिल की बात समझती हैं और कयामत के दिन की लीला को जानती हैं।

हक बका में जेता मता, सो छिपे ना मोमिनों से।
खेल में आए तो भी अर्स दिल, ए लिख्या फुरमान में।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम में जो कुछ न्यामत है उनकी सब जानकारी मोमिनों को है। वह खेल में आ गए हैं तो भी उन्हीं के दिलों को खुदा (पारब्रह्म) अर्श करके बैठे हैं, ऐसा कुरान में लिखा है।

लिख्या नामे मेयराज में, हरफ नब्बे हजार।
तीस तीस तीनों सरूपों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार।। ४ ।।

मेयराज नामा में रसूल साहब ने खुदा से नब्बे हजार हरफ सुने। लिखा है तीस-तीस हजार का अधिकार मुहम्मद की तीनों सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) को दिया है। (देखिए किस्सिुल्ल अबिया उर्दू (१३७६ हि. पृष्ठ ३५०-३५१)

एक जाहेर किए बसरिएं, दूजे रखे मलकी पर।
तीसरे सूरत हकी पे, सो गुझ खोल करसी फजर।। ५ ।।

रसूल साहब की बसरी सूरत ने कुरान की तीस हजार बातें जाहिर कीं। दूसरे तीस हजार का अधिकार मलकी सूरत को दिया गया जिन्होंने धर्मग्रन्थों के रहस्य तारतम ज्ञान की कुंजी से बताए। बाकी के तीस हजार छिपा रखे थे जो श्री प्राणनाथजी हकी सूरत खोलकर फजर जाहिर करेंगे।

Nijanand App

छत्ते आगा लिया इन समें, जब दोऊ सों लागी जंग।
हुकम लिया सिर आकीन, छोड़ दुनी का संग।। १०१ ।।

जब हिन्दू और मुसलमान श्री प्राणनाथजी से झगड़ा कर रहे थे तो उस समय छत्रसालजी आगे आये और दुनियां का साथ छोड़कर श्री प्राणनाथजी के हुकम को सिर चढ़ाया।

किया खुलासा जाहेर, ले बेसक हक इलम।
दिया महंमद मेंहेदी ने, गिरो मोमिनों हाथ हुकम।। १०२ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी लेकर सब धर्मग्रन्थों के रहस्य खोल दिए और जागनी का काम मोमिनों को करने के लिए दिया।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १०२ ।।

खुलासा गिरो दीन का

ए देखो खुलासा गिरो दीन का, कहूं फुरमाया फुरमान।
हक हादी गिरो अर्स की, सक भान कराऊं पेहेचान।। १ ।।

कुरान में लिखे के अनुसार मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) की जमात की हकीकत तुम देखो, पहचानो। श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ परमधाम के रहने वाले हैं। सब संशय मिटाकर उनकी पहचान कराता हूं।

हक सूरत हादी साहेद, मसहूद है उमत।
सो हक खिलवत सब जानहीं, और ए जाने खेल रोज कयामत।। २ ।।

पारब्रह्म की शक्ल है, वह निराकार नहीं है। इस बात की गवाही हादी श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियां दे रही हैं। यह पारब्रह्म के एकांत और उनके दिल की बात समझती हैं और कयामत के दिन की लीला को जानती हैं।

हक बका में जेता मता, सो छिपे ना मोमिनों से।
खेल में आए तो भी अर्स दिल, ए लिख्या फुरमान में।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम में जो कुछ न्यामत है उनकी सब जानकारी मोमिनों को है। वह खेल में आ गए हैं तो भी उन्हीं के दिलों को खुदा (पारब्रह्म) अर्श करके बैठे हैं, ऐसा कुरान में लिखा है।

लिख्या नामे मेयराज में, हरफ नब्बे हजार।
तीस तीस तीनों सरूपों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार।। ४ ।।

मेयराज नामा में रसूल साहब ने खुदा से नब्बे हजार हरफ सुने। लिखा है तीस-तीस हजार का अधिकार मुहम्मद की तीनों सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) को दिया है। (देखिए किस्सिुल्ल अबिया उर्दू (१३७६ हि. पृष्ठ ३५०-३५१)

एक जाहेर किए बसरिएं, दूजे रखे मलकी पर।
तीसरे सूरत हकी पे, सो गुझ खोल करसी फजर।। ५ ।।

रसूल साहब की बसरी सूरत ने कुरान की तीस हजार बातें जाहिर कीं। दूसरे तीस हजार का अधिकार मलकी सूरत को दिया गया जिन्होंने धर्मग्रन्थों के रहस्य तारतम ज्ञान की कुंजी से बताए। बाकी के तीस हजार छिपा रखे थे जो श्री प्राणनाथजी हकी सूरत खोलकर फजर जाहिर करेंगे।

Nijanand App

कही सूरत तीन रसूल की, हुई तीनों पर इनायत हक।
किया तीनों का बेवरा, हरफ नब्बे हजार बेसक।। ६ ।।

रसूल साहब की तीन सूरतें कही हैं और इन तीनों पर खुदा श्री राजजी महाराज की मेहरबानी हुई। जिससे इन तीनों सूरतों द्वारा नब्बे हजार की हकीकत जाहिर हो गई।

राह चलाई बसरिएं फुरमानें, दई कुंजी मलकी हकीकत।
हकी हक सूरत, किया जाहेर दिन मारफत।। ७ ।।

बसरी सूरत रसूल साहब ने शरीयत का ज्ञान देकर खुदा के पूजक बनाकर दीन का रास्ता चलाया। दूसरी मलकी सूरत श्री देवचन्द्रजी (श्री श्यामा महारानी) को तारतम की कुंजी दी। हकी सूरत श्री प्राणनाथजी महाराज ने खुदा की सूरत का बयान किया और मारफत (विज्ञान का रास्ता) का ज्ञान जाहिर किया।

ए अव्वल कह्या रसूलें, होसी जाहेर बखत कयामत।
मता सब मेयराज का, करी जाहेर गुझ खिलवत।। ८ ।।

यह पहले से ही रसूल साहब ने कहा था कि कयामत के समय कुरान के सब भेद जाहिर हो जाएंगे। शबे मेयराज (दर्शन की रात्रि) में रसूल साहब कैसे पहुंचे और क्या बातें हुईं, उन सब छिपी बातों को हकी सूरत श्री प्राणनाथजी ने वह बातें और तीस हजार जो खिलवत (मूल-मिलावा) खाने की बात जाहिर करने का अधिकार श्री राजजी महाराज ने ही दिया था, उन सब मूल-मिलावे की बातों को जाहिर किया।

ए जो कागज वेद कतेब के, तामें जरा न हुकम बिन।
दुनियां सब तिन पर खड़ी, ए जो अठारे बरन।। ९ ।।

हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ चार वेद और मुसलमानों के चार कतेब (अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान ग्रन्थ) में खुदा के हुकम के बिना कुछ नहीं लिखा गया। यह सब अठारह वर्णों की दुनियां इन्हीं धर्मशास्त्रों के आधार पर खड़ी है।

कलाम अल्ला जो फुरमान, सो इन सबसे न्यारा जान।
ल्याया पैगंमर आखिरी, हक के कौल परवान।। १० ।।

अल्लाह की वाणी जो कुरान में है वह संसार के सभी ग्रन्थों से अलग है। आखिरी पैगम्बर रसूल साहब खुदा के हुकम से आए और उन्होंने संसार में खुदा के किए वायदे के अनुसार जाहिर किए।

कह्या महंमद का सब हुआ, जो काफर करते थे रद।
फिरवले सबन पर, महंमद के सब्द।। ११ ।।

मुहम्मद साहब ने जो भविष्यवाणी की थी उसे काफिर लोग नहीं मानते थे। अब श्री प्राणनाथजी ने आकर कुरान की सब भविष्यवाणी को सत कर जाहिर कर दिया।

इत मुनाफक खतरा ल्यावते, जो कुराने कही कयामत।
सो खास रूहें मोमिन आए, जाके दिल अर्स न्यामत।। १२ ।।

कुरान में कयामत के दिन की भविष्यवाणी की गई थी। बेईमान लोग उस पर संशय करते थे। अब जब अर्श से खासल खास रूह मोमिन आ गए हैं और जिन्हें अर्श की पूरी न्यामतों का पता है, तो अब संशय वाली सब बातें मिट गई हैं।

Nijanand App

ए देखो तुम बेवरा, कहावें बंदे महंमद।
सहूर ना करे बातून, कोई न देखे छोड़ हद।। १३ ।।

जो मुहम्मद के बन्दे मुसलमान कहलाते हैं, उनकी हकीकत देखो। निराकार हवा (शून्य) को छोड़कर आगे कोई नहीं देखता, इसलिए कुरान की बातूनी बातों का अर्थ उन्हें पता नहीं चलता।

ए दुनियां किन पैदा करी, कौन ल्याया हूद तोफान।
किन राखी गिरो कोहतूर तले, किन डुबाई सब जहान।। १४ ।।

इस दुनियां को किसने पैदा किया, किसने हूद-तोफान में कोहेतूर (गोवर्द्धन पहाड़) को उठाकर ब्रह्मसृष्टि को बचाया और संसार को डुबाया?

किन फेर दुनी पैदा करी, फेर कौन ल्याया नूह तोफान।
किन ऐसी किस्ती कर तारी गिरो, किन डुबाई सब कुफरान।। १५ ।।

फिर दुबारा दुनियां किसने बनाई और फिर नूह-तोफान में नाव पर जमात को बिठाकर बचाया और संसार का प्रलय कर दिया।

तीन बेटे नूह नबीय के, बेर तीसरी दुनी इनसे।
हक फुरमान गिरो ऊपर, महंमद ल्याए इनमें।। १६ ।।

नूह नबी के तीन बेटे (श्याम, हाम, याफिस) बताए गए हैं। जिनसे तीसरी बार दुनियां बनी और इनकी दुनियां में ही रसूल साहब कुरान लेकर आए।

कह्या स्याम बाप उन लोकों का, रूम फारस आरबन।
सब तुरकों बाप याफिस, हाम बाप हिंदुस्तान सबन।। १७ ।।

नूह पैगम्बर के बेटे स्याम (श्री कृष्णजी) रोम, फारस और अरब के बाप हैं और तुर्किस्तान के बाप याफिस (कल्याणजी) हैं तथा हिन्दुस्तान के बाप हाम (श्री बलदाऊजी) हैं।

कुरान हकीकत न खुली, ना स्याम रसूल पेहेचान।
ना पावें महंमद गिरो को, जो सौ साल पढ़े कुरान।। १८ ।।

दुनियां वालों को कुरान के रहस्यों का पता नहीं और न स्याम और रसूल की पहचान हुई और न मुहम्मद गिरोह मोमिन की जमात की हकीकत का पता चला। चाहे कोई सौ साल तक कुरान पढ़े।

ए सब मुखथें कहें महंमद को, ए अव्वल ए आखिर।
बड़े काम नजीकी हक के, ए किन किया महंमद बिगर।। १९ ।।

यह सब लोग मुहम्मद खुदा का ज्ञान देने वाला पहला रसूल है और यही वक्त आखिरत को पारब्रह्म के सारे बड़े काम करेंगे, मुख से कहते हैं अब विचार करो कि आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बिना यह हक श्री राजजी महाराज के बड़े काम कौन कर रहा है?

एक खुदा हक महंमद, हर जातें पूजें धर नाऊं।
सो दुनियां में या बिना, कोई नहीं कित काऊं।। २० ।।

पारब्रह्म सारे संसार का एक है और मुहम्मद ने जो बातें कही हैं वह सब सत्य हैं। हर जाति वाले पारब्रह्म को अलग-अलग नामों से पूजते हैं। खुदा और मुहम्मद के सिवाय दूसरा कोई नहीं है।

Nijanand App

ओ खासी गिरो और महंमद, आए दो बेर माहें जहूदन।
गिरो बचाई काफर डुबाए, ए काम होए ना महंमद बिन।। २१ ।।

वह खासल खास गिरोह मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) और मुहम्मद (श्री कृष्ण) दो बार हिन्दुओं में आए जिन्होंने मोमिनों को बचाया और दुनियां को डुबाया। इतना बड़ा काम मुहम्मद (श्री कृष्ण) के बिना कोई नहीं कर सकता।

सब जातें नाम जुदे धरे, और सबका खावंद एक।
सबको बंदगी याही की, पीछे लड़े बिन पाए विवेक।। २२ ।।

सब जातियों ने अलग-अलग नाम रखकर उस एक पारब्रह्म की पूजा की। सबका उद्देश्य उस एक की पूजा करने का था, परन्तु बाद में बिना विवेक के लड़-झगड़कर जुदा-जुदा धर्मों में बंट गए।

रूहें अर्स से लैलत कदर में, हक हुकमें उतरे बेर तीन।
सुध खास गिरो न महंमद, कहे हम महंमद दीन।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से ब्रह्मसृष्टियां लैल तुल कदर की रात में हक के हुकम से तीन बार खेल में उतरीं। यह दुनियां वाले अपने को रसूल साहब का मानने वाला कहते हैं। इनको खास गिरोह ब्रह्मसृष्टि और मुहम्मद साहब की किसी की भी पहचान नहीं है।

एक बेर गिरो हूद घर, बेर दूजी किस्ती पर।
तीसरी बेर मास हजार लो, सदी अग्यारहीं हिसाब फजर।। २४ ।।

एक बार हूद नबी के घर, अर्थात् बृज में नंदजी के घर गोवर्द्धन पहाड़ के नीचे जमात को बचाया। दूसरी बार नूह की किश्ती से पार उतारा। योगमाया को किश्ती बनाकर वृन्दावन में ले गए। तीसरी बार जागनी के ब्रह्माण्ड में हजार महीने की रात्रि हुई जो रसूल साहब की ग्यारहवीं सदी है। जिसमें सब भेदों को खोलकर ज्ञान का सवेरा हुआ है।

जाहेर पहचान कही रसूले, गिरो खासी और कयामत।
सहूर करें दिल अकलें, तो दोऊ पावें हकीकत।। २५ ।।

रसूल साहब ने खास गिरोह मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) की और कयामत की स्पष्ट शब्दों में जानकारी दी है। यदि अकल और दिल और विचार करके देखे तो इन दोनों (कयामत और मोमिनों) के भेद को दुनियां समझे।

हजार साल कहे दुनी के, सो खुदाए का दिन एक।
लैलत कदर का टूक तीसरा, कह्या हजार महीने से विसेक।। २६ ।।

दुनियां के हजार साल खुदा के एक दिन के बराबर हैं और लैल तुल कदर का तीसरा हिस्सा, अर्थात् जागनी की लीला हजार महीने से अधिक कही है।

सौ साल रात अग्यारहीं लग, एक दिन के साल हजार।
अग्यारै सदी अंत फजर, एही गिरो है सिरदार।। २७ ।।

सौ साल की एक रात, अर्थात् ग्यारहवीं सदी रात्रि है और दसवीं सदी तक एक हजार वर्ष का दिन है। ग्यारहवीं सदी के अन्त में मोमिनों के सिरदार श्री प्राणनाथजी के द्वारा ज्ञान का सवेरा होगा।

Nijanand App

रूहें गिरो तब इत आईं नहीं, तो यों करी सरत।
कह्या खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज कयामत।। २८ ।।

रसूल साहब के समय में रूहें (ब्रह्मसृष्टियां) नहीं आई थीं, इसलिए खुदा ने वायदा किया है कि हम कल मोमिनों के साथ दुनियां को कायम (अखण्ड) करने आएंगे।

जब एक रात एक दिन हुआ, सो एही फरदा कयामत।
अहेल किताब मोमिन कहे, हादी कुरान सूरत।। २९ ।।

जब हजार वर्ष का एक दिन बीता और सौ बरस की एक रात्रि बीती, अर्थात् ग्यारहवीं सदी समाप्त होने पर कायमी का दिन बताया है। कुरान के वारिस मोमिन कहे हैं। हादी श्री प्राणनाथजी और उनके साथियों को कुरान के ज्ञान की पहचान हुई, इसलिए यह वारिस कहलाए।

आए वसीयत नामें मक्के से, उठया कुरान दुनी से बरकत।
सो अग्यारै सदी अंत उठसी, रूहें हादी कुरान सोहोबत।। ३० ।।

मक्का से औरंगजेब बादशाह के पास वसीयतनामे लिखकर आए कि कुरान में दिए इशारों के अनुसार मक्का से कुरान और बरकत उठ गई है। कुरान में जो ग्यारहवीं सदी के अन्त में बरकत और कुरान के उठने का संकेत दिया था वह उठकर हादी श्री प्राणनाथजी और रूहों (ब्रह्मसृष्टियों) के पास पहुंच गई।

झण्डा ईसे मेहेंदी ने, खड़ा किया है जित।
सो आई इत न्यामतें, हक हकीकत मारफत।। ३१ ।।

हिन्दुस्तान में ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी, देवचन्द्रजी) ने श्री प्राणनाथजी के तन में बैठकर पन्नाजी में जहां दीन का झण्डा खड़ा किया है वहीं सब न्यामतें जो वसीयतनामे में लिखी हैं, आईं। वहीं अन्त में पारब्रह्म की हकीकत और मारफत का ज्ञान भी आया, जिसकी भविष्यवाणी कुरान में कही है।

कही थी बरकत दुनी में, सो दुनियां माफक ईमान।
सो भी जाहेर ठौर सबे उठे, हिन्दू या मुसलमान।। ३२ ।।

दुनियां में दुनियां वालों को उनके ईमान के माफिक ही बरकत मिलने का लेख है। अब दुनियां वालों का ईमान ही न रहने से हिन्दू या मुसलमानों के जाहिरी ठिकानों से बरकत और शफकत उठकर इमाम मेंहदी के पास चली गई।

जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्यों कर।
खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर।। ३३ ।।

जब मुसाफ हादी और गिरोह मोमिनों की जमात अपने घर लौट जाएगी तो पीछे दुनियां नहीं रहेगी। यह खेल जिनके वास्ते बनाया है वह अपने समय पर जागृत हो जाएंगे।

देखो तीन बेर गिरो वास्ते, हक हुए मेहेरबान।
राख लई गिरो पनाह में, डुबाए दई सब जहान।। ३४ ।।

देखो, पारब्रह्म ने अपनी उम्मत (ब्रह्मसृष्टियों) के वास्ते तीन बार मेहरबानी की। उन्होंने अपनी गिरोह को चरणों में लेकर दुनियां को डुबो दिया।

Nijanand App

रसूल आए जिन बखत, कंगूरा गिरया बुतखाने का।
तब लोगों कह्या रसूल का, जाहेर होने का माजजा।। ३५ ।।

जब मक्का में बुतखाने का कंगूरा गिरा, तब लोगों ने कहा यह रसूल साहब के जाहिर होने का निशान है।

अब देखो माजजा रब आखिरी, सब उठाए सिजदे ठौर।
रोसन हुआ दिन अर्स बका, कोई ठौर रही ना सिजदे और।। ३६ ।।

अब आखिरी में पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी आ गए हैं। अब उनके चमत्कार को देखो। इन्होंने अखण्ड घर परमधाम और हक श्री राजजी महाराज का ज्ञान देकर दुनियां के बन्दगी के ठिकाने समाप्त कर दिए।

सिपारे ओगनतीस में, इन विध लिखे कलाम।
अर्स बका पर सिजदा, करावसी इमाम।। ३७ ।।

कुरान में उन्तीसवें सिपारे में लिखा है कि अखण्ड घर परमधाम पर सिजदा इमाम मेंहदी कराएंगे।

और आगे बुत बोले हुते, सांचा आखिरी पैगंमर।
फुरमान ल्याया हक का, तुम झूठे हो काफर।। ३८ ।।

जब रसूल साहब दुनियां में आए थे। तो बुतों (मूर्तियों) से आवाज आयी थी कि यह खुदा के पैगाम लाने वाले आखिरी पैगम्बर हैं और खुदा से कुरान लेकर आए हैं। इन बातों पर संशय लाने वाले काफिर हैं।

अब बेत अल्ला पुकारत, भेजी साहेदी नामे वसीयत।
तो भी दुनी ना देखहीं, जो ऐसे सौं खाय लिखे सखत।। ३९ ।।

अब अल्लाह के घर मक्का से वसीयतनामो के द्वारा आवाज आ रही है कि इमाम मेंहदी हिन्दुस्तान में प्रगट हो गए हैं। वसीयतनामे में यह हकीकत सौगन्ध खाकर लिखी है। फिर भी दुनियां (जाहिरी मुसलमान) इनको देखकर भी नहीं समझती।

मक्के मदीने दीन का, खड़ा था निसान।
सो हुआ फुरमाया हक का, करसी दज्जाल कुफरान।। ४० ।।

मक्का और मदीने में रसूल साहब ने दीन का झण्डा खड़ा किया था और कहा था कि शैतान दज्जाल यहां पर पाप फैलाएगा। जैसा कुरान में कहा था, वैसा ही हो गया।

तो जोरा किया दज्जाल ने, लोकों छुड़ाए दिया आकीन।
अग्यारै सदी के आखिर, रह्या न किन का दीन।। ४१ ।।

कुरान में लिखे के अनुसार ही मक्का के लोगों में से यकीन उठ गया। दिलों में दज्जाल (बेईमानी) आ गया। ग्यारहवीं सदी के अन्त में इमाम मेंहदी के प्रगट होने पर संसार में झूठे रूढ़िवादी धर्म समाप्त हो गए।

गजब हुआ दुनी पर, खैंच लिया फुरमान।
हादी भेजे नामे वसीयत, इत रह्या न किनों ईमान।। ४२ ।।

ऐसा अचम्भा हो गया कि कुरान के ज्ञान की शक्ति इमाम साहब ने खींच ली और उसी की गवाही में वहां से वसीयतनामे भिजवाए, कि शरा और हुकूमत के बादशाह को यकीन आ जाए। फिर भी लोगों को विश्वास नहीं आया। वह ईमान से गिर गए।

Nijanand App

आए देव फुरमाए हक के, बीच हिन्दुस्तान।
करो सबों पर अदल, मार दूर करो सैतान।। ४३ ।।

कुरान में लिखे के अनुसार पारब्रह्म अक्षरातीत ने हिन्दुस्तान में इमाम मेंहदी और ब्रह्मसृष्टि को भेजा और हुकम दिया कि बेईमानी रूपी शैतान को मार कर दूर भगा दो और सभी का न्याय करके एक दीन में लाओ।

आया बीच हिन्दुअन के, मुसाफ हक हुकम।
सो खलक रानी गई, जिन छोड़े हक हादी कदम।। ४४ ।।

इसी के अनुसार हिन्दुस्तान में हिन्दुओं के अन्दर इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के पास कुरान की शक्ति श्री राजजी के हुकम से आ गई। जो लोग हक के हुकम से इमाम मेंहदी पर यकीन नहीं लाए वह लोग रद्द हो गए।

फुरमान दूजा ल्याया सुकदेव, सो ढांप्या था एते दिन।
सो प्रगटया अपने समें पर, हुआ हिन्दुओं में रोसन।। ४५ ।।

दूसरा फुरमान शुकदेव मुनि लाए जो आज दिन तक छिपा हुआ था। स्वामी श्री प्राणनाथजी के आने पर हिन्दुओं के अन्दर उसका भी ज्ञान जाहिर हुआ।

परमहंस जाहेर भए, जाहेर धाम धनी अखंड।
कुली कालिंगा मारिया, मुक्त दई ब्रह्मांड।। ४६ ।।

भागवत में लिखे के अनुसार (भविष्य पुराण खण्ड दो भगवदावतार आदि वृतान्त श्लोक, २५, २६, २७ पन्ना १९४, १९५, प्रकाशक संस्कृति संस्थान, वेद नगर बरेली) ही पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत अपनी आत्माओं के साथ जाहिर हो गए। कलियुग की आसुरी बुद्धि को हटाकर संसार के जीवों को मुक्ति दी।

झूठ अमल सबे उठे, आए साहेब बीच हिंदुअन।
दाभा जाहेर हुई मक्के से, आए हिंद में मेंहेदी मोमिन।। ४७ ।।

पारब्रह्म जब हिन्दुओं के बीच प्रगट हो गए तब भारत में फैले हुए कर्मकाण्ड पर आधारित धर्म समाप्त हो गए। इस तरह से कुरान के अनुसार जब हिन्दुओं में इमाम मेंहदी प्रगट हो गए तो मक्का में दंगे फसाद शुरू हो गए।

दो बेर डुबाई जहान को, गिरो दो बेर बचाई तोफान।
तीसरी बेर दुनी नई कर, आखिर गिरो पर ल्याए फुरमान।। ४८ ।।

पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने दो बार ब्रह्मसृष्टियों को प्रलय में से निकाला और संसार को डुबाया। अब तीसरी बार इस सृष्टि की रचना करके ब्रह्मसृष्टि के लिए फुरमान लेकर इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी आए।

यों अर्स गिरो जाहेर करी, माहें कुरान पुरान।
किन पाई न सुध रूहें अर्स की, आप अपनी आए करी पेहेचान।। ४९ ।।

कुरान और पुराण दोनों के अनुसार ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि जाहिर हुए। संसार में अभी तक किसी को आत्माओं की और अखण्ड घर (परमधाम) की पहचान नहीं थी, इसलिए स्वयं पारब्रह्म ने आकर अपनी पहचान बताई।

Nijanand App

एही खासी गिरो हादी संग, एही फरदा कयामत।
जाहेर देखावे नामे वसीयत, कछू छिपी न रही हकीकत।।५० ।।

यही ब्रह्मसृष्टि खास गिरोह इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के साथ आई। इसी को फरदा रोज कयामत का जाहिर होना बताया है। वसीयतनामे में भी यही लिखा है। अब यह सच्चाई छिपी नहीं रही।

सो पेहेचान क्यों कर सके, जो पकड़े पुलसरात।
छोड़े न वजूद नासूती, जान बूझ के कटात।।५१ ।।

संसार की जीवसृष्टि जो कर्मकाण्ड की राह पर चलती है, वह इनकी पहचान कैसे कर सकती हैं। यह अपने मिटने वाले तनों में ही लगे हैं और जान-बूझकर कर्मकाण्ड की राह पर चलकर नरकगामी बनते हैं।

नासूत ऊपर लोक जानत, आसमान सात में मलकूत।
तिन पर हवा जुलमत, तिन पर नूर बका जबरूत।।५२ ।।

मृत्युलोक से सातवें लोक में बैकुण्ठ है और उसके ऊपर निराकार का आवरण है तथा उसके ऊपर अखण्ड अक्षरधाम है।

बुजरकी पैगंमरों, पाई जबराईल से।
हुए नजीकी हक के, सो सब न्यामत दई इनने।।५३ ।।

सभी पैगाम देने वाले अवतारी पुरुषों ने जबराईल फरिश्ता (अक्षर ब्रह्म के जोश का फरिश्ता) से ही महानता पाई है। यह फरिश्ता हक के नजदीकी होने के कारण ही पार का ज्ञान लाकर संसार में दे सका।

सो जबराईल जबरूत से, आगे लाहूत में न जवाए।
नूरतजल्ला की तजल्ली, पर जलावत ताए।।५४ ।।

यही जबराईल फरिश्ता अक्षर से आगे परमधाम नहीं जा सका, क्योंकि नूर तजल्ला की तजल्ली, अर्थात् अक्षरातीत के तेज से उसके पर जलते हैं।

जबरूत ऊपर अर्स लाहूत, इत महंमद पोंहोंचे हजूर।
रद बदल बंदगी वास्ते, करी हकसों आप मजकूर।।५५ ।।

अक्षर के पार परमधाम है जहां पर मुहम्मद साहब पारब्रह्म के धाम पहुंचे। उन्होंने दुनियां के वास्ते बन्दगी में ढील देने के लिए आग्रह किया।

ल्याए फुरमान इसारतें इत थें, सो नासूती क्यों समझाए।
मारफत अर्स अजीम में, ए पुलसरातें अटकाए।।५६ ।।

इस परमधाम से रसूल साहब कुरान में खुदा की इशारतें लेकर आए जो दुनियां वाले कैसे समझ सकते हैं। खुदा की पहचान कराने वाला मारफत का ज्ञान परमधाम ले जाता है और बाकी ज्ञान कर्मकाण्ड के रास्ते चलकर दुनियां रास्ते में ही रुक जाती है।

जाहेर लिखी आदम की, सब औलाद पूजे हवाए।
एक महंमद कहे मैं पोहोंचिया, नूर पार सूरत खुदाए।।५७ ।।

कुरान में साफ लिखा है कि आदि नारायण के बनाए जीव निराकार के पूजक होंगे। एक मुहम्मद कहते हैं कि मैं अक्षर पार परमधाम जाकर खुदा से मिला।

Nijanand App

दुनियां चौदे तबक में, किन सुरिया उलंघी ना जाए।
फना तले ला मकान के, ए तिनमें गोते खाए।।५८।।

चौदह लोकों की दुनियां में कोई सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप, डिवाइन लाइट) को ही पार नहीं कर सके। यह निराकार के नीचे ही नाशवान संसार में गोते खाते हैं।

हक सूरत किन देखी नहीं, है कैसी सुनी न किन।
तरफ न जानी चौदे तबक में, महंमद पोहोंचे ठौर तिन।।५९।।

पारब्रह्म के स्वरूप को किसी ने नहीं देखा और न उसके बारे में सुना। चौदह लोकों के किस तरफ वह है, इसका भी पता नहीं लग सका। उस ठिकाने पर मुहम्मद साहब मेयराज में पहुंचे।

करी महंमदें मजकूर तिनसे, सुने हरफ नब्बे हजार।
जहूद तिन साहेब को, कहे सुन्य निराकार।।६०।।

खुदा के सामने पहुंचने पर मुहम्मद साहब ने नब्बे हजार हरफ सुने। उसी पारब्रह्म को हिन्दू लोग निराकार कहते हैं।

ए भी कहें हक की सूरत नहीं, जो कहावें महंमद के।
सोई सब्द सुन पकड़या, आगूं काफर केहेते थे जे।।६१।।

मुसलमान जो मुहम्मद के बन्दे हैं वह भी कहते हैं कि खुदा की सूरत नहीं है, जो पहले से ही काफिर कहा करते थे। वही सुनकर इन्होंने भी इसे निराकार मान लिया।

तो काहे को कहावें महंमद के, जो इतना न करें सहूर।
कौल महंमद रद होत है, जो हक सों किया मजकूर।।६२।।

दीन इस्लाम के कहलाकर भी इतना विचार नहीं करते कि इनको मुहम्मद साहब को मानने वाला कैसे कहा जाए, क्योंकि मुहम्मद साहब ने जो खुदा से नब्बे हजार हरफ सुने वह बात खुदा को निराकार मानने से गलत हो जाती है।

जासों पाई बुजरकी महंमदें, हक मिलेके सुकन।
सो सुकन टूटत है, कर देखो दिल रोसन।।६३।।

खुदा से साक्षात् बातें करने के कारण ही मुहम्मद पैगम्बरों में सबसे बड़े माने जाते हैं। दिल में विचार करके देखो खुदा को निराकार मानने से यह वचन झूठे हो जाते हैं।

काफर न माने हक सूरत, ताको कछू अचरज नांहें।
केहेलाए महंमद के पूजें हवा, ए बड़ा जुलम दीन माहें।।६४।।

काफिर लोग खुदा की सूरत को निराकार कहें तो कोई अचम्भे की बात नहीं है, परन्तु मुहम्मद के अनुयायी होकर निराकार को पूजें तो धर्म में इससे बड़ा पाप क्या हो सकता है?

कहे महंमद करूं मैं एक दीन, जिन कोई जुदे परत।
कुरान माजजा मेरी नबुवत, हुए एक दीन होए साबित।।६५।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मैं सब संसार को एक पारब्रह्म का पूजक वक्त आखिरत के बनाऊंगा। उस समय तुम कोई अलग नहीं होना। तब कुरान के छिपे भेद इमाम मेंहदी खोलेंगे। तभी मेरी नबुवत (पैगम्बरी) सिद्ध होगी। तब सारी दुनिया एक धर्म को मानने लगेगी।

Nijanand App

तुम करत मुझसे दुस्मनी, मैं किया चाहों एक राह।
तो जुदे परत कई दीन से, जो दिलों अबलीस पातसाह।। ६६ ।।

अब जब मैं इमाम मेंहदी के रूप में सब संसार को एक रास्ते पर लाना चाहता हूं, तो तुम लोग तुम्हारे दिलों में शैतान होने से, सच्चे धर्म से अलग-अलग हो रहे हो।

कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित हुआ न चाहें।
लड़ फिरके जुदे हुए, जो बुजरक कहावें दीन माहें।। ६७ ।।

इससे ऐसा लगता है कि कुरान के मानने वाले ही नहीं चाहते कि इमाम मेंहदी कुरान के छिपे रहस्य खोलें और पैगम्बर रसूल साहब की बातें सिद्ध हों, इसलिए दीने-इस्लाम के लोग आपस में लड़-झगड़कर फिरकों में बंट गए।

आए रसूलें हक जाहेर किया, किया असौं का बयान।
हौज जोए बाग कई बैठकें, सब हकीकत ल्याया फुरमान।। ६८ ।।

रसूल साहब ने आकर क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की हकीकत बताई। परमधाम में हौज कौसर तालाब, श्री जमुनाजी तथा बाग-बगीचों में सुन्दर-सुन्दर बैठने के स्थान हैं, ऐसा कुरान में सारी हकीकत खोलकर बताया।

कहावें फिरके बुजरक, हुए आपमें दुस्मन।
महंमद मता अर्स बका, लिया जाए न हवा के जन।। ६९ ।।

अब सभी धर्मों के लोग अपने को बड़ा बताकर आपस में दुश्मनी करते हैं और इसलिए अखण्ड घर (परमधाम) का ज्ञान जो मुहम्मद ने आकर बताया, निराकार के पूजक जीव लेना नहीं चाहते।

जो लों हक सूरत पावें नहीं, तो लो मंहमद औरों बराबर।
दई कई बुजरकियां, लिखे लाखों पैगंमर।। ७० ।।

जब तक सारे संसार को पारब्रह्म की सूरत पर विश्वास नहीं आता, तब तक मुहम्मद भी दूसरे पैगम्बरों के समान ही हैं। वैसे दुनियां में लाखों पैगम्बर हैं (धर्माचार्य हैं) जिन्हें महानता प्राप्त है।

तब पावें रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक।
हकें मासूक कह्या तो भी न समझें, क्या करे आम खलक।। ७१ ।।

यह दुनियां वाले रसूल को सब पैगम्बरों में बड़ा तभी मानेंगे जब उनको हक की पहचान हो जाएगी। कुरान में पारब्रह्म ने (खुदा ने) रूह अल्लाह को माशूक करके कहा है। फिर भी इस संसार के जीवों को समझ में नहीं आता कि खुदा की सूरत है।

जाहेर राह मारे दुस्मन, अबलीस दिलों पर।
जाहेरी इलमें नफा न ले सके, पेहेचान होए क्यों कर।। ७२ ।।

क्योंकि दुनियां वालों के दिलों में शैतान अबलीस की बादशाही है, इसलिए यह जाहिरी अर्थ लेने वालों का रास्ता रोक देता है। दुनियां वाले जाहिरी इल्म से खुदा की सूरत को पहचान नहीं सकते।

बका पोहोंच्या एक महंमद, कही जिनकी तीन सूरत।
तित और कोई न पोहोंचिया, जो लई इनो बका खिलवत।। ७३ ।।

अखण्ड परमधाम में केवल एक मुहम्मद पहुंचे जिनकी तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी कही हैं। इन्होंने ही अखण्ड परमधाम में मूल-मिलावे की हकीकत को जाना। जहां और कोई नहीं पहुंच पाया।

Nijanand App

देसी हकीकत सब अर्सों की, नूर जमाल सूरत।
केहेसी निसबत वाहेदत, रखे न खतरा बीच खिलवत।।७४ ।।

मुहम्मद साहब के हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की और पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान कराएंगे और वहां खुदा और मोमिन एक तन हैं इसकी लीला का वर्णन करने में कोई संकोच नहीं करेंगे।

सरत करी जो रसूले, सो पोहोंच्या आए बखत।
तिन इमाम को न समझे, जिनपे कुंजी कयामत।।७५ ।।

रसूल साहब ने आने का जो वायदा किया था, वह आ गए हैं। इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज जिनके पास तारतम ज्ञान की कुंजी और खोलने की कला है, के स्वरूप की पहचान नहीं करते।

बका से आए रूह अल्ला, और महंमद मेहेंदी इमाम।
मैं जो करी मजकूर, सो देसी साहेदी तमाम।।७६ ।।

अखण्ड परमधाम से रूह अल्लाह (श्री देवचन्द्र जी, श्री श्यामा महारानी) और मुहम्मद इमाम मेंहदी प्राणनाथजी आ गए हैं। वह रसूल साहब और खुदा के बीच जो बातें हुई हैं, उनकी गवाही देंगे।

कुरान माजजा नबी नबुवत, दोऊ साबित होवें तब।
दज्जाल मारके एक दीन, आए रूह अल्ला करसी जब।।७७ ।।

कुरान के रहस्य और रसूल साहब की पैगम्बरी तब सिद्ध होगी जब रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) दूसरे तन श्री प्राणनाथजी के अन्दर आकर शैतान को मारकर एक दीन पर सब को चलाएंगे, अर्थात् एक पारब्रह्म के पूजक बनाएंगे।

मसी और इमाम, जब देसी मेरी साहेदी।
मैं गुझ करी नूर जमाल सों, सो होसी जाहेर बुजरकी।।७८ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि जब ईसा (श्री श्यामाजी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी संसार में आकर कुरान में लिखी बातों की गवाही देंगे तो मैंने जो बातें की थीं वह छिपी बातें जाहिर हो जाएंगी।

मै दुनियां ल्याया जो दीन में, सो मैं देखत हों अब।
फिरके होसी मेरे तेहेत्तर, आखिर होएगी तब।।७९ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मैंने जो इस्लाम धर्म शुरू किया है उसको अब मैं देखता हूं कि आखिरत होने तक मेरे दीन के तिहत्तर टुकड़े हो जाएंगे।

तब ए बुजरक आवसी, साहेब जमाने के।
हक करसी हिदायत तिनको, इनों संग नाजी फिरका जे।।८० ।।

तब इमाम मेंहदी साहब आखिर जमाने के खाविंद जाहिर होंगे। इमाम मेंहदी साहब जिनके साथ मर्दों की (मोमिनों की) जमात होगी, उनको खुद समझाएंगे।

हरफ गुझ जो हुकमें, मैं रखे छिपाए।
सो अर्स मता हक खिलवत, जाहेर करसी आए।।८१ ।।

खुदा के हुकम से मैंने जो मारफत के तीस हजार हरफ छुपाकर रखे हैं उनमें अखण्ड घर की, श्री राजजी की, मूल-मिलावा की सब हकीकत है, जिसे इमाम मेंहदी आकर जाहिर करेंगे।

Nijanand App

मता सब मेयराज का, किया अर्स में हकें मजकूर।
जो मेहेर हमेसा मुझ पर, सो ए सब करसी जहूर।। ८२ ।।

पारब्रह्म से मेयराज में घर जाकर मैंने जो बातें कीं, वह उस पारब्रह्म की कृपा से ही हुईं। अब उन सब बातों को इमाम मेंहदी आकर संसार में जाहिर करेंगे।

और फिरके सब आवसी, और सब पैगंमर।
होसी हिसाब सबन का, हाथ हकी सूरत फजर।। ८३ ।।

हकी सूरत श्री प्राणनाथजी के सामने सब फिरके तथा सभी पैगम्बर आएंगे और सबको ज्ञान देकर न्याय करेंगे।

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, खुले ना बिना खिताब।
गुझ बातून होसी जाहेर, जब हक लेसी हाथ किताब।। ८४ ।।

यह बात कुरान में जाहिर लिखी है, परन्तु जिनके सिर आखिरी खिताब इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी हैं उनके बिना यह भेद नहीं खुलेंगे। जब वह स्वयं कुरान का ज्ञान हाथ में ले लेंगे तो कुरान के सारे रहस्य जाहिर हो जाएंगे।

हक जाहेर हुए बिना, मेरी बड़ाई जाहेर क्यों होए।
कायम सूर ऊगे बिना, क्यों चीन्हे रात में कोए।। ८५ ।।

जब तक पारब्रह्म इमाम मेंहदी के रूप में जाहिर नहीं होते तब तक रसूल साहब कहते हैं कि मेरी बड़ाई कैसे जाहिर होगी? जब तक अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय नहीं होगा तब तक मुझे अंधेरे में कौन पहचानेगा?

अर्स कह्या दिल मोमिन, सब अर्स में न्यामत।
कह्या और दिलों पर अबलीस, अब देखो तफावत।। ८६ ।।

मोमिनों का दिल अर्श कहा है। जहां अर्श है, वहीं सब खजाना है (न्यामत है)। दुनियां के दिलों पर अबलीस शैतान की हुकूमत है। अब इन दोनों का फर्क देखो।

मोमिन हक बिना कछू ना रखें, करी मुरदार चौदे तबक।
महंमदें मोमिनों राह ए दई, ए राह क्यों ले हवाई खलक।। ८७ ।।

मोमिन पारब्रह्म के सिवाय कोई चाहना नहीं रखते। इन्होंने चौदह तबकों को मुरदार समझकर छोड़ दिया है। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने और सुन्दरसाथ ने यह रास्ता चलकर दिखाया। इस रास्ते पर निराकार के पूजक नहीं चल सकते।

महामत कहे ए मोमिनों, राह बका ल्योगे तुम।
जिन का दिल अर्स कह्या, औरों ना निकसे मुख दम।। ८८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अखण्ड घर के इस रास्ते पर तुम ही चलोगे, क्योंकि तुम्हारे ही दिल में पारब्रह्म विराजे हैं। किसी और के अन्दर ऐसा करने की ताकत नहीं है।

Nijanand App

खुलासा मेयराज का (दर्शन लीला)

हक हादी रूहन सों, जो किया कौल अव्वल।
ए खुलासा मेयराज का, जो रूहों हुई रदबदल।। १ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामा महारानीजी से और रूहों से खेल में उतरने से पहले इश्क की रद-बदल (बातचीत) में जो वायदे किए थे, वह सब मेयराज में बताए हैं।

कौल अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब।
हक इलम ले देखिए, सोई साइत है अब।। २ ।।

श्री राजजी ने जब रूहों से कहा कि मैं ही तुम्हारा एक परमात्मा हूं, अब हक का इल्म लेकर देखें तो अभी वही पल है।

तब वले कह्या अरवाहों ने, अर्स से उतरते।
किया जवाब हक ने, रूहों याद किया चाहिए ए।। ३ ।।

तब रूहों ने 'वले' शब्द कहकर स्वीकारा कि आप ही निश्चित रूप से हमारे खुदा हैं, श्री राजजी ने फिर कहा कि इसे याद रखना।

तुम माहों माहें रहियो साहेद, मैं केहेता हों तुम को।
याद राखियो आप में, इत मैं भी साहेद हों।। ४ ।।

हक ने रूहों से कहा तुम आपस में भी गवाह रहना और इस बात को याद रखना। मैं भी तुम्हारा गवाह रहूंगा।

और साहेद किए फरिस्ते, जिन जाओ तुम भूल।
फुरमान भेजोंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल।। ५ ।।

और जबराईल-असराफील को गवाह बनाया है, इसलिए तुम भूल मत जाना। मैं तुम्हारे वास्ते अपने प्यारे रसूल के हाथ फुरमान भेजूंगा।

मेयराज हुआ महंमद पर, तोलों हलता है उजू जल।
बैठक गरमी ना टरी, बेर ना भई एक पल।। ६ ।।

मुहम्मद साहब को जब दर्शन हुआ तो दुनियां के हिसाब से एक पल का भी समय नहीं हुआ, क्योंकि हाथ धोने वाले तालाब के पानी का हिलना बन्द नहीं हुआ और बैठने वाले स्थान से उठने पर गरमी हटने को जितना समय लगता है उतना भी समय नहीं लगा।

दिया निमूना अरवाहों को, एक पलक बेर जान।
वले जवाब रूहों कह्या, अजूं सोई अवाज बीच कान।। ७ ।।

यह रूह (मोमिनों) को याद दिलाने के वास्ते बताया है कि वहां पर एक क्षण भी नहीं हुआ। रूहों ने जो 'वले' शब्द कहा था उस 'ले' शब्द की आवाज बृज, रास और जागनी तीनों ब्रह्माण्डों की लीला देखने के बाद जब घर में उठेंगे तो सुनाई पड़ेगी।

उतर आए नासूत में, भूल गए अर्स की।
इत पैदा फना के बीच में, जाने हम हमेसगी।। ८ ।।

मोमिन अर्श से फर्श पर उतरे तो अर्श (घर) की बातें भूल गए। इस जन्म-मरण के संसार में आकर समझने लगे हैं कि हम हमेशा से ही यहां के हैं।

Nijanand App

अर्स रूहें भूली नासूत में, इनसों हक हादी निसबत।
ताए लिख भेज्या फुरमान में, अजूं सोई है साइत।। ९ ।।

परमधाम की रूहें, जो श्री राजजी श्री श्यामाजी की अंग हैं, नासूत में आकर अपनी निसबत भी भूल गई हैं। इनके वास्ते ही खुदा ने फरमान भेजा है। परमधाम में अभी वही समय है।

हाए हाए ए समया क्यों न रह्या, ए कैसा भोम का बल।
तो कह्या सिखरा सींग पर, रेहे न सके एक पल।। १० ।।

हाय! हाय! वह सब बातें याद क्यों नहीं रहीं? यह कैसा इस धरती का प्रभाव है? जैसे राई का दाना सींग पर एक पल नहीं टिक सकता, इसी तरह से यह ब्रह्माण्ड भी एक पल का है।

आए पड़े तिन फरेब में, चौदे तबकों न बका तरफ।
फना बीच सब खेलत, कोई बोल्या न बका हरफ।। ११ ।।

ऐसे फरेब (छल) के संसार में मोमिन आकर फंस गए हैं, जहां चौदह लोकों में घर की पहचान कराने वाला कोई नहीं है। इन चौदह लोकों के जीवों को इस नाशवान संसार का ही ज्ञान है। दुनियां से कोई भी अखण्ड घर का रास्ता बताने वाला नहीं है।

खेल झूठा झूठी रसमें, रूहें गैयां तिनमें मिल।
अब सीधा क्यों ए न होवहीं, जो हुकमें फिराया दिल।। १२ ।।

यह संसार झूठा है। यहां के सब रीति-रिवाज झूठे हैं। इनमें आकर मोमिन मिल गए हैं। श्री राजजी महाराज के हुकम से इनका जो दिल परमधाम से माया की तरफ मुड़ गया है वह अब प्रयास करने पर भी किसी तरह माया को नहीं छोड़ता।

कौल किया हकें इनसों, बीच खिलवत रूहों मजकूर।
दिया इलम लदुन्नी इनको, ए बीच दरगाह बिलंदी नूर।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज ने मूल-मिलावे में इन्हीं मोमिनों से खेल में आकर ज्ञान देने का वायदा किया था। उसी के अनुसार तारतम ज्ञान लाकर परमधाम की रहने वाली रूहों को दिया।

देखो बड़ी बड़ाई इनकी, हकें मासूक भेज्या इन पर।
भेजी हाथ कुंजी रूह अपनी, और दई अपनी आमर।। १४ ।।

इन मोमिनों की बड़ाई देखो कि श्री राजजी महाराज ने अपने प्यारे माशूक श्री श्यामाजी को तारतम ज्ञान की कुंजी तथा अधिकार देकर भेजा है।

हुकम दिया दिल अर्स किया, हकें कह्या महंमद मासूक।
ए कौल सुन रूह मोमिन, हाए हाए हुए नहीं टूक-टूक।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामा महारानी को अपना अधिकार दिया और उनके दिल को अपना अर्श किया। इन वचनों को सुनकर मोमिन टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं होते?

जो कौल किए बीच खिलवत, हक हादी रूहों मिल।
सो क्यों तुमें याद न आवहीं, अर्स में तन तुम असल।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और रूहों ने मिलकर मूल-मिलावे में जो वायदे किए थे वह तुम्हें याद क्यों नहीं आते, जबकि मूल तन तुम्हारे परमधाम में ही हैं।

Nijanand App

लिखे पहाड़ कर ईसा महंमद, ए निसान आखिर के।
हक बका अर्स देखावहीं, दिन जाहेर करसी ए।। १७ ।।

कुरान में ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की महिमा आखिरी वक्त में सबसे बड़ी पहाड़ों जैसी होगी, लिखा है। वही अखण्ड परमधाम की बात को यहां आकर पहचान कराकर कयामत के दिन जाहिर करेंगे।

लिख्या सूरज मारफत का, होसी जाहेर महंमद से।
आई अर्स रूहें गिरो अहमदी, किए जाहेर जबराईलें।। १८ ।।

कुरान में लिखा है कि मारफत के ज्ञान का सूर्य आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी जाहिर करेंगे। श्री श्यामा महारानी के अंग रूहें घर से खेल देखने आई हैं। उनकी पहचान जबराईल फरिश्ते ने आकर कराई।

करसी बका अर्स जाहेर, ताके निसान पहाड़ बिलंद।
आखिर अपने कौल पर, आए जमाने खावंद।। १९ ।।

ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आकर अखण्ड परमधाम को जाहिर करेंगे, इसलिए इनकी पहाड़ों के समान ऊंची महिमा कही है। अपने किए वायदे के अनुसार आखिर जमाने के खाविंद आकर दो तनों में जाहिर हो गए।

हक बका का किबला, कह्या जाहेर होसी आखिरत।
पावें न माएना जाहेरी, मुसाफ माएने इसारत।। २० ।।

कुरान में लिखा है कि आखिरी समय में पारब्रह्म और अखण्ड परमधाम ही पूज्य हैं, ऐसा जाना जाएगा। कुरान की इन इशारतों को जाहिरी लोग नहीं समझ पाते।

हकें बुजरकी वास्ते, लिखी इसारतें पहाड़ कर।
सो दुनी पूजे पहाड़ जाहेरी, इनों नाहीं रूह की नजर।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज ने ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी, श्री देवचन्द्रजी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी की महिमा पहाड़ जैसी जाहिर होगी, लिखा है। इसे दुनियां वाले "तकुआ और मरुआ" पहाड़ों की पूजा करते हैं। यह अन्दर की नजर से रहस्य को नहीं समझते।

कहे कुरान इन जिमी से, तरफ न पाई अर्स हक।
ए तेहेकीक किन ना किया, कई ढूंढ थके बुजरक।। २२ ।।

कुरान कहता है कि इस जमीन पर अखण्ड घर तथा पारब्रह्म की पहचान किसी को नहीं हुई। बड़े-बड़े विद्वान दृढ़ता के साथ ढूंढ़कर थक गए, परन्तु किसी ने निश्चित रूप से रास्ता नहीं बताया।

जो बची गिरोह कोहतूर तले, और तोफान किस्ती पर।
बेर तीसरी लैलत कदर में, जिन रोज कयामत करी फजर।। २३ ।।

जिनको बृज में गोवर्द्धन पर्वत के नीचे बचाया था और नूह-तोफान के समय उन्हें योगमाया की किश्ती में बिठाकर पार उतारा था, वही ब्रह्मसृष्टियां अब तीसरी बार लैल तुल कदर की रात्रि में आई हैं जिनके वास्ते तारतम ज्ञान ने अहंकार के अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का उजाला किया।

सोई गिरो इसलाम की, खेल लैल देख्या दो बेर।
तीसरी बेर फजर की, जाके इलमें टाली अंधेर।। २४ ।।

उन्हीं ब्रह्मसृष्टियों की जमात ने दो बार बृज और रास का खेल देखा है और तीसरी बार इस जागनी के ब्रह्माण्ड में तारतम ज्ञान से अंधेरा मिटाकर सवेरा किया है।

Nijanand App

सिर बदले जो पाइए, महंमद दीन इसलाम।
और क्या चाहिए रूहन को, जो मिले आखिर गिरोह स्याम।। २५ ।।

अब उन रूहों को सिर देकर भी यदि मुहम्मद श्री प्राणनाथजी का सच्चा धर्म (निजानन्द सम्प्रदाय) मिलता है तथा श्री प्राणनाथजी और ब्रह्मसृष्टियां मिलती हैं, तो उनको और क्या चाहिए?

ए जो पैदा जुलमत से, सो कुंन केहेते उपजे।
मगज मुसाफ न पावत, लेत माएने ऊपर के।। २६ ।।

संसार के जीव जो निराकार से पैदा हैं। वह पारब्रह्म के कुंन (हो जा) कहने से हुए हैं, इसलिए यह कुरान के रहस्य को नहीं पाते और ऊपर के अर्थ लेते हैं।

कौल हमारे नूर पार के, सो क्यों समझें जुलमत के।
कुंन केहेते पैदा हुए, ला मकान के जे।। २७ ।।

हमारे वायदे अक्षर के पार परमधाम के हैं तो वह जो निराकार से कुंन शब्द रूपी आदेश से पैदा हुए हैं, वह कैसे समझेंगे?

लैलत कदर में रूहें फरिस्ते, जो अर्स से उतरे।
कौल किया हकें जिनसों, सो नूर बानी से समझेंगे।। २८ ।।

लैल तुल कदर की रात्रि में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अपने धामों से उतरी हैं। इनसे ही पारब्रह्म ने वायदे किए थे और यही तारतम वाणी से कुरान के रहस्य को समझेंगे।

फना जिमी के बीच में, जाहेरी पहाड़ पूजत।
दुनियां नजर फना मिने, अर्स बका न काहूं सूझत।। २९ ।।

इस फानी दुनियां में यहां के लोग जाहिरी पहाड़ों की पूजा करते हैं। दुनियां वालों की नजर मिटने वाले संसार में ही रहती है। अखण्ड घर की खबर किसी को नहीं है।

दिल हकीकी अर्स मोमिन, कह्या तिन दिल की भी तरफ नाहें।
वाकी इत तरफ क्यों पाइए, दिल रेहेत अर्स तन माहें।। ३० ।।

मोमिनों के दिलों को हक का अर्श कहा है। उन मोमिनों के दिल कहां हैं, इसकी जानकारी भी दुनियां वालों को नहीं है, क्योंकि उनके दिल तो परआतम में हैं जो परमधाम में हैं। उनकी पहचान यहां के लोग कैसे कर सकते हैं?

दिल अर्स मोमिन कह्या, जामें अमरद सूरत।
खिन न छूटे मोमिन से, मेहेबूब की मूरत।। ३१ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कहा है जिसमें श्री राजजी महाराज का किशोर स्वरूप विराजमान है। अपने ऐसे प्यारे धनी के स्वरूप को मोमिन एक पल के लिए भी नहीं छोड़ सकते।

ए जो फजर सूर असराफील, नुकता हुकम बजावत।
ले कुफर बैठे पहाड़ से, सो जरे ज्यों उड़ावत।। ३२ ।।

असराफील फरिश्ता तारतम वाणी लेकर श्री राजजी के हुकम से बिगुल बजाकर ज्ञान का सवेरा करेगा जिससे पहाड़ के समान धर्माचार्य जो झूठा ज्ञान लेकर बैठे हैं, तिनके के समान उड़ जाएंगे।

Nijanand App

और कुफर दुनी जो पहाड़सी, सूर दूजे कायम करत।
हकें मेहेर कर मोमिनों पर, बातून माएने लिखत।। ३३ ।।

यही असराफील फरिश्ता दूसरी बार सूर फूंककर झूठी दुनियां को जो पहाड़ के समान है, उड़ाकर अखण्ड कर देगा। श्री राजजी महाराज ने मोमिनों पर कृपा करके बातूनी छिपे रहस्य लिखकर बताए।

फरिस्ता नजीकी बुजरक, किया सब जिमी सिजदा जिन।
दई लानत न किया सिजदा, रद किया वास्ते मोमिन।। ३४ ।।

अजाजील फरिश्ता (विष्णु भगवान) जो नजदीक था और जिसने सारी जमीन पर पारब्रह्म को सिजदा किया था उसको आदम पर सिजदा न करने के कारण लानत लगा दी, क्योंकि मोमिनों को भुलाने वाला खेल दिखाना था।

दिल मोमिन अर्स कह्या, ए जो असल अर्स में तन।
ए लिख्या फुरमान में जाहेर, पर किया न बेवरा किन।। ३५ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कहा है, क्योंकि इनकी परआतम परमधाम में है। कुरान में ऐसा स्पष्ट लिखा है, परन्तु आज तक अर्श दिल वाले मोमिन कौन हैं, किसी ने नहीं जाना।

औलिया लिल्ला रूहें मोमिन, बोहोत नाम धरे उमत।
ए सब बड़ाई गिरो एक की, जो अर्स रूहें हक निसबत।। ३६ ।।

मोमिनों को खुदा का दोस्त कहा है और भी बहुतेरे नामों से मोमिनों की महिमा गाई है। यह सारी सिफत मोमिनों की एक जमात की है जो हक निसबती परमधाम के रहने वाले हैं।

हके कलाम लिखे अपने, कहे मैं भेजे मोमिनो पर।
सो फिरका खोले इसारतें रमूजें, बिन मोमिन न कोई कादर।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के वास्ते ही अपनी वाणी (कुरान) को भेजा। उस कुरान की इशारतों और रमूजों (भेदों) को बिना मोमिनों के खोलने की शक्ति किसी में नहीं है।

हकें लिख्या मैं करूं हिदायत, एक नाजी फिरके को।
हुआ हजूर ले हक इलम, जले बहत्तर दोजखमों।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में लिखा है कि मैं सिर्फ अपने रूह (मोमिनों) जिसको कुरान में नाजी फिरका कहा है, को हिदायत करूंगा। वह मेरे इल्म से पहचान कर मेरे पास आ जाएगा। बाकी बहत्तर फिरके दोजख में जलेंगे।

लिखियां सब बड़ाइयां, तिन सब सिर हक हुकम।
सो सब आमर दई हाथ रूहन, इनों दिल अर्स कर बैठे खसम।। ३९ ।।

संसार के सभी धर्मशास्त्रों में इसी नाजी फिरके की (ब्रह्मसृष्टियों की) महिमा कही गई है और इन्हीं सबके सिर पर हक का हुकम है। इन्हीं रूहों को संसार को अखण्ड करने का अधिकार दिया है, इसीलिए इनके दिल को श्री राजजी महाराज अपना अर्श करके बैठे हैं।

और दिल हकीकी अर्स मोमिन, हके दिल अर्स कह्या इन।
दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, और ऊपर कह्या दुस्मन।। ४० ।।

क्योंकि श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल को अर्श करके बैठे हैं, इसलिए इन मोमिनों के दिल ही सच्चे हैं। बाकी संसार के झूठे जीवों के दिल मांस के लोथड़े हैं, क्योंकि उनके दिल में शैतान अबलीस की बैठक है।

Nijanand App

दुनियां दिल मजाजी अवलीस, दिल हकीकी पर हक।
एक गिरो दिल अर्स कही, सोई अर्स रूहें बुजरक।। ४१ ।।

झूठे दिलों के अन्दर शैतान अबलीस बैठा है और सच्चे दिलों में पारब्रह्म विराजमान हैं। ऐसे दिल वाले रूहों को ही अर्श की गिरोह कहा गया है और परमधाम की रूहें सबसे महान कही गई हैं।

रूह की नजरों पाइए, जो हक के नजीकी।
सो बैठे अपने मरातबे, देवे हक कलाम साहेदी।। ४२ ।।

जो हक के नजदीकी मोमिन हैं उनको आत्मिक दृष्टि से ही पहचाना जा सकता है। वह अपने शोभा युक्त स्थान परमधाम में बैठे हैं। जिसकी गवाही कुरान देता है।

बड़ा फरिस्ता मलकूत का, जाए सके ना जबरूत जित।
सुनने हकीकत कुरान की, रखता नहीं ताकत।। ४३ ।।

बैकुण्ठ का बड़ा फरिश्ता अजाजील (विष्णु भगवान) है। वह जबरूत (अक्षरधाम) नहीं जा सकता। कुरान के वचनों को सुनने की ताकत भी उसमें नहीं है।

मलकूत जबरूत लाहूत, ए अर्स कर तीनो लिखे।
मलकूत फना बीच में, जबरूत लाहूत बका ए।। ४४ ।।

मलकूत (बैकुण्ठ), जबरूत (अक्षरधाम), लाहूत (परमधाम) इन्हीं तीनों धामों को जीव, ईश्वरी और ब्रह्मसृष्टि का धाम कहा है। इन तीनों में मलकूत (बैकुण्ठ) नाशवान है। जबरूत और लाहूत दोनों अखण्ड हैं।

नूर मकान जबरूत जो, पोहोंच्या जबराईल जित।
अर्स अजीम जो लाहूत, हक हादी रूहें बसत।। ४५ ।।

नूर मकान जो अक्षर धाम है वहां तक ही जबराईल फरिश्ता जाता है। अर्श अजीम जिसे परमधाम कहते हैं वहां श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और रूहें रहती हैं।

आगूं जबराईल जाए ना सक्या, वाकी हद जबरूत।
पोहोंच्या न ठौर रूहन के, जित नूर बिलंद लाहूत।। ४६ ।।

जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम को छोड़कर आगे नहीं जा सका। नूर बिलंद (परमधाम) में जहां रूहें बैठी हैं, वहां नहीं जा सका, क्योंकि जबराईल की हद अक्षरधाम तक है।

हक हादी रूहें रूहअल्ला, ए बीच अर्स वाहेदत।
करे इलम लदुन्नी बेवरा, इत और न कोई पोहोंचत।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और रूहें जिस घर में एक दिल हैं। तारतम वाणी इसकी हकीकत बताती है। यहां और कोई दूसरा नहीं पहुंच सकता।

वाहेदत निसबत अर्स की, जब जाहेर हुई खिलवत।
ए सुकन सुन मोमिन, दिल लेसी अर्स लज्जत।। ४८ ।।

जब यहां पर अर्श की एकदिली और मूल-मिलावे की बातें जाहिर हुईं तो उन्हें सुनकर मोमिन घर के आनन्द का अनुभव करेंगे।

Nijanand App

ए बीच हमेसा खिलवत के, इनको हक मारफत।
वाहेदत एही केहेलावहीं, बीच अर्स अजीम उमत।।४९ ।।

यह मोमिन ही हमेशा परमधाम में रहते हैं और इनको ही पारब्रह्म की पहचान है। इन्हें ही पारब्रह्म के तन कहते हैं। इन्हीं को अर्श अजीम की उम्मत (जमात) कहा है।

बीच मेयराज इसारतें, मासूक लिख भेजत।
हांसी करने रूहन पर, ए जो फरेब देखाया इत।।५० ।।

रसूल साहब को जब मेयराज (दर्शन) हुआ उस समय श्री राजजी महाराज ने इशारतों में कुछ संदेश अपनी रूहों पर हंसी करने के वास्ते जो झूठा खेल उन्हें दिखाया है, लिखकर भेजा है।

हक अर्स नजीक सेहेरग से, दोऊ हादी खोले द्वार।
बैठाए अर्स अजीम में, जो कह्या मेयराजें नूर पार।।५१ ।।

इन मोमिनों के पारब्रह्म सेहेरग (शहरग) से नजदीक है। इसकी जानकारी रूह अल्लाह श्यामा महारानी श्री देवचन्दजी तथा मुहम्मद साहब श्री प्राणनाथजी दोनों हादियों ने दी। इन दोनों ने परमधाम के दरवाजे खोल दिए और अक्षर के पार अर्श अजीम में अन्दर बिठा लिया।

किन तरफ न पाई अर्स हक की, मांहें चौदे तबक।
सो खोल दिए पट हादिएं, इलम ईसे के बेसक।।५२ ।।

चौदह लोकों के बीच में किसी को भी श्री राजजी का तथा परमधाम का पता नहीं है। ईसा (श्री देवचन्द्रजी) के तारतम ज्ञान से हादी श्री प्राणनाथजी ने सबके लिए उसके दरवाजे खोल दिए।

देखो मरातबा मोमिनों, बोलें न मेयराज बिन।
जो हकें हरफ छिपे रखे, वास्ते अर्स रूहन।।५३ ।।

इन मोमिनों की महानता देखो। यह बिना प्रत्यक्ष देखे कोई बात नहीं बोलते। पारब्रह्म ने जो अर्श की रूहों के वास्ते हरफ छिपा कर रखे थे, यह रूहें उसी का बखान करती हैं।

मेयराज में जो इसारतें, हक इलमें खोलें मोमिन।
कहें गुझ छिपा दिल हक का, कोई ना कादर या बिन।।५४ ।।

मेयराज (दर्शन) के समय श्री राजजी महाराज ने जो बातें इशारतों में कही थीं, तारतम ज्ञान से मोमिनों ने ही उनके भेद खोले। हक के दिल की छिपी बातों को मोमिनों के बिना दूसरा कोई नहीं खोल सकता।

कई जोर किया जबराईलें, आया एक कदम महंमद खातिर।
तो भी आगूं आए न सक्या, कहे जलें मेरे पर।।५५ ।।

जबराईल ने बहुत ताकत लगाई और रसूल साहब के वास्ते एक कदम आगे आया भी, फिर भी वह आगे नहीं जा सका। कहता है कि मेरे पर जलते हैं।

चढ़ उतर के देखाइया, वास्ते राह मोमिन।
जो रूहें उतरी लैलत कदर में, सो चढ़ जाएंगे अर्स वतन।।५६ ।।

मुहम्मद साहब ने मोमिनों के वास्ते अर्श में आने जाने का रास्ता बताया। अब जो रूहें लैल तुल कदर में उतरी हैं वह इस रास्ते से चढ़कर अपने घर पहुंचेंगे।

Nijanand App

इसारतें मेयराज में, जो लिख भेजियां हक।
सो खोलें हम इसारतें, पढ़ायल रूह अल्ला के बेसक।।५७ ।।

श्री राजजी महाराज ने मेयराज (दर्शन) के समय जो इशारतें लिखकर भेजीं, उनको हम रूह अल्लाह (श्यामा महारानी, देवचन्द्रजी) के तारतम ज्ञान से पहचान कर उनके रहस्यों को खोल देते हैं।

कह्या मीठा दरिया उजला, जो देख्या नबी नजर।
तिन किनारे दरखत, जित बैठा जानवर।।५८ ।।

रसूल साहब ने नूरनामे में लिखा है कि मीठे और साफ जल वाले दरिया संसार के किनारे पर हुकम रूपी वृक्ष लगा है। उस वृक्ष के ऊपर वहां एक पक्षी बैठा है।

अन्दर मुरग जो कह्या, बैठा हुकम के दरखत।
इत ना पोहोंच्या जबराईल, सो मोमिन खोले मारफत।।५९ ।।

हुकम रूपी वृक्ष के ऊपर मुर्गा (देवचन्द्रजी की सुरता) बैठी है जहां पर जबराईल फरिश्ता नहीं पहुंच सका। मोमिनों ने ही इस रहस्य को खोला।

चुटकी खाक ले चोंच में, मुरग बैठा दरखत पर।
पर ना जलें इन मुरग के, सो कोई देवे एह खबर।।६० ।।

हुकम के पेड़ के ऊपर मुर्गा अपनी चोंच में खाक दबाए है, अर्थात् श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी रूपी मिटने वाला तन लेकर बैठे हैं। इस मुर्गे के पर क्यों नहीं जलते, कोई इस बात के भेद को खोले?

हादीएं पूछा हक से, क्यों खाक धरी चोंच में।
खेल उमतें मांगिया, गुनाह वजूद हुआ तिनसे।।६१ ।।

रसूल साहब ने हक श्री राजजी महाराज से पूछा कि चोंच में खाक क्यों दबा रखी है? श्री राजजी महाराज ने उत्तर दिया कि उम्मत ने झूठा खेल मांग लिया है। यही उनसे गुनाह हुआ है और इन मोमिनों को घर वापस लाने को ही श्यामा महारानी को नर तन (देवचन्द्रजी का) धारण करना पड़ा है।

लिख्या दरिया नींद इसारतें, जो देखाई कर मेहेरबानगी।
मोहे रूह अल्ला पट खोलिया, दई महंमदें मेयराज में साहेदी।।६२ ।।

कुरान में नींद को ही इशारतों में भव सागर कहा है जिसे हक परवरदिगार ने कृपा करके रूहों को दिखाया है। श्री महामतिजी कहते हैं कि मुझे रूह अल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) ने तारतम ज्ञान देकर मेरे अज्ञान का परदा हटा दिया। इस बात की गवाही रसूल साहब ने भी मेयराज में दी है।

ए जो मुरग मेयराज में अंदर, हर साइत यों केहेता था।
जो छोडूं खाक चोंच से, तो दरिया होए जाए अंधेरा।।६३ ।।

श्री श्यामाजी की आत्मा पल-पल फरामोशी में कह रही थी कि यदि मैं चोंच से खाक छोड़ दूं तो दरिया अंधेरा हो जाएगा, अर्थात् संसार का प्रलय हो जाएगा।

दरिया उजला दूध सा, मेहेर मीठा मिश्री।
ए दरिया कबूं न होए अंधेरा, ए हकें रूहों पर मेहेर करी।।६४ ।।

यह श्री राजजी महाराज की मेहर से बना संसार जो दूध के समान उज्ज्वल है, मिश्री से मीठा है, यह संसार कभी मिटेगा नहीं, क्योंकि श्री राजजी महाराज ने रूहों पर कृपा करके इसे बनाया है, अर्थात् यह अखण्ड हो जाएगा।

Nijanand App

कह्या खाक वजूद नासूती, हादी बैठा वजूद धर।
दुनी दरिया अंधेरी, हादी चले ना होए क्यों कर।। ६५ ।।

हादी श्री श्यामाजी ने यहां मृत्युलोक में श्री देवचन्द्रजी का तन धारण किया है। इसी को खाक कहा है। यदि श्री श्यामाजी तन छोड़ देंगे तो यह दुनियां रूपी दरिया समाप्त हो जाएगा।

हकें देखाया दरिया मेहेर का, सो अंधेरा क्यों ए ना होए।
करसी कायम चौदे तबक, बरकत हादी रूहों सोए।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज ने मेहर करके रूहों को यह संसार दिखाया है। इसलिए यह मिटेगा नहीं, बल्कि हादी और रूहों की कृपा से चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा।

नूर तजल्ला बीच में, हक हादी रूहों खिलवत।
हक से हादी रूहें नूर में, ए अर्स असल वाहेदत।। ६७ ।।

परमधाम (मूल-मिलावा) में श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें बैठी हैं। श्री राजजी से श्यामाजी और श्यामाजी से रूहें नूरी तन में हैं। यही परमधाम की एकदिली है।

नूर तजल्ला बीच में, लिख्या गुनाह पोहोंच्या रूहन।
जित आए न सक्या जबराईल, इत असल मोमिनों तन।। ६८ ।।

परमधाम के बीच जहां रूहों के असल नूरी तन हैं और जहां जबराईल नहीं जा सका, वहां रूहों को गुनाह लगा, (रूहों ने खेल मांगा) ऐसा कुरान में लिखा है।

लिया हाथ हिसाब याही वास्ते, हक रूहों पर हांसी करत।
हक हादी रूहें रूह अल्ला, होसी हांसी इन खिलवत।। ६९ ।।

रूहों के खेल में आने के कारण ही पारब्रह्म को न्यायाधीश बनकर यहां आना पड़ा, क्योंकि श्री राजजी महाराज रूहों पर हांसी करना चाहते हैं। अब परमधाम जहां पर श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें हैं, के मूल-मिलावे में हांसी होगी।

मोतिन के मुंह ऊपर, कुलफ लिख्या मांहें फुरमान।
इन गुन्हेगारों के दिल को, अपना अर्स कर बैठे मेहेरबान।। ७० ।।

मोमिन जो अर्श के मोती हैं उनके मुंह पर ताला लगा था, अर्थात् फरामोशी में बैठे थे। ऐसे गुन्हेगार मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज अपना अर्श करके बैठे हैं।

सो कुलफ कह्या फरामोस का, कह्या गुनाह रूहों का दिल।
खेल मांग्या फरामोस का, कर एक दिल सब मिल।। ७१ ।।

यह ताला जो रूहों के मुंह पर लगा है, फरामोशी का है, क्योंकि रूहों ने एकदिली करके खेल मांगा है, इसलिए इनके दिल पर गुनाह कहा है।

फरामोस गुनाह दिल मोमिनों, सोई कुलफ गुनाह इनों दिल।
याकी कुंजी दिल महंमद, सो टाले फरामोसी दे अकल।। ७२ ।।

मोमिनों के दिलों पर फरामोशी का ताला है। उसी फरामोशी से मोमिन संसार में मग्न हैं। उनके ताले को खोलने की कुंजी श्री श्यामाजी (मुहम्मद) लेकर आए हैं और तारतम का ज्ञान देकर ताला खोल देंगी।

Nijanand App

कहे महंमद सुनो मोमिनो, ए उमी मेरे यार।
छोड़ दुनी ल्यो अर्स को, जो अपना वतन नूर पार।।७३ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो। तुम निश्चित रूप से अनपढ़ मेरे यार हो, इसीलिए दुनियां को छोड़कर घर परमधाम का रास्ता लो अपना घर अक्षर के पार है।

हम बंदे रूहें इन दरगाह, कह्या अर्स दिल मोमिन।
यारों बुलावें महंमद, करो सिजदा हजूर अर्स तन।।७४ ।।

हम सभी रूहें इसी परमधाम की रहने वाली हैं जिनके दिल में पारब्रह्म अर्श करके बैठे हैं। इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी बुलाकर कहते हैं कि इस साक्षात पारब्रह्म श्री राजजी महाराज जो मेरे दिल में विराजमान हैं, को आकर सिजदा करो।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २६४ ॥

खुलासा इसलाम का

असल खुलासा इसलाम का, सब राह करत रोसन।
झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखिर सुख सबन।। १ ।।

असल खुलासा इस्लाम (निजानन्द सम्प्रदाय) का सच्चा ज्ञान सब धर्मों की हकीकत बताता है। यह माया और ब्रह्म की अलग-अलग पहचान कराकर अन्त में सबको सुख प्रदान करेगा।

मगज मुसाफ और हदीसें, हादी हिदायत देखें मोमिन।
ए खुलासा बिने इसलाम का, सबों देखावे बका वतन।। २ ।।

हादी श्री प्राणनाथजी की कृपा से कुरान और हदीसों के छिपे रहस्य मोमिन समझेंगे और सबको अखण्ड परमधाम का दर्शन कराएंगे। [यही निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) का नियम है।]

बका फना का बेवरा, पाया मगज सबका ए।
हादी रूहें अर्स से इजने, लैलत कदर में उतरे।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम और मिथ्या माया दोनों का सार यह है कि हादी श्री श्यामाजी और रूहें श्री राजजी महाराज के हुकम से लैल तुल कदर की रात्रि में संसार में आए हैं।

हकें कह्या अलस्तो-बे-रब-कुंम, कालू बेले कह्या रूहन।
खेल देख मुंह फेरोगे, न मानोगे रसूल सुकन।। ४ ।।

खेल में उतरते समय श्री राजजी महाराज ने कहा, हे रूहो! मैं ही तुम्हारा वाहिद (एक) खुदा हूं। तब रूहों ने तुरन्त उत्तर दिया कि बेशक आप ही हमारे धनी हैं। तब श्री राजजी महाराज ने कहा कि जब खेल में जाओगी तो मेरे से विमुख हो जाओगी और रसूल के वचनों को नहीं मानोगी।

भी फुरमाया तुम भूलोगे, साहेद किए रूहें फरिस्ते।
मैं तुममें साहेद तुम दीजियो, आप अपनी उमत के।। ५ ।।

श्री राजजी ने कहा कि तुम मुझे अवश्य भूल जाओगी। इसलिए मैंने रूहों और जबराईल, असराफील को गवाह बनाया है। श्यामाजी! मैं भी तुम्हारी गवाही दूंगा और तुम अपनी रूहों की गवाही देना।

चौथे आसमान लाहूत में, रूहें बैठी बारे हजार।
इन तसबी से पैदा होत हैं, फरिस्तों का सिरदार।। ६ ।।

चौथे आसमान लाहूत में बारह हजार रूहें बैठी हैं। उनके इस सिलसिले से देवताओं के सिरदार महाविष्णु की उत्पत्ति हुई।

Nijanand App

कहे महंमद सुनो मोमिनो, ए उमी मेरे यार।
छोड़ दुनी ल्यो अर्स को, जो अपना वतन नूर पार।।७३ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो। तुम निश्चित रूप से अनपढ़ मेरे यार हो, इसीलिए दुनियां को छोड़कर घर परमधाम का रास्ता लो अपना घर अक्षर के पार है।

हम बंदे रूहें इन दरगाह, कह्या अर्स दिल मोमिन।
यारों बुलावें महंमद, करो सिजदा हजूर अर्स तन।।७४ ।।

हम सभी रूहें इसी परमधाम की रहने वाली हैं जिनके दिल में पारब्रह्म अर्श करके बैठे हैं। इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी बुलाकर कहते हैं कि इस साक्षात पारब्रह्म श्री राजजी महाराज जो मेरे दिल में विराजमान हैं, को आकर सिजदा करो।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २६४ ॥

खुलासा इसलाम का

असल खुलासा इसलाम का, सब राह करत रोसन।
झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखिर सुख सबन।। १ ।।

असल खुलासा इस्लाम (निजानन्द सम्प्रदाय) का सच्चा ज्ञान सब धर्मों की हकीकत बताता है। यह माया और ब्रह्म की अलग-अलग पहचान कराकर अन्त में सबको सुख प्रदान करेगा।

मगज मुसाफ और हदीसें, हादी हिदायत देखें मोमिन।
ए खुलासा बिने इसलाम का, सबों देखावे बका वतन।। २ ।।

हादी श्री प्राणनाथजी की कृपा से कुरान और हदीसों के छिपे रहस्य मोमिन समझेंगे और सबको अखण्ड परमधाम का दर्शन कराएंगे। [यही निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) का नियम है।]

बका फना का बेवरा, पाया मगज सबका ए।
हादी रूहें अर्स से इजने, लैलत कदर में उतरे।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम और मिथ्या माया दोनों का सार यह है कि हादी श्री श्यामाजी और रूहें श्री राजजी महाराज के हुकम से लैल तुल कदर की रात्रि में संसार में आए हैं।

हकें कह्या अलस्तो-बे-रब-कुंम, कालू बेले कह्या रूहन।
खेल देख मुंह फेरोगे, न मानोगे रसूल सुकन।। ४ ।।

खेल में उतरते समय श्री राजजी महाराज ने कहा, हे रूहो! मैं ही तुम्हारा वाहिद (एक) खुदा हूं। तब रूहों ने तुरन्त उत्तर दिया कि बेशक आप ही हमारे धनी हैं। तब श्री राजजी महाराज ने कहा कि जब खेल में जाओगी तो मेरे से विमुख हो जाओगी और रसूल के वचनों को नहीं मानोगी।

भी फुरमाया तुम भूलोगे, साहेद किए रूहें फरिस्ते।
मैं तुममें साहेद तुम दीजियो, आप अपनी उमत के।। ५ ।।

श्री राजजी ने कहा कि तुम मुझे अवश्य भूल जाओगी। इसलिए मैंने रूहों और जबराईल, असराफील को गवाह बनाया है। श्यामाजी! मैं भी तुम्हारी गवाही दूंगा और तुम अपनी रूहों की गवाही देना।

चौथे आसमान लाहूत में, रूहें बैठी बारे हजार।
इन तसबी से पैदा होत हैं, फरिस्तों का सिरदार।। ६ ।।

चौथे आसमान लाहूत में बारह हजार रूहें बैठी हैं। उनके इस सिलसिले से देवताओं के सिरदार महाविष्णु की उत्पत्ति हुई।

Nijanand App

रूहें रहें दरगाह बीच में, प्यारी परवरदिगार।
खासलखास कही इनको, सिफत न आवे माहें सुमार।। ७ ।।

इस पूज्य परमधाम के बीच में पारब्रह्म की प्यारी आत्माएं रहती हैं जिनको कुरान में खासलखास कहा है। इनकी सिफत का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता।

उमत मेला महंमद का, इनकी काहूं ना पेहेचान।
ना होए खुले बातून बिना, मारफत हक फुरमान।। ८ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की इस जमात की किसी को पहचान नहीं थी। जब तक कुरान के रहस्य न खुलें, पारब्रह्म की पहचान होना मुश्किल है।

ए बात नहीं अटकल की, होए साबित खुलें हकीकत।
बूझे दीन महंमद का, हक हादी रूहें निसबत।। ९ ।।

यह कुरान की बातें अटकल की नहीं हैं। इनके रहस्य जब खुलेंगे तब इसकी हकीकत का पता लगेगा और तभी श्री राजजी, श्री श्यामाजी की निसबत का पता चलेगा। इन्हें सुन्दरसाथ ही समझ सकता है।

इन महंमद के दीन में, सक सुभे जरा नाहें।
सो हकें दिया इलम अपना, ए सिफत होए न इन जुबांए।। १० ।।

इन श्री प्राणनाथजी के निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) में जरा भी संशय की गुंजाइश नहीं है। पारब्रह्म ने इन्हें अपनी जागृत बुद्धि तारतम वाणी दी है, इसलिए इनकी सिफत जबान से वर्णन नहीं हो सकती।

मासूक महंमद तो कह्या, बहस हुआ वास्ते इस्क।
और कलाम अल्ला में कह्या, आसिक नाम है हक।। ११ ।।

श्री श्यामाजी महारानी को श्री राजजी महाराज ने परमधाम में माशूक करके कहा। वह इसलिए कि इन्हीं से इश्क रबद हुआ और इसीलिए कुरान में अल्लाह को आशिक कहा है।

मूल मेला महंमद रूहों का, सो कोई जानत नाहें।
ए जाने हक हादी रूहें, अर्स बका के मांहें।। १२ ।।

जिस परमधाम में श्री श्यामा महारानी और रूहें मिलकर बैठी हैं उसको कोई नहीं जानता। श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानीजी और ब्रह्मसृष्टियां जो अखण्ड घर की हैं, वही इस रहस्य को जानती हैं।

सुंनत जमात याको कहे, और कह्या दीन उमत।
महंमद की गिरो मिने, सक न सुभे इत।। १३ ।।

कुरान में इन रूहों को ही सुनकर ईमान लाने वाले (सुन्नत जमात) और इन्हें ही सुन्दरसाथ (दीन-ए-उम्मत) कहा है। श्री प्राणनाथजी के सुन्दरसाथ में किसी प्रकार का संशय नहीं है।

सक सुभे सब सरीयतों, यों कहे हदीस फुरमान।
कोई जाने ना हक तरफ को, ए अर्स रूहें पेहेचान।। १४ ।।

कुरान और हदीस में कहा है कि कर्मकाण्ड (शरीयत) पर चलने वाले ही संशय में डूबे होंगे और वह हक को नहीं जानते होंगे। पारब्रह्म की पहचान केवल अर्श की रूहों को ही होगी।

Nijanand App

दूजा ढिग वाहेदत के, आए न सके कोए।
आगे ही जल जात है, बका न देखे सोए।। १५ ।।

दूसरा और कोई परमधाम की एकदिली के अन्दर नहीं आ सकता और न अखण्ड को देख ही सकता है। वह शुरू से ही जल जाता है। निराकार से आगे आने की शक्ति नहीं है।

जो देख न सक्या जबराईल, तो क्यों कहूं औरन।
ए हक खिलवत महंमद रूहें, सो जाने बका बातन।। १६ ।।

जबराईल फरिश्ता जिसे नहीं देख सका तो दूसरे कैसे देखेंगे? यह श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों का एकान्त स्थान है, इसलिए यही अखण्ड परमधाम के रहस्यों को जानते हैं।

ए खेल हुआ वास्ते महंमद, महंमद आया वास्ते रूहन।
रूहअल्ला इलम ल्याए इनों पर, ए सब हुआ वास्ते मोमिन।। १७ ।।

यह संसार श्री श्यामाजी के वास्ते बना है और श्री श्यामाजी रूहों के वास्ते आए हैं। श्री श्यामाजी तारतम ज्ञान लेकर इन्हीं मोमिनों के वास्ते खेल में आए हैं।

इनों तन असल अर्स में, तीन बेर उतरे मांहें लैल।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, ए हकें देखाया खेल।। १८ ।।

इनके मूल-तन परमधाम में हैं। यह तीन बार रात्रि में खेल देखने आए। श्री राजजी महाराज ने इन्हें खेल दिखाया है, यह स्पष्ट कुरान में लिखा है।

रूहें आइयां खेल देखने, आए महंमद मेंहेदी देखावन।
तीनों हादी खेल देखाए के, दोऊ गिरो ले आवें वतन।। १९ ।।

रूहें खेल देखने के वास्ते संसार में आई हैं और श्री प्राणनाथजी और श्यामाजी खेल दिखाने के वास्ते आए हैं तीनों हादी (बसरी, मलकी और हकी) रूहों को खेल दिखाकर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को लेकर अपने घर वापस जाएंगे।

रूहें खेल देखे वास्ते, भिस्त दई सबन।
द्वार खोल मारफत के, करसी जाहेर हक बका दिन।। २० ।।

रूहों ने खेल देखा है। इनके कारण से ही जीवों को अखण्ड किया जाएगा। यह मारफत का ज्ञान बताकर श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को जाहिर करेंगे।

रूहें उतरी नूर बिलंद से, खलक पैदा जुलमत।
दुनी दिल अबलीस कह्या, दिल मोमिन हक वाहेदत।। २१ ।।

रूहें परमधाम से आई हैं और संसार निराकार से पैदा है। दुनियां के दिलों पर अबलीस (नारद) की बादशाही है और मोमिनों के दिलों में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं।

दिल मजाजी दुनी का, मोमिन हकीकी दिल।
हक हादी रूहें निसबत, कही अबलीस दुनी नसल।। २२ ।।

दुनियां के दिल को झूठा कहा है। मोमिनों का दिल सच्चा कहा है। रूहों की निसबत श्री राजजी और श्यामाजी से है। दुनियां की पैदाइश अजाजील से है (विष्णु भगवान की नसल है)।

Nijanand App

तीन जिनस पैदा कही, ताके जुदे कहे ठौर तीन।
करे तीनों को हिदायत महंमद, याको बूझसी महंमद दीन।। २३ ।।

तीन तरह की सृष्टि (पैदाइश) कही है। उनके अलग-अलग तीन ठिकाने भी बताए हैं। मुहम्मद श्री प्राणनाथजी तीनों सृष्टियों को अलग-अलग निर्देश देंगे। इसे सुन्दरसाथ ही समझेंगे।

ए ले खुलासा मोमिन, बका राह इसलाम।
ए मेहेर मुतलक हक से, करत जाहेर अल्ला कलाम।। २४ ।।

इस ऊपर वाले रहस्य को मोमिन समझकर अखण्ड घर के रास्ते पर चलेंगे। यह कृपा बिल्कुल इन मोमिनों पर श्री राजजी महाराज की है, ऐसा कुरान में लिखा है।

बिने सब की बताइए, ज्यों होए सब पेहेचान।
दीजे साहेदी मुसाफ की, ज्यों होए ना सके मुनकर जहान।। २५ ।।

अब सबकी रहनी बताते हैं जिससे सबकी पहचान हो जाएगी। इस बात की गवाही कुरान से देते हैं जिससे दुनियां बेईमान न हो जाए।

जो पैदा जिन ठौर से, तिन सोई देखाइए असल।
हुकम चले जित हक का, तित होए ना चल विचल।। २६ ।।

तीनों में जो जिस ठिकाने से आया है उनको उसी के ही घर की पहचान करा दी। पारब्रह्म का जहां हुकम चलता है, वहां पर कोई भी फेर बदल नहीं चल सकता।

पांच बिने कही मुस्लिम की, जिन लई सरीयत।
कलमा निमाज रोजा कह्या, और जगात हज जारत।। २७ ।।

शरीयत पर चलने वाले मुसलमानों के लिए पांच नियम बने हैं हज, रोजा, नमाज, जकात, कलमा जो मानने पड़ते हैं।

जुबांन से कलमा केहेना, सिर फरज रोजा निमाज।
जगात हिस्सा चालीसमा, कर सके न हज इलाज।। २८ ।।

जबान से कलमा कहना, केवल एक खुदा पर विश्वास रखना, रमजान का रोजा रखना और पांच वक्त की नमाज का फर्ज है। आगे अपनी कमाई का चालीसवां हिस्सा जकात देना और यदि सम्भव हो तो मक्का की यात्रा करना मुसलमानों के लिए आवश्यक है।

परहेज करे बदफैल से, बिने पांचों से पाक होए।
सो आग न जले दोजख की, पावे भिस्त तीसरी सोए।। २९ ।।

ऐसे मुसलमान बुरे कर्मों से परहेज करते हैं और पांचों नियमों को मानकर पवित्र होते हैं। फिर दोजख की अग्नि में नहीं जलते। उनको तीसरी बहिश्त (मुहम्मद की) में कायमी मिलेगी।

कोई पांच बिने की दस करो, पालो अरकान लग आखिर।
पर अर्स बका हक का, दिल होए न मोमिन बिगर।। ३० ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि पांच की जगह अगर दस नियमों का पालन करो और कयामत के दिन तक शरा के नियमों को पालते रहो, तो भी हक की बैठक मोमिनों के दिल के अलावा कहीं और नहीं हो सकती।

Nijanand App

जो पांच बिने न करे, सो नाहीं मुसलमान।
इन की बिने फैल नासूती, ए लिख्या माहें फुरमान।। ३१ ।।

पांच नियमों को न मानने वालों को मुसलमान नहीं कहना चाहिए। इनकी रहनी सब मायावी संसार के लिए होती है, ऐसा कुरान में लिखा है।

एक कुरान का माजजा, दूजी नबी की नबीवत।
एक दीन जब होएसी, कह्या तब होसी साबित।। ३२ ।।

कुरान के रहस्यों का भेद और रसूल साहब की पैगम्बरी तब सत्य होगी जब दुनियां में एक दीन हो जाएगा।

हादी किया चाहे एक दीन, ए कौल तोड़ जुदे जात।
सो क्यों बचे दोजख से, जाए छोड़े ना पुलसरात।। ३३ ।।

श्री प्राणनाथजी सबको एक दीन में लाना चाहते हैं, पर यह जाहिरी मुसलमान मुहम्मद साहब के वचनों के खिलाफ अलग-अलग रास्ते में जा रहे हैं। जिनसे शरीयत नहीं छोड़ी जाती, वह दोजख की अग्नि में जलने से नहीं बचेंगे।

कहे महंमद मिस्कात में, दुनी दिल पर सैतान।
वजूद होसी आदमी, होसी फिरकों ए ईमान।। ३४ ।।

मुहम्मद साहब ने मिस्कात किताब में लिखा है कि दुनियां के दिलों पर शैतान की बादशाही है। इनके शरीर तो आदमी जैसे होंगे, परन्तु इनके ईमान अलग-अलग हो जाएंगे।

पर मैं डरों इमामों से, करसी गुमराह ऐसी उमत।
करसी लड़ाई आप में, छूटे न लग कयामत।। ३५ ।।

रसूल साहब ने कुरान में लिखा है कि मैं आगे होने वाले धर्माचार्यों से डरता हूं जो मेरी जमात को गुमराह कर देंगे और आपस में कयामत तक लड़ते रहेंगे।

तो भए तेहत्तर फिरके महंमद के, तामें एक नाजी कह्या नेक।
और बहत्तर कहे दोजखी, ए बेवरा कह्या विवेक।। ३६ ।।

इस तरह से मेरे दीन में तिहत्तर फिरके हो जाएंगे। उनमें मर्द मोमिनों का एक नाजी फिरका होगा। बाकी बहत्तर दोजखी होंगे। ऐसी हकीकत लिखी है।

करी हकें हिदायत नाजी को, ए लिख्या मांहें फुरमान।
इन बीच फिरके सब आवसी, एक दीन होसी सब जहान।। ३७ ।।

कुरान में लिखा है कि पारब्रह्म की हिदायत नाजी फिरके को होगी। बाकी सभी फिरके इसी में आकर मिलेंगे। तब सारी दुनियां में एक दीन हो जाएगा।

सरीयत खूबी नासूत में, याको ए पांचों पाक करत।
ए जाहेर पांच बिने से, ऊंचे चढ़ न सकत।। ३८ ।।

शरीयत के यह पांच नियम जो ऊपर बतलाए हैं, यह संसार में शरीर की शुद्धि के लिए हैं। इन पांचों की जाहिरी बन्दगी से ऊंचे नहीं चढ़ सकेंगे।

Nijanand App

छोड़ सरा ले तरीकत, पीठ देवे नासूत।
फैल करे तरीकत के, सो पोहोंचे मलकूत।। ३९ ।।

शरीयत को छोड़कर जो तरीकत का रास्ता लेंगे वह मृत्युलोक की चाल छोड़ेंगे। वह तरीकत (उपासना) की बन्दगी से बैकुण्ठ (मलकूत) तक जाएंगे।

कलमा निमाज दोऊ दिल से, और दिलसों रोजे रमजान।
दे जगात हिस्सा उन्तालीसमा, हज करे रसूल मकान।। ४० ।।

तीसरी तरह के लोग वह हैं जो कलमा, नमाज और रोजा तथा जकात (चालीसवें हिस्से) के नियम दिल से करते हैं। वही मुहम्मद के मकान अक्षरधाम जाएंगे।

कह्या दिल दुनी का मजाजी, जो पैदा हुआ केहेते कुंन।
सो छोड़ ना सके मलकूत को, आड़ी जुलमत हवा ला सुंन।। ४१ ।।

दुनियां का दिल झूठा कहा है जो 'कुंन' शब्द कहने से पैदा हुई है, इसलिए यह मलकूत (बैकुण्ठ) को छोड़कर आगे नहीं जा सकते, क्योंकि आगे निराकार का परदा लगा है।

दुनियां दिल कह्या मजाजी, सो टुकड़ा गोस्त का।
अबलीस कह्या दुनी नसलें, सोई दिलों इनों पातसाह।। ४२ ।।

दुनियां के दिल को गोश्त के टुकड़े के समान झूठा कहा है। दुनियां के लोगों को अबलीस (नारद) का वंशज लिखा है। वही अबलीस दुनियां के दिलों में बादशाह बना बैठा है।

आदम औलाद दिल अबलीस, बैठा पातसाह दुस्मन होए।
कह्या हवा खुदाए इन का, उलंघ जाए क्यों सोए।। ४३ ।।

आदम की औलाद जीवसृष्टि के दिलों पर दुश्मन अबलीस बादशाह बनकर बैठा है। इनका खुदा निराकार (हवा) है, जिसे उलंघ कर यह आगे नहीं जा सकते।

जबराईल महंमद हिमायतें, तो भी छोड़ न सक्या असल।
तो दुनियां जो तिलसम की, सो क्यों सके आगे चल।। ४४ ।।

जबराईल मुहम्मद साहब की हिम्मत से भी अक्षरधाम नहीं छोड़ सका, तो यह दुनियां, जो झूठ से पैदा हुई है, वह आगे कैसे चल सकती है?

जेती दुनी भई कुंन से, हवा तिनसे ना छूटत।
सो क्यों छोड़े ठौर अपनी, कही असल जिनों जुलमत।। ४५ ।।

जितनी भी दुनियां जीवसृष्टि 'कुंन' शब्द कहने से पैदा हुई है उनसे निराकार नहीं छूटता। जिनकी उत्पत्ति ही निराकार से कही गई है वह अपने ठिकानों को कैसे छोड़ सकते हैं?

जो उतरे मलायक लैल में, ताको असल नूर मकान।
सो राह हकीकत लिए बिना, उत पोहोंचे नहीं निदान।। ४६ ।।

ईश्वरीसृष्टि खेल देखने के वास्ते रात्रि में उतरी हैं। इन का मूल अक्षरधाम है। यह हकीकत का रास्ता लिए बिना अक्षरधाम नहीं पहुंच सकते।

कलमा निमाज रोजा हकीकी, करे दिलसों रूह पेहेचान।
हुआ बंदा बूझ जगात में, दिल दीदार नूर सुभान।। ४७ ।।

यह कलमा, नमाज, रोजा सच्चे दिल से करते हैं और समझकर अपनी कुर्बानी देते हैं (जकात देना)। तब इन्हें उनके सुभान अक्षर के दर्शन होते है।

Nijanand App

मलकूत हवा जुलमत, उलंघ जाना तिन पर।
बिना हादी हिदायत, सो बका पावे क्यों कर।। ४८ ।।

यह बैकुण्ठ और निराकार को पार कर जाएंगी। बिना श्री प्राणनाथजी की वाणी के यह अपने अखण्ड घर (अक्षरधाम) कैसे जा सकेंगे?

जिनों हक हकीकत देवहीं, सो छोड़े हवा मलकूत।
दिल साफ जिकर रूहानी, ले पोहोंचावे जबरूत।। ४९ ।।

जिनको पारब्रह्म हकीकत का ज्ञान देते हैं, वही बैकुण्ठ और निराकार के पार जाते हैं। इनके दिल पाक होते हैं और सदा धर्म चर्चा में लगे रहते हैं। तभी अक्षरधाम तक जाते हैं।

जो फरिस्ता जबरूत का, सो रेहे ना सके मलकूत।
मलकूत बीच फना के, नूर मकान बका जबरूत।। ५० ।।

जबराईल फरिश्ता बैकुण्ठ तक नहीं रह सकता, क्योंकि मलकूत (बैकुण्ठ) मिट जाने वाला है। यह फरिश्ता अखण्ड अक्षरधाम का है।

बड़ा फरिस्ता नजीकी, जाको रूहल अमीन नाम।
जुलमत हवा तो उलंघी, जबरूत इन मुकाम।। ५१ ।।

अक्षर ब्रह्म का सबसे नजदीकी फरिश्ता जबराईल है जिसको रूहल अमीन कहा गया। इसका ठिकाना अक्षरधाम होने से यह निराकार को पार कर सका।

पाई बड़ाई पैगंमरों, हाथ जबराईल सबन।
सो जबराईल न पोहोंचिया, मकान महंमद मोमिन।। ५२ ।।

जितने भी पैगम्बर हुए हैं उन सबको महानता जबराईल फरिश्ते से मिली। वही जबराईल फरिश्ता परमधाम में जहां श्यामा महारानी और रूहें (ब्रह्मसृष्टियां) रहती हैं, नहीं पहुंच सका।

सो जबराईल जबरूत से, लाहूत न पोहोंच्या क्यों ए कर।
हिमायत लई महंमद की, तो भी कहे जलें मेरे पर।। ५३ ।।

जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम से परमधाम किसी तरह नहीं जा सकता। रसूल साहब ने उसकी हिम्मत भी बढ़ाई, फिर भी वह बोला कि मेरे पर जलते हैं।

तन मोमिन असल अर्स में, जो अर्स अजीम बका हक।
जित पोहोंच्या नहीं जबराईल, तित क्या कहूं औरों खलक।। ५४ ।।

मोमिनों के असल तन परमधाम मूल-मिलावे में हैं जो अखण्ड हैं। जहां जबराईल नहीं पहुंच सका तो दूसरे संसार वाले कैसे पहुंच सकते हैं?

हक हादी रूहें लाहूत में, ए महंमद रूहों वतन।
इस्क हकीकत मारफत, तो हक अर्स दिल मोमिन।। ५५ ।।

श्री राजजी, श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टियां परमधाम में रहती हैं। यह श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियों का वतन है। इनके पास हकीकत मारफत का ज्ञान और इश्क है, इसलिए श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिनों का दिल कहा है।

Nijanand App

मारफत हक हकीकत, अर्स रूहों को दई हक।
जो इलम दिया हकें अपना, तामें जरा न सक।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज ने हकीकत और मारफत का ज्ञान परमधाम की रूहों को दिया है। जो ज्ञान खुद पारब्रह्म ने दिया है उसमें जरा भी संशय नहीं हो सकता।

कही रूहें नूर बिलंद से, मांहें उतरी लैलत कदर।
कौल किया हकें इनों सों, मासूक आया इनों खातिर।।५७ ।।

परमधाम से रूहें लैल तुल कदर की रात में उतरी हैं, ऐसा कुरान में कहा है। पारब्रह्म ने इन्हीं रूहों से उतरते समय वायदा किया था और श्यामा महारानी भी इन्हीं के वास्ते आई हैं।

ए राह इसलाम मोमिनों, चढ़ उतर देखाई रसूल।
आई तीन सूरतें इन वास्ते, जाने रूहें जावें जिन भूल।।५८ ।।

रसूल साहब ने मोमिनों के वास्ते ही अर्श का रास्ता चढ़-उतर के दिखाया। मुहम्मद की तीनों सूरतें (बसरी, मलकी और हकी) इन्हीं के वास्ते ही आई हैं ताकि रूहें खेल में भूल न जाएं।

इन वास्ते भेजी रूह अपनी, अर्स कुंजी हाथ दे।
दे खिताब इमाम को, अर्स पट खोले इन वास्ते।।५९ ।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम की कुंजी तारतम ज्ञान देकर श्यामा महारानी को मोमिनों के वास्ते भेजा और फिर इन्द्रावती के अन्दर बैठकर इमाम मेंहदी का खिताब देकर परमधाम के दरवाजे खोले (पहचान करवाई)।

असराफील जबराईल, भेज दिया आमर।
निगहबानी कीजियो, मेरे खासे बंदो पर।।६० ।।

असराफील जागृत बुद्धि का फरिश्ता, जबराईल जोश का फरिश्ता दोनों को श्री राजजी महाराज ने अपना यह हुकम देकर भेजा कि खेल में उतरे मेरे खास बंदों (ब्रह्मसृष्टि) पर निगहबानी करना (अंगरक्षक बनकर रहना)।

इलम लदुन्नी भेजिया, सब करने बका पेहेचान।
आप काजी हुए इन वास्ते, करी खिलवत जाहेर सुभान।।६१ ।।

अखण्ड घर परमधाम की पहचान कराने के वास्ते तारतम वाणी भेजी और आप श्री राजजी महाराज स्वयं न्यायाधीश बनकर आए और मूल-मिलावे की हकीकत को जाहिर किया।

हक कहे मुख अपने, मैं रूहें राखी कबाए तले।
कोई और न बूझे इनको, मेरी वाहेदत के हैं ए।।६२ ।।

श्री राजजी महाराज अपने मुख से कहते हैं कि मैंने अपनी रूहों को अपने चरणों तले बिठा रखा है। इन्हें और कोई नहीं देख सकता है, न समझ ही सकता है। यह मेरे तन हैं।

मेरी कदीम दोस्ती इनों से, दोस्ती पीछे इन।
ए इलम लुदन्नी से माएने, करे हादी बीच रूहन।।६३ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि मोमिनों से मेरी अनादि से दोस्ती है। दोस्ती के कारण ही श्यामा महारानी तारतम वाणी से रूहों को जाकर समझाएंगी।

Nijanand App

अर्स दिल इनका कह्या, और कह्या हकीकी दिल।
एती बड़ाई इनको दई, जो वाहेदत इनों असल।। ६४ ।।

इन मोमिनों के दिल को ही हकीकी दिल और श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है। इतनी महानता इनको इसलिए दी गई है कि इनके मूल तन परमधाम में हैं।

ए अर्स बड़ा रूहों का, जो कह्या तजल्ला नूर।
जबराईल इत न आइया, जित महंमद किया मजकूर।। ६५ ।।

यह परमधाम रूहों का बड़ा घर है जिसे नूर तजल्ला कहा है। यहां जबराईल नहीं आ सका। जहां मुहम्मद साहब ने पहुंचकर श्री राजजी महाराज से बातें कीं।

हरफ केतेक कराए जाहेर, केतेक हुकमें रखे छिपाए।
सो वास्ते रूहों दाखले, अब हादी देत मिलाए।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज ने रूबरू की गई बातों के तीस हजार शरीयत के शब्द जाहिर कराए और हकीकत के तीस हजार छिपाकर रखवाये। अब श्री प्राणनाथजी छिपी बातों के रहस्य की गवाहियां देकर समझा रहे हैं।

कही पांच बिने मुस्लिम की, सोई पांच बिने मोमिन।
वे करें बीच फना के, ए पांच बका बातन।। ६७ ।।

जाहिरी मुसलमानों के जो पांच नियम बताए हैं वही पांच नियम ब्रह्मसृष्टि के वास्ते हैं। वह नियमों का पालन दुनियां के वास्ते करते हैं और सुन्दरसाथ परमधाम के वास्ते करते हैं।

अर्स रूहें बंदे हमेसगी, इनों बिने सब इस्क।
हकीकत मारफत मुतलक, इन उरफान मेहेर हक।। ६८ ।।

अर्स में रूहें हमेशा श्री राजजी की सेवा में रहती हैं। इनका नियम बन्दगी सब इश्क से है। हकीकत तथा मारफत का (सच्चा ब्रह्मज्ञान) भी इन्हीं के पास है और मेहर भी इनके ही ऊपर है।

चौदे तबक की जहान में, किन तरफ न पाई अर्स हक।
सो किया अर्स दिल मोमिनों, ए निसबत मेहेर मुतलक।। ६९ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में किसी को भी श्री राजजी महाराज और परमधाम की पहचान नहीं हुई। इसीलिए मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श बनाया। यह मेहर बिल्कुल उनकी निसबत के कारण हुई है।

हक नूर रूह महंमद, रूहें महंमद अंग नूर।
ए हमेसा वाहेदत में, तो सब मुख ए मजकूर।। ७० ।।

श्री श्यामाजी हक के नूर से हैं और रूहें (ब्रह्मसृष्टि) श्यामाजी महारानी के नूर से हैं। यह हमेशा एक दिल हैं। संसार के सभी धर्म-ग्रन्थों में इसका जिक्र है।

मोमिन आए इत थें ख्वाब में, अर्स में इनों असल।
हुकम करे जैसा हजूर, तैसा होत मांहें नकल।। ७१ ।।

मोमिनों के असल तन परमधाम में है और वहां से खेल देखने सपने में आए हैं। परमधाम में श्री राजजी महाराज जैसा हुकम करते हैं वैसे ही इस संसार में मोमिनों के नकली तनों से होता है।

Nijanand App

जो मोमिन बिने पांच अर्स में, सो होत बंदगी बातन।
जिन बिध होत हजूर, सो करत अर्स दिल मोमिन।।७२ ।।

मोमिनों के पांच नियम बातूनी हैं। यह परमधाम के वास्ते होते हैं। परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने जैसे आदेश होता है वैसा ही इस संसार में मोमिनों का तन करता है।

दिल अर्स हकीकी तो कह्या, जो हक कदम तले तन।
रसूल उमती उमती तो कहे, जो हक खिलवत बीच रूहन।।७३ ।।

मोमिनों का दिल हकीकी इसलिए कहा है कि इनके मूल तन परमधाम में श्री राजजी महाराज के चरणों के तले बैठे हैं। रसूल साहब भी इन्हें बार-बार खुदा की उम्मत इसलिए कहते हैं कि मोमिन परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले मूल-मिलावे में बैठे हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, हकें मेहेर करी तुम पर।
भुलाए तुमें हांसीय को, वास्ते इस्क खातिर।।७४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे ऊपर कृपा की है और इश्क की लज्जत देने के वास्ते तुम्हें खुद भुला रखा है ताकि तुम पर हांसी कर सकें।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ३३८ ।।

भिस्त सिफायत का बेवरा

मोमिन आए अर्स अजीम से, हमारी हक सों निसबत।
दिया इलम लदुन्नी हकने, आई हक बका न्यामत।। १ ।।

मोमिन परमधाम से आए हैं, इसलिए हम मोमिनों की निसबत (सम्बन्ध) श्री राजजी महाराज से है। श्री राजजी महाराज ने अखण्ड घर परमधाम की न्यामत (जागृत बुद्धि की तारतम वाणी) इनको दी है।

हक इलम एही पेहेचान, कछू छिपा रहेना ताए।
अर्स बका रूहें फरिस्ते, सब हद्दां देवें बताए।। २ ।।

जागृत बुद्धि तारतम वाणी की यही पहचान है कि इससे कोई बात उनसे छिपी नहीं रह सकती। यह वाणी अखण्ड घर (परमधाम), रूहें, ईश्वरी सृष्टि, सबकी करनी और रहनी तथा ठिकानों की पहचान कराती है।

कहूं नेक दुनी का बेवरा, जो हकें दई पेहेचान।
रूह अल्ला महंमद मेहेर थें, कहूं ले माएने फुरमान।। ३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने मुझे जो पहचान दी है उससे मैं थोड़ा दुनियां की हकीकत का बयान करती हूं। मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी महारानी के तारतम ज्ञान की ही कृपा से कुरान के छिपे भेदों को जाहिर कर रही हूं।

ए जो हुई पैदा कुंन से, सबों सिर फरज सरीयत।
पोहोंचे मलकूत हवा लग, जो लेवे राह तरीकत।। ४ ।।

यह सृष्टि जो 'कुंन' शब्द कहने से पैदा हुई है उन पर शरीयत के नियम लागू किए गए हैं। उन जीवों में से जो तरीकत अर्थात् उपासना की भक्ति करते हैं, वह बैकुण्ठ या निराकार तक जाते हैं।

Nijanand App

जो मोमिन बिने पांच अर्स में, सो होत बंदगी बातन।
जिन बिध होत हजूर, सो करत अर्स दिल मोमिन।।७२ ।।

मोमिनों के पांच नियम बातूनी हैं। यह परमधाम के वास्ते होते हैं। परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने जैसे आदेश होता है वैसा ही इस संसार में मोमिनों का तन करता है।

दिल अर्स हकीकी तो कह्या, जो हक कदम तले तन।
रसूल उमती उमती तो कहे, जो हक खिलवत बीच रूहन।।७३ ।।

मोमिनों का दिल हकीकी इसलिए कहा है कि इनके मूल तन परमधाम में श्री राजजी महाराज के चरणों के तले बैठे हैं। रसूल साहब भी इन्हें बार-बार खुदा की उम्मत इसलिए कहते हैं कि मोमिन परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले मूल-मिलावे में बैठे हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, हकें मेहेर करी तुम पर।
भुलाए तुमें हांसीय को, वास्ते इस्क खातिर।।७४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे ऊपर कृपा की है और इश्क की लज्जत देने के वास्ते तुम्हें खुद भुला रखा है ताकि तुम पर हांसी कर सकें।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ३३८ ।।

भिस्त सिफायत का बेवरा

मोमिन आए अर्स अजीम से, हमारी हक सों निसबत।
दिया इलम लदुन्नी हकने, आई हक बका न्यामत।। १ ।।

मोमिन परमधाम से आए हैं, इसलिए हम मोमिनों की निसबत (सम्बन्ध) श्री राजजी महाराज से है। श्री राजजी महाराज ने अखण्ड घर परमधाम की न्यामत (जागृत बुद्धि की तारतम वाणी) इनको दी है।

हक इलम एही पेहेचान, कछू छिपा रहेना ताए।
अर्स बका रूहें फरिस्ते, सब हद्दां देवें बताए।। २ ।।

जागृत बुद्धि तारतम वाणी की यही पहचान है कि इससे कोई बात उनसे छिपी नहीं रह सकती। यह वाणी अखण्ड घर (परमधाम), रूहें, ईश्वरी सृष्टि, सबकी करनी और रहनी तथा ठिकानों की पहचान कराती है।

कहूं नेक दुनी का बेवरा, जो हकें दई पेहेचान।
रूह अल्ला महंमद मेहेर थें, कहूं ले माएने फुरमान।। ३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने मुझे जो पहचान दी है उससे मैं थोड़ा दुनियां की हकीकत का बयान करती हूं। मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी महारानी के तारतम ज्ञान की ही कृपा से कुरान के छिपे भेदों को जाहिर कर रही हूं।

ए जो हुई पैदा कुंन से, सबों सिर फरज सरीयत।
पोहोंचे मलकूत हवा लग, जो लेवे राह तरीकत।। ४ ।।

यह सृष्टि जो 'कुंन' शब्द कहने से पैदा हुई है उन पर शरीयत के नियम लागू किए गए हैं। उन जीवों में से जो तरीकत अर्थात् उपासना की भक्ति करते हैं, वह बैकुण्ठ या निराकार तक जाते हैं।

Nijanand App

जो लग्या वजूद को, ताए छूटे न जिमी नासूत।
पुलसरात को छोड़ के, क्यों पोहोंचे मलकूत।।५।।

जो अपने शरीर की ही सेवा में लगा रहता है उससे मृत्युलोक नहीं छूटता। जीवसृष्टि जो कर्मकाण्ड तलवार जैसी धार का रास्ता है, उस पर चल नहीं सकेगी और वह बैकुण्ठ कैसे जा सकतीं?

ए आम खलक जो आदमी, या देव या जिन।
सो राह चलें ले वजूद को, पावें नहीं बातन।।६।।

इस संसार के जितने आदमी हैं चाहे देवलोक के देव या भुवर्लोक के जिन्न या भूत वह सब वजूद से जाहिरी बन्दगी करते हैं और बातूनी रहस्यों को नहीं समझते।

जो होवे नूर मकान का, कायम जिनों वतन।
सो क्यों पकड़े वजूद को, पोहोंचे न हकीकत बिन।।७।।

जो अक्षर-धाम का होगा, अर्थात् ईश्वरीसृष्टि जिनका धाम अखण्ड है, वह वजूद की बन्दगी नहीं करेंगे। वह यथार्थ (हकीकत) का ज्ञान लिए बिना अपने घर नहीं लौट सकते।

जो होवे अर्स अजीम की, सो ले हकीकत मारफत।
इनको इस्क मुतलक, जिन रूह हक निसबत।।८।।

जो अर्श अजीम (परमधाम) के हैं वह हकीकत और मारफत के वचनों से पहचान करेंगी और जिनका श्री राजजी महाराज से सम्बन्ध है वह बिलकुल प्रेम के ही स्वरूप हैं।

रूहें फरिस्ते दो गिरो, तिन दोऊ के दो मकान।
एक इस्क दूजी बंदगी, राह लेसी अपनी पेहेचान।।९।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दो जमातें हैं। इनके दो ठिकाने परमधाम और अक्षरधाम हैं। रूह इश्क लेकर परमधाम जाएगी और ईश्वरीसृष्टि बन्दगी से अक्षरधाम जाएगी। दोनों ही अपने-अपने रास्ते को पहचान कर चलेंगी।

उतरी रूहें फरिस्ते लैल में, अपने रब के इजन।
दे हुकमें सबों सलामती, आप पोहोंचे फजर वतन।।१०।।

रूहें और ईश्वरीसृष्टि खुदा के हुकम से लैल में उतरी हैं। यह श्री राजजी महाराज के हुकम से सबों को अखण्ड करके मारफत के ज्ञान से पहचान कर अपने घर जाएंगी।

भिस्त हाल चार कुरान में, कह्या आठ होसी आखिर।
ए भी सुनो तुम बेवरा, देखो मोमिनों सहूर कर।।११।।

चार बहिश्तें कायम हो गई हैं और आखिर तक चार और होकर, आठ हो जाएंगी। हे मोमिनो! इसकी हकीकत भी विचार कर देखो और सुनो।

तिन भिस्त हाल चार का बेवरा, एक मलकूती भिस्त।
दो भिस्त अव्वल लैल में, चौथी महंमद आए जित।।१२।।

जो चार बहिश्तें कायम हो गई हैं उनमें एक देवी-देवताओं की बहिश्त है जो अव्याकृत में ऊपर से छठे नम्बर की है। रास और बृज की दो बहिश्तें जो लैल की रात्रि के पहली दो लीलाओं की है, वह सबलिक ब्रह्म में चार और पांच नम्बर पर हैं। चौथी बहिश्त मुहम्मदी ऊपर से तीन नम्बर पर सबलिक ब्रह्म में है (यह तीन बहिश्तें सबलिक में हैं ३-४-५)

Nijanand App

आखिर भिस्तों का बेवरा, जो नैयां होसी चार।
जो होसी बखत कयामत के, तिनका कहूं निरवार।। १३ ।।

आखिर के समय में जो चार बहिश्तें कायम होंगी उनकी भी हकीकत बताती हूं।

भिस्त अव्वल रूहों अक्स, ए जो होसी भिस्त नई।
भिस्त होसी दूजी फरिस्तों, जो गिरो जबरूत से कही।। १४ ।।

सबसे ऊपर सत् स्वरूप ब्रह्म में ब्रह्मसृष्टि के जीवों को अखण्ड किया जाएगा जो पहली नम्बर एक की बहिश्त होगी। नम्बर दो पर जो नई बहिश्त बनेगी वह ईश्वरीसृष्टि की होगी जो जमात अक्षरधाम से आई है।

पैगंमरों भिस्त तीसरी, जिनों दिए हक पैगाम।
चौथी भिस्त जो होएसी, पावे खलक जो आम।। १५ ।।

पैगम्बरों की बहिश्त जिन्होंने पारब्रह्म का पैगाम दिया है वह उनकी तीसरी बहिश्त अव्याकृत में नम्बर सात पर होगी। चौथी बहिश्त सारी दुनियां के जीवों की, आठवीं बहिश्त अव्याकृत में आम खलक की बहिश्त होगी।

नोट—इस तरह से नम्बर एक, दो, सात और आठ, अर्थात् चार नई बहिश्तें आखिर समय कायम होनी हैं।

जिन किन राह हक की, लई सांच से सरीयत।
भिस्त होसी तिनों तीसरी, सच्चे ना जलें कयामत।। १६ ।।

जो हक की राह पर चलकर सच्चे दिल से कर्मकाण्ड पर चले उनको तीसरी बहिश्त जो नई कायम होनी है और नम्बर उसका सातवां अव्याकृत होगा। ऐसे लोगों को न्याय के समय में दोजख की अग्नि में नहीं जलना पड़ेगा।

जो सरीयत पकड़ के, चल्या नहीं सांच ले।
सो आखिर दोजख जल के, भिस्त चौथी पावे ए।। १७ ।।

जो सच्चा ज्ञान न लेकर शरीयत को ही पकड़े रहे उन्हें आखिर के समय दोजख की अग्नि में जलकर चौथी जिसका नम्बर आठ होगा अव्याकृत में आम खलक की बहिश्त मिलेगी।

रूहों अक्स कहे नई भिस्त में, ताए असल रूहों के तन।
सो अरवा अर्स अजीम में, उठें अपने बका वतन।। १८ ।।

रूहों के अक्स (जीव) नम्बर एक सत् स्वरूप ब्रह्म में अखण्ड होंगे। यह वही रूहें हैं जो परमधाम में रहने वाली हैं और कयामत के समय अपने घर परमधाम में अपने तनों में खड़ी हो जाएंगी।

जोलों अपनी राह पावें नहीं, तोलों पोहोंचे ना अपने मकान।
हादी हद्दों हिदायत करके, आखिर पोहोंचावें निदान।। १९ ।।

जब तक संसार के जीव अपना-अपना रास्ता तारतम वाणी से नहीं पा लेंगे तब तक अपने ठिकाने पर नहीं पहुंच सकेंगे। हादी श्री प्राणनाथजी महाराज सबको सबके ठिकाने बताकर उनके ठिकाने पहुंचा देंगे।

Nijanand App

अब कहूं सिफायत की, जो आखिर महंमद की चाहे।
नेक सुनो सो बेवरा, देऊं रूहों को बताए।। २० ।।

अब आखिरी वक्त में मुहम्मद साहब किसकी सिफारिश करेंगे उसकी हकीकत भी रूहों को बता देती हूं। उसका भी थोड़ा सा विवरण सुनो।

जित पोहोंची सिफायत महंमद की, सो तबहीं दुनी को पीठ दे।
सो पोहोंच्या महंमद सूरत को, आखिर तीसरी हकी जे।। २१ ।।

मुहम्मद साहब जिसकी सिफारिश कर देंगे वह तुरन्त ही दुनियां को पीठ देकर मुहम्मद की तीसरी हकी सूरत श्री प्राणनाथजी की शरण में पहुंच जाएगा।

जिन छोड़ दुनी को ना लई, हकीकत मारफत।
सो अर्स बका में न आइया, लई ना महंमद सिफायत।। २२ ।।

जिन्होंने हकीकत, मारफत को नहीं पहचाना और दुनियां को नहीं छोड़ा उनकी सिफारिश मुहम्मद नहीं करेंगे और वह अखण्ड घर परमधाम में भी नहीं आ सकते।

जो दुनी को लग रहे, ताए अर्स बका सुध नाहें।
महंमद सिफायत लई मोमिनों, जाकी रूह बका अर्स माहें।। २३ ।।

जो दुनियां के सुखों में लगे रहे उन्हें अखण्ड घर परमधाम की सुध नहीं है। मुहम्मद साहब की सिफत मोमिनों ने ही ली जिनकी परआतम परमधाम में है।

अर्स ल्यो या दुनियां, दोऊ पाइए ना एक ठौर।
हक खोया झूठ बदले, सुन्या न महंमद सोर।। २४ ।।

परमधाम का सुख लो या दुनियां का सुख लो। दोनों सुख एक ठिकाने नहीं मिलते। झूठ के बदले जिन्होंने अखण्ड सुख को छोड़ दिया उन्होंने आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की वाणी को नहीं सुना।

दुनी अपनी दानाई से, लेने चाहे दोए।
फरेब देने चाहे हक को, सो गए प्यारी उमर खोए।। २५ ।।

दुनियां के जीव अपनी चतुराई से दोनों सुख लेना चाहते हैं और पारब्रह्म श्री राजजी महाराज को धोखा देना चाहते हैं, इसलिए अपनी प्यारी उम्र को यू ही गंवा देते हैं।

सो मोमिन क्यों कर कहिए, जिन लई ना हकीकत।
छोड़ दुनी को ले ना सक्या, हक बका मारफत।। २६ ।।

जिन्होंने सच्ची हकीकत को नहीं लिया उनको मोमिन कैसे कहा जाए? जो संसार के माया-मोह को नहीं छोड़ सके, इसलिए उन्हें अखण्ड परमधाम के सच्चे सुख नहीं मिले।

चौदे तबक नबी के नूर से, सो सब कहें हम मोमिन।
सो मोमिन जाको सक नहीं, हक बका अर्स रोसन।। २७ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड अक्षर के नूर (मुहम्मद के नूर) से बना है, इसीलिए सब मुसलमान कहते हैं कि हम मोमिन हैं। मोमिन वही हैं जिसको किसी प्रकार का संशय नहीं रहता। उसे श्री राजजी महाराज और अखण्ड घर (परमधाम) का ज्ञान प्राप्त होता है।

Nijanand App

सब खोजें फिरके ले किताबें, कहें खड़े हम तले कदम।
ले हकीकत पोहोंचे अर्स में, जिन सिर लिया महंमद हुकम।। २८ ।।

सभी धर्म सम्प्रदाय वाले अपने-अपने धर्म-ग्रन्थ लेकर खोज करते हैं और कहते हैं कि हम ही पारब्रह्म के चरणों के तले खड़े हैं, परन्तु जिन्होंने श्री प्राणनाथजी के हुकम को सिर पर धारण किया वह सच्चे ज्ञान (जागृत बुद्धि के ज्ञान) को लेकर सीधे परमधाम पहुंचे।

पोहोंची सिफायत जिनको, तिन छोड़ी दुनियां मुतलक।
कदम पर कदम धरे, पोहोंच्या बका अर्स हक।। २९ ।।

जिनकी रसूल साहब ने सिफारिश कर दी उन्होंने बिल्कुल ही दुनियां को छोड़ दिया और श्री प्राणनाथजी के बताए रास्ते पर चलकर अखण्ड घर परमधाम पहुंचे।

हकीकत मारफत की, हक बातें बारीक।
जित नहीं सिफायत महंमद की, सो लरे लीक ले लीक।। ३० ।।

हकीकत और मारफत के ज्ञान की बातें बारीक हैं। जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की सिफारिश नहीं ली वह रूढ़िवादी रास्ते पर ही लड़ झगड़ कर चलते रहे।

तरक करे सब दुनी को, कछू रखे न हक बिन।
वजूद को भी मह करे, ए महंमद सिफायत मोमिन।। ३१ ।।

जो दुनियां को बिल्कुल छोड़ दें और पारब्रह्म के बिना उनके जीवन में और कुछ न हो और तन को भी कुर्बान करें उन्हें ही श्री प्राणनाथजी की सिफायत मिलेगी और वही अर्श मोमिन कहलाएंगे।

कहे महंमद खबर जो मुझको, सो खबर मेरे भाई।
धरें आवें कदमों कदम, जिनकी पेसानी में रोसनाई।। ३२ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि खुदा ने मुझे जो ज्ञान दिया उसकी खबर मेरे भाई मोमिनों को है। ऐसे मोमिन ही कदमों पर कदम रखकर श्री प्राणनाथजी की राह पर चलेंगे और उनके अन्दर अज्ञानता मिटकर तारतम वाणी का उजाला होगा।

महंमद एही सिफायत, अर्स बका हक रोसन।
जो अर्स अरवाहों को सक रहे, सो क्यों कहिए रूह मोमिन।। ३३ ।।

श्री प्राणनाथजी की खास पहचान ही यह है कि उन्होंने ही आकर परमधाम श्री राजजी महाराज और मोमिनों को दुनियां में जाहिर किया और यदि इस पर परमधाम के मोमिनों को शक रहता है तो उसे परमधाम की ब्रह्मसृष्टि नहीं कहना चाहिए।

जाए पूछो मोमिन को, जरे जरे बका की बात।
देखो अर्स अरवाहों में, ए महंमद की सिफात।। ३४ ।।

जो परमधाम के मोमिन हैं उनको परमधाम के कण-कण का ज्ञान है। यही श्री प्राणनाथजी की सिफायत है।

किन बिध रूहें लाहूती, क्यों जबरूती फरिस्ते।
जिन लई सिफायत महंमद की, सो बताए देवें सब ए।। ३५ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी महाराज के ज्ञान को लिया है वही सब बताएंगे कि अर्श के मोमिन कौन हैं और ईश्वरीसृष्टि कौन है।

Nijanand App

इलम खुदाई लदुन्नी, सब अर्सों की सुध तिन।
एक जरे की सक नहीं, लई सिफायत हादी जिन।। ३६ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी महाराज की तारतम वाणी को समझा है उनको ही क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की पहचान है। उनको जरा भी संशय नहीं होगा।

अर्स रूहें सब बिध जानहीं, हौज जोए जिमी जानवर।
महंमद की सिफायत से, मोमिनों सब खबर।। ३७ ।।

परमधाम की रूहें परमधाम के हौज कौसर, पच्चीस पक्ष और जानवरों की शोभा, श्री प्राणनाथजी की वाणी के ज्ञान से, जर्रे-जर्रे की खबर मोमिनों को है।

जोए निकसी किन ठौर से, क्यों कर आगे चली।
अर्स आगे आई कितनी, जाए कर कहां मिली।। ३८ ।।

जमुनाजी कहां से निकली हैं, कैसे आगे चलती हैं और परमधाम के आगे कितनी बहती हैं और अन्त में जाकर कहां मिलती हैं, इस बात की खबर श्री प्राणनाथजी के ज्ञान से मोमिनों को है।

क्यों कर हकीकत हौज की, क्यों घाट पाल गिरदवाए।
किन विध टापू बीच में, ए सब सुध मोमिन देवें बताए।। ३९ ।।

हौज कौसर तालाब कैसा है, कैसे घाट हैं, चारों तरफ पाल कैसे बनी है, बीच में टापू महल कैसे हैं, यह सब हकीकत मोमिन बता देंगे।

जोए अर्स के किस तरफ है, किस तरफ हौज अर्स के।
नूर अर्स की गलियां, अरस अरवा जानें ए।। ४० ।।

जमुनाजी परमधाम के किस तरफ हैं, हौज कौसर तालाब किस तरफ है, अर्श की नूरी गलियां कैसी हैं, यह सब परमधाम के मोमिन जानते हैं।

बारीक गलियां अर्स की, मोमिन भूलें न इत।
अरवा अर्स की रात दिन, याही में खेलत।। ४१ ।।

परमधाम की बारीक गलियों को मोमिन कभी नहीं भूलते। यह रात-दिन इसी में खेलते हैं।

जाको सिफायत महंमद की, तिन का एही निसान।
जोए हौज अर्स जिमीय की, एक जरा न बिना पेहेचान।। ४२ ।।

जिनको श्री प्राणनाथजी के तारतम वाणी की पहचान हो गई है, उनकी यही पहचान है कि जमुनाजी, हौज कौसर तालाब, अर्श जमीन की कुल जानकारी उनके पास है।

नूर तजल्ला नूर की, जिमी बाग जानवर।
महंमद सिफायत जिनको, तिन से छिपी रहे क्यों कर।। ४३ ।।

श्री प्राणनाथजी की वाणी के ज्ञान से उन्हें परमधाम, अक्षरधाम की जमीन, बाग-बगीचे, जानवर सबकी जानकारी है और परमधाम की कोई बात छिपी नहीं है।

महंमद हक के नूर से, रूहें अंग महंमद नूर।
सो देखो अर्स अरवाहों में, पोहोंच्या महंमद का जहूर।। ४४ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर से श्री श्यामा महारानी हैं और श्यामा महारानी के नूर से बारह हजार ब्रह्मसृष्टियां हैं, इसीलिए परमधाम की रूहों को श्री प्राणनाथजी की वाणी की तुरन्त पहचान हो गई।

Nijanand App

हक हादी रूहन सों, इत खेलें माहें मोहोलन।
ए रहे हमेसा अर्स में, हौज जोए बागन।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियां इस महल में खेलती हैं। वह हमेशा परमधाम में रहती हैं जहां सुन्दर हौज कौसर, जमुनाजी और बगीचे हैं।

मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात।
तित रह्या तैसा ही बन्या, ए बका बागों की बात।। ४६ ।।

परमधाम में मेवा, फल, फूल, पेड़, पत्ते जो चाहिए वह तुरन्त ही ले लीजिए, परन्तु बागों की तरफ देखें तो वहां भी जैसे के तैसे लगे दिखाई देते हैं, अर्थात् वहां कोई चीज नष्ट नहीं होती।

एक बाल न खिरे पसुअन का, न गिरे पंखी का पर।
कोई मोहोल न कबूं पुराना, दिन दिन खूबतर।। ४७ ।।

जहां पशुओं का एक बाल नहीं गिरता, पक्षियों का एक पर नहीं गिरता, जहां के महल कभी पुराने नहीं होते, दिनों दिन और अच्छे ही दिखाई पड़ते हैं।

इत नया न पुराना, न कम ज्यादा होए।
इत वाहेदत में दूसरा, कबहूं न कहिए कोए।। ४८ ।।

यहां कोई चीज नई नहीं होती, पुरानी नहीं होती, न कम होती है न ज्यादा होती है। यहां सब एक दिली है, अर्थात् एक नूर से है, इसलिए दूसरा किसी को कह नहीं सकते।

महामत सिफायत जिन लई, सो इत हुए खबरदार।
हक बका अर्स सबका, तिन इतहीं पाया दीदार।। ४९ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान जिन्होंने लिया वह यहां ही सावचेत हो गए और श्री राजजी महाराज का अखण्ड परमधाम का दर्शन यहीं मिल गया।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ३८७ ॥

इलम का बेवरा नाजी फिरका

फुरमाया कहूं फुरमान का, और हदीसे महंमद।
मोमिन होसी सो चीन्हसी, असल अर्स सब्द।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, कुरान में और मुहम्मद साहब की हदीसों में जो कहा है उसका मैं बयान करती हूं। जो मोमिन होंगे, परमधाम के इन असली शब्दों को पहचानेंगे।

एक कह्या वेद कतेब ने, जो जुदा रह्या सबन।
तिनको सारों ढूंढिया, सो एक न पाया किन।। २ ।।

जिस पारब्रह्म को वेद और कतेबों ने एक कहा है वह सबसे अलग रहा। उस एक को सबों ने ढूंढ़िया पर उस एक पारब्रह्म को कोई पा नहीं सका।

एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर।। ३ ।।

सब धर्मग्रन्थ कहते हैं कि परमधाम एक है, किन्तु वह कहां है, किसी ने निश्चित ठिकाना नहीं बताया। सब कहते हैं कि हम ढूंढ़-ढूंढ़कर थक गए, पर हमें नहीं मिला।

Nijanand App

हक हादी रूहन सों, इत खेलें माहें मोहोलन।
ए रहे हमेसा अर्स में, हौज जोए बागन।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियां इस महल में खेलती हैं। वह हमेशा परमधाम में रहती हैं जहां सुन्दर हौज कौसर, जमुनाजी और बगीचे हैं।

मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात।
तित रह्या तैसा ही बन्या, ए बका बागों की बात।। ४६ ।।

परमधाम में मेवा, फल, फूल, पेड़, पत्ते जो चाहिए वह तुरन्त ही ले लीजिए, परन्तु बागों की तरफ देखें तो वहां भी जैसे के तैसे लगे दिखाई देते हैं, अर्थात् वहां कोई चीज नष्ट नहीं होती।

एक बाल न खिरे पसुअन का, न गिरे पंखी का पर।
कोई मोहोल न कबूं पुराना, दिन दिन खूबतर।। ४७ ।।

जहां पशुओं का एक बाल नहीं गिरता, पक्षियों का एक पर नहीं गिरता, जहां के महल कभी पुराने नहीं होते, दिनों दिन और अच्छे ही दिखाई पड़ते हैं।

इत नया न पुराना, न कम ज्यादा होए।
इत वाहेदत में दूसरा, कबहूं न कहिए कोए।। ४८ ।।

यहां कोई चीज नई नहीं होती, पुरानी नहीं होती, न कम होती है न ज्यादा होती है। यहां सब एक दिली है, अर्थात् एक नूर से है, इसलिए दूसरा किसी को कह नहीं सकते।

महामत सिफायत जिन लई, सो इत हुए खबरदार।
हक बका अर्स सबका, तिन इतहीं पाया दीदार।। ४९ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान जिन्होंने लिया वह यहां ही सावचेत हो गए और श्री राजजी महाराज का अखण्ड परमधाम का दर्शन यहीं मिल गया।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ३८७ ॥

इलम का बेवरा नाजी फिरका

फुरमाया कहूं फुरमान का, और हदीसे महंमद।
मोमिन होसी सो चीन्हसी, असल अर्स सब्द।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, कुरान में और मुहम्मद साहब की हदीसों में जो कहा है उसका मैं बयान करती हूं। जो मोमिन होंगे, परमधाम के इन असली शब्दों को पहचानेंगे।

एक कह्या वेद कतेब ने, जो जुदा रह्या सबन।
तिनको सारों ढूंढिया, सो एक न पाया किन।। २ ।।

जिस पारब्रह्म को वेद और कतेबों ने एक कहा है वह सबसे अलग रहा। उस एक को सबों ने ढूंढ़िया पर उस एक पारब्रह्म को कोई पा नहीं सका।

एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर।। ३ ।।

सब धर्मग्रन्थ कहते हैं कि परमधाम एक है, किन्तु वह कहां है, किसी ने निश्चित ठिकाना नहीं बताया। सब कहते हैं कि हम ढूंढ़-ढूंढ़कर थक गए, पर हमें नहीं मिला।

Nijanand App

सब किताबों में लिख्या, एक थें भए अनेक।
सो सुकन कोई न केहेवहीं, जो इस तरफ है एक।।४।।

सब धर्मग्रन्थों में लिखा है कि परमात्मा सबका एक है और वह एक परमात्मा ही सबको पैदा करने वाला है। यह सब बातें कोई नहीं बताता।

सो हक किनों न पाइया, जो कह्या एक हजरत।
ढूंढ़ ढूंढ़ फिरके फिरे, पर किनहूं न पाया कित।।५।।

हजरत मुहम्मद ने अल्लाह को एक कहा है। उस सच्चे एक को किसी ने नहीं पाया। उनके ही धर्म के फिरके ढूंढ़-ढूंढ़कर थक गए, पर उस एक को नहीं पाया कि वह कहां है?

ना कछू पाया एक को, ना उमत अर्स ठौर।
ना पाया हौज जोए को, जाए लगे बातों और।।६।।

इस एक के बारे में कुछ ज्ञान नहीं मिला और न ब्रह्मसृष्टि और परमधाम का पता चला। रंग महल, हौज कौसर, तालाब, जमुनाजी, आदि किसी की खबर नहीं लगी, इसलिए सभी लोग इधर-उधर कर्मकाण्ड की बातें चलाने लगे।

नब्बे बरस हजार पर, पढ़ते गुजरे दिन।
लिखी कयामत बीच कुरान के, सो तो न पाई किन।।७।।

रसूल साहब के एक हजार नब्बे बरस बीतने पर, अर्थात् सम्वत् १७३५ में कयामत के निशान जाहिर होंगे, ऐसा कुरान में लिखा है, परन्तु किसी ने इस इशारे को नहीं समझा।

आसमान जिमी की दुनियां, कथे इलम करे कसब।
किन एक न बका पाइया, दौड़ दौड़ थके सब।।८।।

आसमान के देवी-देवता और संसार के लोग ज्ञान के वास्ते बड़ी कठिन साधनाएं करते हैं, किन्तु सभी दौड़-दौड़कर थक गए। किसी को अखण्ड घर का पता नहीं चला।

यों गोते खाए बीच फना के, ला सुन्य ना उलंघी किन।
ढूंढ़ ढूंढ़ सबे थके, कोई पोहोंच्या न बका वतन।।९।।

इस तरह से सारे जगत के लोग इस मिट जाने वाले संसार में गोते लगा रहे हैं। निराकार के पार कोई नहीं जा सका। बहुत ढूंढ़ने पर भी अखण्ड घर (परमधाम) कोई नहीं पहुंच सके।

लदुन्नी से पाइए, जो है इलम खुदाए।
खोज खोज सबे हारे, आज लों इमदाए।।१०।।

तारतम वाणी (जो पारब्रह्म का ज्ञान है) से ही अखण्ड घर की जानकारी मिली है। इसके बिना आज तक सभी लोग सभी धर्मग्रन्थों को खोज-खोजकर थक गए हैं और उसे कोई नहीं पा सका।

लिख्या है कतेब में, सोई करूं मजकूर।
एक फिरका पावेगा, जिन को तौहीद जहूर।।११।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान में जो लिखा है उन सबके रहस्यों को मैं जाहिर कर रही हूं (श्री प्राणनाथजी जिक्र कर रहे हैं)। मोमिन जो नाजी फिरका है, उसे ही पारब्रह्म का ज्ञान होगा।

Nijanand App

लिख्या है फुरमान में, खुदा एक महंमद बरहक।
तिनको काफर जानियो, जो इनमें ल्यावे सक।। १२ ।।

कुरान में लिखा है कि सारे जगत का मालिक एक खुदा है और मुहम्मद साहब ने जो कहा है वह सत्य है। इस बात में जो संशय लाए उसे काफिर समझना।

एक खुदा हक महंमद, अर्स बका हौज जोए।
उतरी अरवाहें अर्स की, चीन्हो गिरो नाजी सोए।। १३ ।।

खुदा एक है, मुहम्मद सत्य है, परमधाम, हौज कौसर तालाब और जमुनाजी अखण्ड हैं, परमधाम से रूहें खेल में आई हैं और यही नाजी फिरका है, इसे पहचानो।

सब दुनियां का इलम, लिख्या कुरान में ए।
सो कोई इलम पोहोंचे नहीं, बनी असराईल मूसा के।। १४ ।।

सब दुनियां के धर्मग्रन्थों का सार कुरान में लिखा है। कुरान में यह भी लिखा है कि मूसा के बेटे असराईल (मूसा देवचन्द्रजी असराईल श्री प्राणनाथजी) के इलम के बराबर दुनियां का कोई इलम नहीं कर सकता।

कहे फुरमान इलम मूसे का, और बड़ा इलम खिजर।
इलम खुदाई बूंद के, न आवे बराबर।। १५ ।।

कुरान में ऐसा भी लिखा है कि मूसा का इलम और खिजर का इलम बड़ा है, परन्तु दोनों के इलम जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) के एक बूंद के बराबर नहीं हैं।

फिरके इकहत्तर मूसा के, हुए ईसा के बहत्तर।
एक को हिदायत हक की, यों कह्या पैगंमर।। १६ ।।

मूसा के इकहत्तर फिरके हुए। ईसा के बहत्तर हुए, परन्तु पैगम्बर ने एक पर ही हक की हिदायत होगी, बताया है, अर्थात् नाजी फिरका एक ही है।

महंमद के तेहत्तर हुए, तिनको हुआ हुकम।
जिन को हिदायत हक की, तामें आओ तुम।। १७ ।।

मुहम्मद के तेहत्तर फिरके हुए और उनको मुहम्मद साहब ने हुकम दिया। जिस एक नाजी फिरके को हक की हिदायत होगी, तुम सब उसी में शामिल हो जाना।

जिन दीन लिया खुदाए का, सो नाजी गिरो आखिर।
और होसी दोजखी, जो जुदे रहे बहत्तर।। १८ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की वाणी को समझकर अमल किया, वही आखिर में मोमिन की जमात है। बाकी बहत्तर फिरके दोजखी होंगे जो अलग रहेंगे।

दुनियां चौदे तबक में, सोई नाजी गिरो है एक।
आखिर जाहेर होएसी, पर पेहेले लेसी सोई नेक।। १९ ।।

चौदह लोकों की दुनियां में ब्रह्मसृष्टि की जमात एक ही है जो आखिर के वक्त में जाहिर हो जाएंगे। जो उन्हें पहले पहचान लेगा उसी की महिमा होगी।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, ल्यो हकीकत कुरान।
ढूंढ़ो फिरके नाजी को, जो है साहेब ईमान।। २० ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! कुरान की इस हकीकत को समझो और पारब्रह्म के ऊपर पक्का यकीन लाने वाले नाजी फिरके को ढूंढो।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ४०७ ।।

हक की सूरत

हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत।
हक सूरत अर्स माने नहीं, जो दई महंमद बका न्यामत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जाहिरी अर्थ लेने वाले मुसलमानों को देखो जिन्होंने सच्ची हकीकत को समझा नहीं। मुहम्मद साहब ने इनको जो न्यामत लाकर दी कि खुदा की सूरत है, मैं मिलकर आया हूं, उसे वह मानते नहीं हैं।

आसमान जिमी की दुनियां, करी सबों ने दौर।
तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अर्स बका ठौर।। २ ।।

आसमान के देवी-देवता और दुनियां के लोगों ने पारब्रह्म को खोजने के बड़े प्रयत्न किए, परन्तु वह पारब्रह्म के स्वरूप और अखण्ड परमधाम के ठिकाने को नहीं जान सके।

खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक।
खोज खोज सुन्य में गए, कोई आगूं न हुए बेसक।। ३ ।।

दुनियां वालों ने बहुत खोज की, परन्तु पारब्रह्म के स्वरूप को नहीं पाया। खोजते-खोजते निराकार में ही समा गए और संशय छोड़कर आगे नहीं जा सके।

दौड़ थके सब सुन्य लो, किन ला हवा को न पायो पार।
तब खुदा याही को जानिया, कहे निरंजन निराकार।। ४ ।।

सभी दौड़कर निराकार तक थक गए। निराकार के पार कोई नहीं जा सका। निराकार और निरंजन को ही पारब्रह्म समझ लिया।

पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत।
बोहोत करी रद-बदलें, वास्ते सब उमत।। ५ ।।

इन सबके बाद रसूल साहब आए और उन्होंने कहा कि मैं पारब्रह्म से मिलकर आया हूं। मैंने पारब्रह्म से, अपनी उम्मत के वास्ते बहुत वार्तालाप किया है।

अर्स बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर।
और देखी अरवाहें अर्स की, कहे मैं हक का पैगंमर।। ६ ।।

अखण्ड परमधाम, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी, पानी, बगीचे, जमीन, जानवर और परमधाम की रूहों को मैंने देखा, अतः पारब्रह्म का पत्रवाहक (रसूल) बनकर आया हूं।

बोहोत देखी बका न्यामतें, करी हक सों बड़ी मजकूर।
ख्वाब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर।। ७ ।।

मैंने अखण्ड परमधाम में बहुत सी न्यामतें देखी हैं और पारब्रह्म से बड़ी बातें की हैं। उसी के अनुसार इस सपने की झूठी दुनियां में अखण्ड परमधाम का (श्री राजजी महाराज का) प्रकाश मैंने फैलाया।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, ल्यो हकीकत कुरान।
ढूंढ़ो फिरके नाजी को, जो है साहेब ईमान।। २० ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! कुरान की इस हकीकत को समझो और पारब्रह्म के ऊपर पक्का यकीन लाने वाले नाजी फिरके को ढूंढो।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४०७ ॥

हक की सूरत

हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत।
हक सूरत अर्स माने नहीं, जो दई महंमद बका न्यामत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जाहिरी अर्थ लेने वाले मुसलमानों को देखो जिन्होंने सच्ची हकीकत को समझा नहीं। मुहम्मद साहब ने इनको जो न्यामत लाकर दी कि खुदा की सूरत है, मैं मिलकर आया हूं, उसे वह मानते नहीं हैं।

आसमान जिमी की दुनियां, करी सबों ने दौर।
तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अर्स बका ठौर।। २ ।।

आसमान के देवी-देवता और दुनियां के लोगों ने पारब्रह्म को खोजने के बड़े प्रयत्न किए, परन्तु वह पारब्रह्म के स्वरूप और अखण्ड परमधाम के ठिकाने को नहीं जान सके।

खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक।
खोज खोज सुन्य में गए, कोई आगूं न हुए बेसक।। ३ ।।

दुनियां वालों ने बहुत खोज की, परन्तु पारब्रह्म के स्वरूप को नहीं पाया। खोजते-खोजते निराकार में ही समा गए और संशय छोड़कर आगे नहीं जा सके।

दौड़ थके सब सुन्य लो, किन ला हवा को न पायो पार।
तब खुदा याही को जानिया, कहे निरंजन निराकार।। ४ ।।

सभी दौड़कर निराकार तक थक गए। निराकार के पार कोई नहीं जा सका। निराकार और निरंजन को ही पारब्रह्म समझ लिया।

पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत।
बोहोत करी रद-बदलें, वास्ते सब उमत।। ५ ।।

इन सबके बाद रसूल साहब आए और उन्होंने कहा कि मैं पारब्रह्म से मिलकर आया हूं। मैंने पारब्रह्म से, अपनी उम्मत के वास्ते बहुत वार्तालाप किया है।

अर्स बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर।
और देखी अरवाहें अर्स की, कहे मैं हक का पैगंमर।। ६ ।।

अखण्ड परमधाम, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी, पानी, बगीचे, जमीन, जानवर और परमधाम की रूहों को मैंने देखा, अतः पारब्रह्म का पत्रवाहक (रसूल) बनकर आया हूं।

बोहोत देखी बका न्यामतें, करी हक सों बड़ी मजकूर।
ख्वाब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर।। ७ ।।

मैंने अखण्ड परमधाम में बहुत सी न्यामतें देखी हैं और पारब्रह्म से बड़ी बातें की हैं। उसी के अनुसार इस सपने की झूठी दुनियां में अखण्ड परमधाम का (श्री राजजी महाराज का) प्रकाश मैंने फैलाया।

Nijanand App

कौल किया हके मुझसे, हम आवेंगे आखिरत।
हिसाब ले भिस्त देयसी, आखिर करसी कयामत।। ८ ।।

पारब्रह्म ने मुझसे वक्त आखिरत को आने के लिए वायदा किया है। वह यहां न्यायाधीश बनकर आएंगे और सबका हिसाब लेकर सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

वास्ते खास उमत के, मैं ल्याया फुरमान।
सो आखिर को आवसी, तब काजी होसी सुभान।। ९ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैं ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते कुरान लेकर आया हूं। वह ब्रह्मसृष्टियां आखिरत को आएंगी और तब पारब्रह्म न्यायाधीश बनकर बैठेंगे।

जो इन पर आकीन ल्याइया, ताए भिस्त होसी बेसक।
जो इन बातों मुनकर, ताए होसी आखिर दोजक।। १० ।।

रसूल साहब ने यह भी कहा कि जो काजी इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के ऊपर ईमान लाएगा उसे निश्चित ही बहिश्त मिलेगी। जो मेरी इन बातों को स्वीकार नहीं करेंगे उन्हें आखिरत में दोजख की अग्नि में जलना होगा।

खुदा काजी होए बैठसी, होसी फजर को दीदार।
ले पुरसिस लैलत कदर में, होसी फजर तीसरे तकरार।। ११ ।।

खुद पारब्रह्म न्यायाधीश बनकर बैठेंगे। लैल तुल कदर की रात के बाद फजर में सबको दीदार होगा, अर्थात् जागनी लीला होगी। लैल तुल कदर की रात्रि के तीसरे तकरार (जागनी लीला) के बाद सबका हिसाब लेंगे।

सब पैगंमर आवसी, होसी मेला बुजरक।
तब बदफैल की दुनियां, ताए लगसी आग दोजक।। १२ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के साथ में सब पैगम्बर इकट्ठे होंगे और फिर बहुत बड़ा भारी मेला होगा। उस समय संसार के बुरे काम करने वाले जीवों को पश्चाताप की अग्नि में जलना पड़ेगा।

जलती जलती दुनियां, जासी पैगंमरों पे।
ताए सब पैगंमर यों कहे, तुम छूट न सको हम से।। १३ ।।

पश्चाताप की अग्नि में जलती हुई दुनियां अपने पैगम्बरों के पास जाएगी कि आप हमें इस आग से बचाइए। तब सभी पैगम्बर इस तरह से जवाब देंगे कि यह हमसे सम्भव नहीं है।

कहें पैगंमर हम सरमिंदे, हकसों होए न बात।
तुम जाओ महंमद पे, वे करसी सबों सिफात।। १४ ।।

सभी पैगम्बर कहेंगे कि हम शार्मिन्दा हैं। हम श्री प्राणनाथजी से बात नहीं कर सकते। तुम रसूल मुहम्मद के पास जाओ। वही सबकी सिफारिश इमाम मेंहदी से करेंगे।

ए बात पसरी दुनी में, जो कोई ल्याया आकीन।
सो नाम धराए मुस्लिम, माहें आए महंमद दीन।। १५ ।।

इस बात की खबर दुनियां में फैल गई। जिन लोगों ने उन पर विश्वास किया वह अपने को मुस्लिम (पूरा यकीन वाला) कहकर श्री प्राणनाथजी के निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) में आ गए।

Nijanand App

खुदा के नूर से महंमद, हुई दुनियां महंमद के नूर।
इन बात में सक जो ल्याइया, सो रह्या दीन से दूर।। १६ ।।

खुदा के नूर से मुहम्मद (अक्षर ब्रह्म) और मुहम्मद (अक्षर ब्रह्म) के नूर से दुनियां पैदा हुई है, ऐसा कुरान में लिखा है। इसमें जो संशय लाते हैं, वही मुहम्मद के दीन से दूर काफिर हैं।

कोईक पूरा ईमान लयाइया, बिन ईमान रहे बोहोतक।
कई जुबां ईमान दिल में नहीं, सो तो कहे मुनाफक।। १७ ।।

उनमें से कुछ लोग पूरा ईमान लाए और बहुत लोग ईमान के बिना रह गए। कई लोग कहते थे कि हम ईमान वाले हैं, परन्तु दिल से नहीं मानते थे। ऐसे लोगों को दोगला कहा है।

केते कहावें मोमिन, और दिल में मुनकर।
एक नाजी फिरका असल, और दोजखी बहत्तर।। १८ ।।

कई ऐसे हैं जो अपने को मोमिन कहते हैं और दिल से बेईमान हैं। इन फिरकों में एक नाजी फिरका ही असलियत को पहचान कर ईमान ला सका और बहत्तर फिरके दोजखी हो गए।

कह्या फिरके नाजीय को, होसी हक की हिदायत।
सब फिरके इनमें आवसी, होसी एक दीन आखिरत।। १९ ।।

कुरान में लिखा है कि हक की हिदायत एक नाजी फिरके को ही है और बाकी सब फिरके जब निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) में आएंगे तब एक दीन होगा।

तब होसी कुरान का माजजा, और नबी की नबुवत।
ए कौल तोड़ जुदे पड़त हैं, सो कौल मेंहेदी करसी साबित।। २० ।।

तभी कुरान के रहस्य खुलेंगे और पैगम्बर की पैगम्बरी सच्ची कहलाएगी। जाहिरी अर्थ लेने वाले मुसलमान इसीलिए लड़ झगड़ कर अलग-अलग हो रहे हैं, क्योंकि उन्हें सच्चाई पर विश्वास नहीं है। अब इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आकर कुरान के इन सब वचनों को सत करेंगे।

कुरान में ऐसा लिख्या, खुदा एक महंमद साहेद हक।
तिनको न कहिए मोमिन, जो इनमें ल्यावे सक।। २१ ।।

कुरान में यह भी लिखा है कि खुदा एक है और मुहम्मद इस बात की गवाही देते हैं जो इस बात पर संशय लाते हैं उनको मोमिन नहीं कहना।

जो हक बका सूरत में, मुस्लिम ल्यावे सक।
तो क्यों खुदा एक हुआ, क्यों हुआ महंमद बरहक।। २२ ।।

अखण्ड पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान में जो भी मुसलमान संशय लाता है वह कैसे कहेगा कि खुदा एक है और मुहम्मद की बातें सत हैं?

हाए हाए गिरो महंमदी कहावहीं, कहे हक को निराकार।
जो जहूदों ने पकड़या, इनों सोई किया करार।। २३ ।।

लानत है कि मुहम्मद की जमात के मुसलमान कहलाकर पारब्रह्म को निराकार कहते हैं। हिन्दुओं ने जैसे निराकार कहा उसी को इन्होंने भी निश्चित कर लिया।

Nijanand App

जो कहे खुदा को बेचून, तब बरहक न हुआ महंमद।
खुदा महंमद वाहेदत में, सो कलाम होत है रद।। २४ ।।

यह मुसलमान खुदा को बेचून, अर्थात् निराकार कहते हैं। ऐसा कहने से मुहम्मद की बात सत न हुई, क्योंकि खुदा और मुहम्मद के बीच परमधाम में जो नब्बे हजार बातें हुई हैं, वह शब्द ही रद्द हो जाते हैं।

गैर दीन बेचून कहे, पर क्यों कहे मुसलमान।
कहावें दीन महंमदी, तो इत कहां रह्या ईमान।। २५ ।।

दूसरे लोग अज्ञान के कारण पारब्रह्म को भले ही निराकार कहें पर मुसलमान कैसे कह रहे हैं? यह अपने को मुहम्मद के दीन को मानने वाले कहते हैं। इन्हें फिर मुहम्मद पर ईमान कहां रह गया?

खुदा एक महंमद बरहक, सो गैर दीन माने क्यों कर।
हक सूरत की दई साहेदी, हकें तो कह्या पैगंमर।। २६ ।।

खुदा एक है और मुहम्मद की बातें सत हैं, यह दूसरे धर्म वाले लोग कैसे मानेंगे? मुहम्मद साहब ने पारब्रह्म के स्वरूप की गवाही दी है, इसलिए पारब्रह्म ने रसूल को पैगम्बर कहा।

दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान।
एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक महंमद जान।। २७ ।।

कुरान में ऐसा लिखा है कि जो खुदा की गवाही देता है, वह खुद खुदा ही होता है। एक खुदा को छोड़कर दूसरा कोई भी नहीं है, इसलिए मुहम्मद की वाणी सत है।

महामत कहे सुनो मोमिनों, दीन हकीकी हक हजूर।
हक अमरद सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर।। २८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो। हकीकी दीन को मानने वाले ही हक के चरणों में पहुंचते हैं (निजानन्द सम्प्रदाय को मानने वाले ही मूल-मिलावे में उठेंगे)। जो पारब्रह्म का किशोर स्वरूप हैं, ऐसा नहीं मानते, वह हकीकी दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) से दूर हैं।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ४३५ ॥

रूहों की बिने देखियो

जो उमत होवे अर्स की, सो नीके विचारो दिल।
बिने अपनी देख के, करो फैल देख मिसल।। १ ।।

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो, वह अच्छी तरह से दिल में विचार कर देखो। पहले अपनी चाल देखो। फिर अपनी जमात को देखकर काम करो।

कैसा साहेब है अपना, और कैसा अपना वतन।
कैसो अपनो वजूद है, जो असल रूहों के तन।। २ ।।

पहचान करो अपने धनी कौन हैं? अपना घर कैसा है? वह तन कैसे हैं जो मूल तन (परआतम) है।

तुम सबे जानत हो, तुमको कही खबर।
ऐसी बात तुमारी बुजरक, सो भूल जात क्यों कर।। ३ ।।

तुमको जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से पहचान करा दी है जिससे अब तुम सब कुछ जानते हो। तुम्हारी इतनी बड़ी महानता है, अब भूल क्यों जाते हो?

Nijanand App

जो कहे खुदा को बेचून, तब बरहक न हुआ महंमद।
खुदा महंमद वाहेदत में, सो कलाम होत है रद।। २४ ।।

यह मुसलमान खुदा को बेचून, अर्थात् निराकार कहते हैं। ऐसा कहने से मुहम्मद की बात सत न हुई, क्योंकि खुदा और मुहम्मद के बीच परमधाम में जो नब्बे हजार बातें हुई हैं, वह शब्द ही रद्द हो जाते हैं।

गैर दीन बेचून कहे, पर क्यों कहे मुसलमान।
कहावें दीन महंमदी, तो इत कहां रह्या ईमान।। २५ ।।

दूसरे लोग अज्ञान के कारण पारब्रह्म को भले ही निराकार कहें पर मुसलमान कैसे कह रहे हैं? यह अपने को मुहम्मद के दीन को मानने वाले कहते हैं। इन्हें फिर मुहम्मद पर ईमान कहां रह गया?

खुदा एक महंमद बरहक, सो गैर दीन माने क्यों कर।
हक सूरत की दई साहेदी, हकें तो कह्या पैगंमर।। २६ ।।

खुदा एक है और मुहम्मद की बातें सत हैं, यह दूसरे धर्म वाले लोग कैसे मानेंगे? मुहम्मद साहब ने पारब्रह्म के स्वरूप की गवाही दी है, इसलिए पारब्रह्म ने रसूल को पैगम्बर कहा।

दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान।
एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक महंमद जान।। २७ ।।

कुरान में ऐसा लिखा है कि जो खुदा की गवाही देता है, वह खुद खुदा ही होता है। एक खुदा को छोड़कर दूसरा कोई भी नहीं है, इसलिए मुहम्मद की वाणी सत है।

महामत कहे सुनो मोमिनों, दीन हकीकी हक हजूर।
हक अमरद सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर।। २८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो। हकीकी दीन को मानने वाले ही हक के चरणों में पहुंचते हैं (निजानन्द सम्प्रदाय को मानने वाले ही मूल-मिलावे में उठेंगे)। जो पारब्रह्म का किशोर स्वरूप हैं, ऐसा नहीं मानते, वह हकीकी दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) से दूर हैं।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ४३५ ॥

रूहों की बिने देखियो

जो उमत होवे अर्स की, सो नीके विचारो दिल।
बिने अपनी देख के, करो फैल देख मिसल।। १ ।।

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो, वह अच्छी तरह से दिल में विचार कर देखो। पहले अपनी चाल देखो। फिर अपनी जमात को देखकर काम करो।

कैसा साहेब है अपना, और कैसा अपना वतन।
कैसो अपनो वजूद है, जो असल रूहों के तन।। २ ।।

पहचान करो अपने धनी कौन हैं? अपना घर कैसा है? वह तन कैसे हैं जो मूल तन (परआतम) है।

तुम सबे जानत हो, तुमको कही खबर।
ऐसी बात तुमारी बुजरक, सो भूल जात क्यों कर।। ३ ।।

तुमको जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से पहचान करा दी है जिससे अब तुम सब कुछ जानते हो। तुम्हारी इतनी बड़ी महानता है, अब भूल क्यों जाते हो?

Nijanand App

कैसी बात दिल पैदा करी, जिनसे मांग्या खेल ए।
सो कैसा खेल ए किया, ए देखत हो तुम जे।।४।।

श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे दिल में कैसी इच्छा पैदा कर दी जिससे तुमने खेल मांग लिया? उस खेल को तुम देख रहे हो। देखो यह खेल कैसा है?

दुनियां कैसी पैदा करी, ए जो चौदे तबक।
तिन सबों यों जानिया, किनों न पाया हक।।५।।

यह चौदह लोकों का संसार है। यह कैसे बनाया गया? इस दुनियां में सभी बड़े-बड़े धर्माचार्य, ऋषि, मुनि सब जानते हैं कि परमात्मा किसी को नहीं मिला।

खोज खोज के सब थके, कई कहावें फिरके बुजरक।
पर तिन सारों ने यों कह्या, गई न हमारी सक।।६।।

बड़े-बड़े धर्म-पन्थों के आचार्य भी खोज-खोजकर थक गए। उन सबों ने यही कहा कि पारब्रह्म के बारे में हमारे संशय नहीं गए।

और खावंद जो खेल के, जाको दुनियां सब पूजत।
सो कहे हमों न पाइया, हक क्यों कर है कित।।७।।

इस ब्रह्माण्ड के जो मालिक त्रिदेव हैं, जिनको सब दुनियां पूजती है, वह भी कहते हैं कि हमें पारब्रह्म नहीं मिले, न हम जानते हैं कि वह कहां हैं और कैसे हैं?

हम रूहें भी आइयां इन खेल में, सो गैयां माहें भूल।
सुध ना बिरानी आपनी, भया ऐसा हमारा सूल।।८।।

हम रूहें भी इस खेल में आईं और आकर भूल गईं। हमें अपने और पराए की सुध नहीं रही। ऐसा हमारा हाल हो गया।

इनमें फुरमान ल्याया रसूल, देने अपनी खबर आप।
फुरमान कोई ना खोल सके, जाथें होए हक मिलाप।।९।।

इस दुनियां में रसूल साहब कुरान लेकर पारब्रह्म का संदेश देने के लिए आए। इस कुरान को जिससे हक का मिलन होता है कोई नहीं खोल सका।

फुरमान एक दूसरा, सुकजी ल्याए भागवत।
ए खोल सके न त्रैगुन, यामें हमारी हकीकत।।१०।।

दूसरा फरमान शुकदेवजी भागवत लाए जिसमें हमारी हकीकत है। इन रहस्यों को ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी नहीं खोल सके।

कुंजी ल्याए रूहअल्ला, जासों पावें सब फल।
ज्यों कर ताला खोलिए, सो जाने न कोई कल।।११।।

श्री श्यामाजी महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर आए जिससे सब धर्मग्रन्थों के रहस्य खुल जाते हैं। उन छिपे रहस्यों को कैसे खोलना है, कोई नहीं जानता।

सो कुंजी साहेब ने, मेरे हाथ दई।
जिन बिध ताला खोलिए, सो सब हकीकत कही।।१२।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुंजी को श्री राजजी महाराज ने मुझे दिया और सब धर्मग्रन्थों के रहस्य किस तरह से खोले जाएं, वह सब हकीकत (युक्ति) मुझे बताई।

Nijanand App

सक परदा कोई न रह्या, सब विध दई समझाए।
कहे खोल दे अर्स रूहों को, ए मिलसी तुझे आए।। १३ ।।

मेरे और धनी के बीच किसी तरह का परदा नहीं रह गया, इसीलिए सब हकीकत मुझे समझा दी और हुकम दिया कि परमधाम की रूहें तुझे आकर मिलेंगी, उनको तुम परमधाम के दरवाजे खोल देना।

अब देखो दिल विचार के, कैसी बुजरक बात है तुम।
कैसा खेल तुम देखिया, कई विध देखाई हुकम।। १४ ।।

अब हे सुन्दरसाथजी! विचार करके देखो यह कितनी बड़ी बात है और तुम्हारी कितनी बड़ी महिमा है। किस तरह से तुमने खेल देखा। धनी ने तुम्हें कैसा खेल दिखाया है?

चीन्हो इन खसम को, चीन्हो बका वतन।
और चीन्हो तुम आपको, देखो फैल करत विध किन।। १५ ।।

तुम अपने धनी को देखो, अपने घर को देखो और अपने आपको पहचानो कि हम कर्म कैसे कर रहे हैं?

फुरमान भेज्या किनने, ल्याए ऊपर किन।
कौन लेके आइया, मांहें क्या खजाना धन।। १६ ।।

कुरान और भागवत से संदेशा किसने भेजा, किसके वास्ते भेजा और कौन लेकर आया और इसमें क्या न्यामत छिपी है।

कौन ल्याया कुंजीय को, है कुंजी में क्या विचार।
किनने ताला खोलिया, खोल्या कौन सा द्वार।। १७ ।।

तारतम ज्ञान की कुंजी कौन लाया है, कुंजी में कौन सी वाणी है, धर्म शास्त्रों के रहस्य किसने खोले, तारतम वाणी के द्वारा कौन सा दरवाजा तुम्हारे लिए खोल दिया है जिससे तुम अपने घर जा सकते हो?

क्या है इन दरबार में, दई कहां की सुध।
सुध बका सारी नीके लेओ, विचारो आतम बुध।। १८ ।।

यह परमधाम कहां है, इस दरबार (मूल-मिलावे) में क्या है, अखण्ड परमधाम की सब हकीकत तुमको मिल जाएगी, यदि आत्मा की जागृत बुद्धि से विचार करके देखो।

ए खेल किनने किया, तुम रूहें भेजी किन।
कुंजी कुलफ गिरो आपको, दिल दे देखो रोसन।। १९ ।।

यह खेल किसने बनाया और रूहों को खेल देखने के वास्ते किसने भेजा? तारतम ज्ञान, धर्मग्रन्थों के रहस्य, ब्रह्मसृष्टि की जमात तथा अपनी परआतम को अच्छी तरह से दिल की आंखों से देखो।

एह विचार किए बिना, जो करत हैं फैल हाल।
जब होसी मिलावा जाहेर, तब तिनका कौन हवाल।। २० ।।

इन सब बातों का विचार किए बिना इस खेल में तुम करनी और रहनी कर रहे हो, अर्थात् जीवों की तरह रह रहे हो तो परमधाम में जब हम इकट्ठे जागेंगे तब तुम्हारी क्या हालत होगी?

फरामोसी तुमें किन दई, अब तुमको कौन जगाए।
इन बातों नींद क्यों रहे, जो होवे अर्स अरवाए।। २१ ।।

अगर तुम मोमिन हो तो देखो तुम्हारे ऊपर फरामोशी का परदा किसने डाला और अब जगा कौन रहा है? इन सब बातों से तुम्हारी अज्ञानता क्यों नहीं हटती?

Nijanand App

मोमिन काफर दो कहे, तिन की एह तफावत।
ए चोट काफरों न लगे, मोमिनों छेद निकसत।। २२ ।।

मोमिन और काफिर दो तरह के लोगों की हकीकत बताई। उनमें यह फर्क है कि मोमिन वाणी से घायल होकर संसार छोड़कर घर जाएंगे और काफिर पर कुछ असर नहीं होगा।

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों न विचारो तुम।
कई बिध तुम वास्ते करी, क्यों भूलो इन खसम।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे मोमिनो! तुम इस बात का विचार क्यों नहीं करते कि धनी ने तुम्हें आनन्द देने के लिए अनेक तरह से तुम्हें लीला दिखाई है। फिर तुम ऐसे धनी को क्यों भूलते हो?

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ४५८ ॥

नूर नूरतजल्ला की पेहेचान

बुलाइयां निसबत जान के, देखो मेहेर हक की ए।
हाए हाए तो भी इस्क न आवत, अरवा अर्स की जे।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की मेहर देखो कि वह तुम्हें अपनी अंगना जानकर बुला रहे हैं। हाय! हाय! तुम अर्श की अंगना कहलाती हो, फिर भी तुम्हें अपने धनी से मिलने की तड़प नहीं आती?

ए मेहेर भई मोमिनों पर, समझत नाहीं कोए।
सो कोई तो समझे, जो पेहेचान हक की होए।। २ ।।

यह मेहर मोमिनों के वास्ते हुई है और इसे दूसरा कोई नहीं समझ सकता। दूसरा तो तब समझे जब उसे पारब्रह्म की पहचान हो?

खावंद अर्स अजीम का, सो कहूं नेक हकीकत।
इन हक बका से मोमिन, रखते हैं निसबत।। ३ ।।

धाम के धनी की थोड़ी सी हकीकत बताती हूं। इस अखण्ड परमधाम के श्री राजजी महाराज की ब्रह्मसृष्टि अंगना हैं।

बका अव्वल से अबलो, किन किया न जाहेर सुभान।
नेक कहूं सो बेवरा, ज्यों होए हक पेहेचान।। ४ ।।

आज तक उस अखण्ड परमधाम को तथा पारब्रह्म अक्षरातीत श्री राजजी महाराज को किसी ने जाहिर नहीं किया, इसलिए श्री राजजी महाराज की हकीकत थोड़ी सी बताती हूं।

तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कई पैदास।
ऐसी बुजरक कुदरत, नूरजलाल के पास।। ५ ।।

बैकुण्ठ से नीचे के चौदह लोकों का जितना बड़ा ब्रह्माण्ड है, ऐसे कई ब्रह्माण्ड एक पल में पैदा करने की शक्ति अक्षर ब्रह्म की कुदरत के पास है।

ऐसे पल में पैदा करे, पल में करे फनाए।
ऐसा बल रखे कुदरत, नूरजलाल के।। ६ ।।

अक्षर ब्रह्म की कुदरत की ऐसी शक्ति है कि एक पल में ऐसे कई ब्रह्माण्ड बनाकर मिटा देते हैं।

Nijanand App

मोमिन काफर दो कहे, तिन की एह तफावत।
ए चोट काफरों न लगे, मोमिनों छेद निकसत।। २२ ।।

मोमिन और काफिर दो तरह के लोगों की हकीकत बताई। उनमें यह फर्क है कि मोमिन वाणी से घायल होकर संसार छोड़कर घर जाएंगे और काफिर पर कुछ असर नहीं होगा।

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों न विचारो तुम।
कई बिध तुम वास्ते करी, क्यों भूलो इन खसम।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे मोमिनो! तुम इस बात का विचार क्यों नहीं करते कि धनी ने तुम्हें आनन्द देने के लिए अनेक तरह से तुम्हें लीला दिखाई है। फिर तुम ऐसे धनी को क्यों भूलते हो?

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ४५८ ॥

नूर नूरतजल्ला की पेहेचान

बुलाइयां निसबत जान के, देखो मेहेर हक की ए।
हाए हाए तो भी इस्क न आवत, अरवा अर्स की जे।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की मेहर देखो कि वह तुम्हें अपनी अंगना जानकर बुला रहे हैं। हाय! हाय! तुम अर्श की अंगना कहलाती हो, फिर भी तुम्हें अपने धनी से मिलने की तड़प नहीं आती?

ए मेहेर भई मोमिनों पर, समझत नाहीं कोए।
सो कोई तो समझे, जो पेहेचान हक की होए।। २ ।।

यह मेहर मोमिनों के वास्ते हुई है और इसे दूसरा कोई नहीं समझ सकता। दूसरा तो तब समझे जब उसे पारब्रह्म की पहचान हो?

खावंद अर्स अजीम का, सो कहूं नेक हकीकत।
इन हक बका से मोमिन, रखते हैं निसबत।। ३ ।।

धाम के धनी की थोड़ी सी हकीकत बताती हूं। इस अखण्ड परमधाम के श्री राजजी महाराज की ब्रह्मसृष्टि अंगना हैं।

बका अव्वल से अबलो, किन किया न जाहेर सुभान।
नेक कहूं सो बेवरा, ज्यों होए हक पेहेचान।। ४ ।।

आज तक उस अखण्ड परमधाम को तथा पारब्रह्म अक्षरातीत श्री राजजी महाराज को किसी ने जाहिर नहीं किया, इसलिए श्री राजजी महाराज की हकीकत थोड़ी सी बताती हूं।

तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कई पैदास।
ऐसी बुजरक कुदरत, नूरजलाल के पास।। ५ ।।

बैकुण्ठ से नीचे के चौदह लोकों का जितना बड़ा ब्रह्माण्ड है, ऐसे कई ब्रह्माण्ड एक पल में पैदा करने की शक्ति अक्षर ब्रह्म की कुदरत के पास है।

ऐसे पल में पैदा करे, पल में करे फनाए।
ऐसा बल रखे कुदरत, नूरजलाल के।। ६ ।।

अक्षर ब्रह्म की कुदरत की ऐसी शक्ति है कि एक पल में ऐसे कई ब्रह्माण्ड बनाकर मिटा देते हैं।

Nijanand App

इनमें कोई कायम करे, जो दिल आए चढ़त।
सो इंड सारा नूर में, जो दिल दीदों देखत।।७।।

इन ब्रह्माण्डों में कोई जो अक्षर को अच्छा लगता है, उसे अपने दिल में अखण्ड कर लेते हैं। यदि दिल से विचार कर देखो तो सारा ब्रह्माण्ड जो अखण्ड होता है वह नूर मयी हो जाता है।

कायम होत जो नूर से, सो आवे न सब्द माहें।
तो रोसनी नूरमकान की, क्यों आवे इन जुबांए।।८।।

और जो ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म के द्वारा अखण्ड होते हैं उनकी सिफत शब्दों में करना सम्भव नहीं है, तो अक्षरधाम का वर्णन इस जबान से कैसे हो सकता है?

जब थक रही जुबां इतहीं, ए जो नूरें किया ख्याल।
तो आगे जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजलाल।।९।।

अक्षर ब्रह्म ने अपनी इच्छा से जो खेल बनाया उसका ही वर्णन करने में जब जबान थक जाती है तो अक्षर की ताकत का बयान इस जबान से कैसे हो सकता है?

ए बल नूरजलाल को, जिन की एह कुदरत।
एह जुबां ना केहे सके, बुजरक बल सिफत।।१०।।

अक्षर ब्रह्म की शक्ति भारी है, जिनकी यह कुदरत है। कुदरत के ही बल का बयान जब जबान नहीं कर सकती, तो अक्षर ब्रह्म का वर्णन कैसे सम्भव है?

सो नूर नूरजमाल के, दायम आवें दीदार।
ए जुबां अर्स अजीम की, क्यों कहे सिफत सुमार।।११।।

ऐसे अक्षर ब्रह्म नित्य श्री राजजी महाराज के दर्शन करने आते हैं। तो फिर इस जबान से अर्श अजीम की सिफत का वर्णन कैसे हो सकता है?

नूरजलाल की सिफत को, जुबां ना पोहोंचत।
तो नूरजमाल की सिफत को, क्यों कर पोहोंचे तित।।१२।।

अक्षर ब्रह्म की सिफत का वर्णन जबान नहीं कर सकती, तो पारब्रह्म अक्षरातीत की सिफत का वर्णन कैसे होगा?

जुबां थकी बल नूर के, ऐसी सिफत कमाल।
तो इत आगूं जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजमाल।।१३।।

जब अक्षर ब्रह्म की ताकत की सिफत करने में ही जबान थक गई तो आगे अक्षरातीत की सिफत का वर्णन यह जबान कैसे करे?

जित चल न सके जबराईल, कहे मेरे पर जलत।
नूरतजल्ला की तजल्ली, ए जोत सेहे न सकत।।१४।।

जबराईल फरिश्ता कहता है कि अक्षरातीत के तेज से मेरे पर (पंख) जलते हैं और मैं उनके तेज को सहन नहीं कर सकता।

जाके नूर की ए रोसनी, ऐसी करी सिफत।
तिन का असल जो बातून, सो कैसी होसी सूरत।।१५।।

जिस अक्षर के नूर की ऐसी सिफत है तो उनका भी मूल जो पारब्रह्म अक्षरातीत है उनके असल स्वरूप का वर्णन कैसे होगा?

Nijanand App

ऐसी खूबी सोभा सुन्दर, जो सांची सूरत हक।
नामै आसिक इन का, सब पर ए बुजरक।। १६ ।।

अक्षरातीत श्री राजजी महाराज के सुन्दर स्वरूप की इस तरह की अखण्ड शोभा है। उनका नाम आशिक है और सर्वश्रेष्ठ है।

ए जो सब कहियत हैं, हक बिना कछु ए बात।
सो सब नूर की कुदरत, जो उपज फना हो जात।। १७ ।।

यहां श्री राजजी महाराज के बिना जो कुछ भी दिखाई पड़ता है, वह अक्षर की कुदरत का खेल है जो बनकर मिट जाता है।

पाइए इनसे बुजरकी, जो असल कह्या एक।
खास रूहें याकी जात हैं, ए रूहअल्ला जाने विवेक।। १८ ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड से उस पारब्रह्म की जो सारे जगत के एक हैं, उनकी महानता जानी जाती है। यह ब्रह्मसृष्टियां उनकी अंगना हैं जिसके विवरण को रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान से जाना जाता है।

आसिक तो भी एह है, और मासूक तो भी एह।
खूबी सोभा सब इनकी, प्यारा प्रेम सनेह।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज आशिक और माशूक दोनों हैं। यह सभी खूबियां इनकी शोभा हैं और अखण्ड इश्क उन्हीं के पास है।

मेहेरबान भी एह है, दाता न कोई या बिन।
हक बंदगी सिवाए जो कछू कह्या, सो सब तले इजन।। २० ।।

सब कुछ देने वाले, मेहरबान दाता यही हैं। इनके बिना कोई दूसरा नहीं है। इनकी बन्दगी के बिना जो भी लीला है वह सब इनके हुकम से ही पैदा हुई है।

अब कहूं इन रूहन को, जो खड़ियां तले कदम।
तुम क्यों न विचारो रूहसों, ऐसा अपना खसम।। २१ ।।

श्री महामतिजी अब रूहों को जो अक्षरातीत के चरणों के तले बैठी हैं, कहती हैं, हे मोमिनो! तुम अपने ऐसे धनी को विचार करके क्यों नहीं पहचानतीं?

इन का बिछोह सुन के, आपन रहत क्यों कर।
फिराक न आवत हमको, याद कर ऐसा घर।। २२ ।।

ऐसे धनी का वियोग (बिछोह) सुनकर हम कैसे रह रहे हैं? हमें अपने ऐसे धनी की याद, घर की याद आने पर विरह क्यों नहीं आता?

आराम इस्क इन वतन का, हक का सुन्या आपन।
अजहूं न विरहा आवत, सुन के एह वचन।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज का आराम और इश्क जो वह घर में देते हैं, उसे सुनकर हमको विरह क्यों नहीं आता?

Nijanand App

ऐसा कदीमी वतन, ऐसा इस्क आराम।
ऐसी मेहेरबानगी गिरो को, सुख देत हैं आठों जाम।। २४ ।।

अपना अनादि अखण्ड घर तथा श्री राजजी महाराज का इश्क और अखण्ड आराम है, जो मेहरबानी करके वह रूहों को दिन-रात देते हैं।

ऐसा हक जो कादर, सब विध काम पूरन।
ए सुन इस्क न आवत, तो कैसे हम मोमिन।। २५ ।।

हम कैसी ब्रह्मसृष्टियां हैं जो अपने ऐसे समर्थ खाविंद को जो सब तरह से इच्छा पूर्ण करते हैं, बातें सुनकर इश्क नहीं आता?

ए जो सुकन हक के मैं कहे, तामें जरा न रही सक।
ए सुन के विरहा न आवत, सो ना इन घर माफक।। २६ ।।

अक्षरातीत के लिए मैंने जो कुछ शब्द कहे हैं उनमें तनिक भी संशय की गुंजाइश नहीं है। इतना सुनने के बाद भी जिनको विरह नहीं आता वह इस अखण्ड घर के योग्य नहीं हैं।

यों चाहिए रूहन को, सुनते बिछोहा पिउ।
करते याद जो हक को, तबहीं निकस जाए जिउ।। २७ ।।

ब्रह्मसृष्टियों को प्रीतम से बिछुड़ने का समाचार सुनते ही अपने धनी को यादकर के तुरन्त तन छोड़ देना चाहिए।

फिराक सुनते हक की, वजूद पकड़े क्यों इत।
जो रूह असल वतन की, ए नहीं तिन की सिफत।। २८ ।।

धनी के विरह की बात सुनकर संसार में जो तन धारण किए रखे वह अखण्ड घर की आत्मा नहीं हैं। उन्हें यह शोभा नहीं देता।

खूबी खुसाली बुजरकी, सोभा सिफत मेहेरबान।
इस्क प्रेम वतन का, कायम सुख सुभान।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज के अखण्ड सुख, महिमा, प्रसन्नता, महानता, शोभा और धनी की सिफत और श्री राजजी महाराज के परमधाम का अखण्ड सुख मोमिनों को प्राप्त है।

कहूं प्यार कर मोमिनों, दिल दे सुनियो तुम।
अरवा क्यों न उड़ावत, समझ हक इलम।। ३० ।।

इसलिए मोमिनों को प्यार से कहती हूं, तुम भी दिल से सुनना। तारतम वाणी के ज्ञान से समझकर अपनी आत्मा को क्यों नहीं उड़ाते हो?

कुदरत से पाइयत हैं, बुजरकी कादर।
सिफत लिखी दोऊ ठौर की, आवत न काहूं नजर।। ३१ ।।

अपने ऐसे समर्थ धनी की लीला इन्हीं की कुदरत से जानी जाती है। हे मोमिनो! कुरान में अक्षरधाम और अक्षरातीत के धाम की कई तरह से सिफत लिखी है जो किसी को समझ में आती नहीं।

Nijanand App

तिन हकें मोमिन दिल को, अपना कह्या अर्स।
कह्या तुम भी उतरे अर्स से, यों दई सोभा अरस-परस।। ३२ ।।

ऐसे अक्षरातीत श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अपना अर्श कहा है और यह भी कहा है कि तुम भी अर्श से उतरकर खेल में आए हो। इस तरह से हमारी और श्री राजजी महाराज की अरस परस (परस्पर) की महिमा जानी गई।

ए खावंद काहूं न पाइया, खोज खोज थके सब मिल।
चौदे तबक की दुनी की, पोहोंचे ना फहम अकल।। ३३ ।।

चौदह लोकों के सभी लोग खोज-खोजकर थक गए, परन्तु किसी को भी पारब्रह्म नहीं मिले। चौदह तबकों की सपने की झूठी अक्ल उन तक नहीं पहुंचती।

सो हादी देखावत जाहेर, अर्स खुदा का जे।
चौदे तबक चारों तरफों, सेहेरग से नजीक ए।। ३४ ।।

उस अखण्ड परमधाम की पहचान श्री प्राणनाथजी ज़ाहिर कर दिखा रहे हैं। चौदह लोकों के चारों तरफ से पारब्रह्म मोमिनों को शहरग (प्राण नली) से भी नजदीक है।

हांसी करी अति बड़ी, हक आए तेहेकीक।
चौदे तबकों में नहीं, सो देखाए दिया नजीक।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज ने यहां आकर हमसे बहुत बड़ी हंसी की है। जिस पारब्रह्म को चौदह लोकों के स्वामी नहीं पा सके उसे हमें हमारे पास दिखा दिया।

महामत कहे हंसे हक, देख मोमिनों हाल।
आखिर बुलाए चलें वतन, करके इत खुसाल।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनो (सुन्दरसाथजी)! की ऐसी हालत देखकर श्री राजजी महाराज हंस रहे हैं और इस संसार में सब इच्छा पूरी करके घर ले चलने के वास्ते आए हैं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ४९४ ।।

जहूरनामा किताब

पढ़े तो हम हैं नहीं, ए जो दुनियां की चतुराए।
कहूं माएने हकीकत मारफत, जो ईसा रसूल फुरमाए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हम दुनियां की झूठी चतुराई नहीं पढ़े हैं, परन्तु हकीकत और मारफत के ईसा (श्यामा महारानी) श्री देवचन्द्रजी और रसूल मुहम्मद साहब के कहे वचनों के अनुसार इनके भेद खोलती हूं।

अव्वल बीच और अबलों, सबों ढूंढ़या बनी आदम।
एती सुध किन न परी, कहां खुदा कौन हम।। २ ।।

शुरू से लेकर आज तक संसार के लोगों ने इस पारब्रह्म की बहुत खोज की, परन्तु किसी को यह खबर नहीं हुई कि वह पारब्रह्म कौन है और हम कौन हैं?

Nijanand App

तिन हकें मोमिन दिल को, अपना कह्या अर्स।
कह्या तुम भी उतरे अर्स से, यों दई सोभा अरस-परस।। ३२ ।।

ऐसे अक्षरातीत श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अपना अर्श कहा है और यह भी कहा है कि तुम भी अर्श से उतरकर खेल में आए हो। इस तरह से हमारी और श्री राजजी महाराज की अरस परस (परस्पर) की महिमा जानी गई।

ए खावंद काहूं न पाइया, खोज खोज थके सब मिल।
चौदे तबक की दुनी की, पोहोंचे ना फहम अकल।। ३३ ।।

चौदह लोकों के सभी लोग खोज-खोजकर थक गए, परन्तु किसी को भी पारब्रह्म नहीं मिले। चौदह तबकों की सपने की झूठी अक्ल उन तक नहीं पहुंचती।

सो हादी देखावत जाहेर, अर्स खुदा का जे।
चौदे तबक चारों तरफों, सेहेरग से नजीक ए।। ३४ ।।

उस अखण्ड परमधाम की पहचान श्री प्राणनाथजी ज़ाहिर कर दिखा रहे हैं। चौदह लोकों के चारों तरफ से पारब्रह्म मोमिनों को शहरग (प्राण नली) से भी नजदीक है।

हांसी करी अति बड़ी, हक आए तेहेकीक।
चौदे तबकों में नहीं, सो देखाए दिया नजीक।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज ने यहां आकर हमसे बहुत बड़ी हंसी की है। जिस पारब्रह्म को चौदह लोकों के स्वामी नहीं पा सके उसे हमें हमारे पास दिखा दिया।

महामत कहे हंसे हक, देख मोमिनों हाल।
आखिर बुलाए चलें वतन, करके इत खुसाल।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनो (सुन्दरसाथजी)! की ऐसी हालत देखकर श्री राजजी महाराज हंस रहे हैं और इस संसार में सब इच्छा पूरी करके घर ले चलने के वास्ते आए हैं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ४९४ ।।

जहूरनामा किताब

पढ़े तो हम हैं नहीं, ए जो दुनियां की चतुराए।
कहूं माएने हकीकत मारफत, जो ईसा रसूल फुरमाए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हम दुनियां की झूठी चतुराई नहीं पढ़े हैं, परन्तु हकीकत और मारफत के ईसा (श्यामा महारानी) श्री देवचन्द्रजी और रसूल मुहम्मद साहब के कहे वचनों के अनुसार इनके भेद खोलती हूं।

अव्वल बीच और अबलों, सबों ढूंढ़या बनी आदम।
एती सुध किन न परी, कहां खुदा कौन हम।। २ ।।

शुरू से लेकर आज तक संसार के लोगों ने इस पारब्रह्म की बहुत खोज की, परन्तु किसी को यह खबर नहीं हुई कि वह पारब्रह्म कौन है और हम कौन हैं?

Nijanand App

कौन आप कौन और है, ऐसा छल किया खसम।
सुध न खसम रसूल की, नहीं गिरो की गम।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसा खेल दिखाया है कि यहां सपने की बुद्धि होने के कारण से अपने और पराए की सुध नहीं रही, न अपने धनी की खबर रही और न रसूल साहब पैगम्बर की ही खबर रही। हमारे सुन्दरसाथ कौन कहां हैं इसकी खबर नहीं रही।

कौन रूहें कौन फरिस्ते, कौन आदम कौन जिन।
पढ़ पढ़ वेद कतेब को, पर हुआ न दिल रोसन।। ४ ।।

ब्रह्मसृष्टियां कौन हैं, ईश्वरीसृष्टि कौन हैं, आदमी कौन हैं और भुवर्लोक में रहने वाले पिशाच कौन हैं? इसे जानने के लिए वेद और कतेब को लोगों ने पढ़ा, परन्तु दिल के संशय नहीं मिटे।

अपनी अपनी खोजिया, पर पाया नहीं खुदाए।
थके सब नासूत में, पोहोंचे नहीं इसदाए।। ५ ।।

सबने अपने धर्म-ग्रन्थों को खोजा, पर पारब्रह्म को नहीं पाया। सब माया के मृत्युलोक में ही थक गए। जिसने सृष्टि पैदा की है उसका ही पता नहीं चला।

आब हैयाती न पाइया, दौड़या सिकंदर।
काहूं न पाया ठौर कायम, यों कहे सब पैगंमर।। ६ ।।

सिकन्दर बादशाह ने भी बहुत खोजा, परन्तु अखण्ड अमृत (जागृत बुद्धि का ज्ञान) नहीं पा सका। सभी पैगम्बर कहते हैं कि उस अखण्ड ठिकाने की खबर किसी को नहीं हुई।

आप राह अपनी मिने, ढूंढ़या सब फिरकन।
कायम ठौर पाई नहीं, यों कह्या सबन।। ७ ।।

सभी सम्प्रदाय वालों ने अपने गुरुओं के बताए हुए रास्ते पर चलकर खोजा, किन्तु सभी कहते हैं हमें वह अखण्ड ठिकाना नहीं मिला।

कहे किताब लोक नासूत के, और मलकूती अकल।
छोड़ सुरिया सितारा, कोई आगूं न सके चल।। ८ ।।

संसार के लोग मृत्युलोक का और बैकुण्ठ का विवरण अपनी अक्ल से करते हैं, परन्तु सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) को उलंघकर कोई आगे नहीं जा सका।

जाहेर लिया माएना, सरीयत कांड करम।
खुद खबर पाई नहीं, ताथें पड़े सब भरम।। ९ ।।

सभी धर्म पंथ वालों ने अपने धर्मग्रन्थों के जाहिरी अर्थ लिए और शरीयत तथा कर्मकाण्ड में अपने आपको बांध लिया। उन्हें अपनी आत्मा की पहचान नहीं हो पाई और सभी संशय में पड़े रहे।

लड़ फिरके जुदे हुए, हिंदू मुसलमान।
और खलक केती कहूं, सब में लड़े गुमान।। १० ।।

हिन्दू, मुसलमान दोनों धर्म वाले लड़-लड़कर अलग हो गए। दुनियां में और बहुत धर्म वाले हैं। सभी के अन्दर अहंकार की भावना है।

Nijanand App

माएनें ऊपर का सबों लिया, और लिया अहंकार।
फिरके फिरे सब हक से, बांधे जाए कतार।। ११ ।।

सभी सम्प्रदाय वालों ने केवल शब्दार्थ लिए अपने ज्ञान के अहंकार में सब पारब्रह्म से दूर हो गए। वह एक-दूसरे के देखादेखी होड़ में चल रहे हैं।

कहे सब एक वजूद है, और सब में एकै दम।
सब कहे साहेब एक है, पर सबकी लड़े रसम।। १२ ।।

सभी कहते हैं कि सबके शरीर इन्द्रियां एक सी हैं और एक जैसे प्राण हैं। सभी कहते हैं कि पारब्रह्म एक है, पर सभी अपनी-अपनी रीति, रस्म, रिवाजों में लड़ रहे हैं।

क्यों निसान कयामत के, क्यों कर फना आखिर।
कहे सब बिध लिखी कुरान में, सो पाई न काहूं खबर।। १३ ।।

कयामत के निशान कुरान में लिखे हैं। सृष्टि का प्रलय कैसे होगा, यह सब हकीकत लिखी है, परन्तु किसी को खबर नहीं हुई।

क्यों कर लैलत कदर है, क्यों कर हौज कौसर।
ए सुध किन को न परी, कौन किताबें क्यों कर।। १४ ।।

लैल तुल कदर की रात क्या है, हौज कौसर तालाब कैसा है, किस धर्मग्रन्थ में इसके बारे में क्या लिखा है, यह खबर किसी को नहीं हुई।

मनसूख करी सब किताबें, रानी सबों की उमत।
ए सुध किन को न परी, जो इनकी क्यों करी सिफत।। १५ ।।

श्री प्राणनाथजी ने आकर सब संसार के धर्मग्रन्थों को रद्द कर दिया और सब धर्मों को भी रद्द कर दिया। कुरान की क्यों प्रशंसा की गई, यह खबर किसी को नहीं हुई।

कौन सब पैगंमर हुए, क्यों कर निसान आखिर।
कहां से उतरे रूहें मोमिन, कहां से आए काफर।। १६ ।।

यह सब पैगम्बर कौन हैं, किस तरह से आखिरत के समय कयामत के निशान जाहिर होंगे, वह मोमिन कहां से उतरे हैं, जीवसृष्टि कहां से आई, यह सब जानकारी किसी को नहीं हुई।

काजी कजा क्यों होएसी, क्यों होसी दुनी दीदार।
क्यों भिस्त क्यों दोजख, किन सिर कयामत मुद्दार।। १७ ।।

किस तरह से पारब्रह्म खुद न्यायाधीश बनकर न्याय चुकाएंगे, कैसे दुनियां को उनका दर्शन होगा बहिश्तें कैसे कायम होंगी, दोजख में कौन जलेगा, किस पर ब्रह्माण्ड अखण्ड करके, ब्रह्मसृष्टियों को घर ले जाने की जिम्मेदारी है।

क्यों असराफील आवसी, क्यों बजावसी सूर।
क्यों कर पहाड़ उड़सी, तब कौन नजीक कौन दूर।। १८ ।।

असराफील फरिश्ता संसार में क्यों आएगा, वह सूर क्यों फूंकेगा, किस तरह धर्माचार्य, गादीपति गुरुजन अहंकार के पहाड़ बने बैठे हैं, उनका अहंकार चूर-चूर कर कैसे समाप्त होगा, उस समय पारब्रह्म के कौन निकट, कौन दूर होगा?

Nijanand App

पोते नूह नबीय के, जादे पैगंमर।
सब दुनियां को खाएसी, आजूज माजूज क्यों कर।। १९ ।।

नूह पैगम्बर के लड़के याफिस और याफिस के लड़के आजूज माजूज इस दुनियां को कैसे खाएंगे, अर्थात् नूह वसुदेवजी हैं और उनके लड़के स्याम श्री कृष्णजी हैं, विष्णु भगवान हैं जिन्होंने दिन और रात बनाया है। यही दिन और रात आजूज और माजूज हैं जो मनुष्य की आयु समाप्त करते जाते हैं।

कह्या गधा बड़ा दज्जाल का, ऊंचा लग आसमान।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रान।। २० ।।

कयामत के तीसरे निशान में कौन से दज्जाल का वर्णन है जो एक बड़े गधे पर सवार है। जिसकी कमर तक सात समुद्र का पानी नहीं पहुंचता और सिर उसका आसमान में लगा है। इसे कोई नहीं जानता। यह चौदह लोकों का वैराट ही गधा है और इसके ऊपर बैकुण्ठ में विष्णु भगवान एक आंख से काना, अर्थात् अपने अहंकार में आकर पारब्रह्म की पूजा को छुड़ाकर अपनी पूजा करवाता है। नीचे सात पाताल लोक (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) ही सात समुद्र करके कहे गए हैं।

ना पेहेचान दज्जाल की, ना दाभतूलअर्ज।
ए सुध काहूं न परी, क्यों मगरब सूरज।। २१ ।।

ऊपर की चौपाई में बताए गए दज्जाल की पहचान किसी को नहीं हो सकी और न दाभतुल अर्ज की दाभ (जानवर) तूल (लम्बा) अर्ज (चौड़ा) यानि जिसके सिर पर पहाड़ी बैल जैसे सींग, आंखें सुअर जैसी, कान हाथी जैसे, गर्दन मुर्गे जैसी, छाती शेर जैसी, पीठ गीदड़ (सियार) जैसी और मुख इन्सान जैसा होगा, इसकी पहचान किसी को नहीं हुई। सूर्य पूर्व की बजाय पश्चिम से कैसे निकलेगा जो मुसलमानों के लिए अंधेरे वाला होगा, इसकी खबर किसी को नहीं हुई।

ना सुध मोमिन गिनती, ना सुध तीन उमत।
माएने मगज खोले बिना, पाइए ना तफावत।। २२ ।।

मोमिन कितने हैं, जमातें तीन तरह की कैसे हैं? जीव, ईश्वरी और ब्रह्मसृष्टि सबके रहस्य खोले बिना इनके फर्क और यह क्या है पता नहीं लगता।

मुरदे क्यों कर उठसी, दुनियां चौदे तबक।
पढ़े वेद कतेब को, पर गई न काहूं की सक।। २३ ।।

कब्रों में से चौदह लोकों के मुर्दे कैसे उठेंगे? वेद और कतेब को पढ़ने वालों ने खूब खोजा, परन्तु संशय किसी के नहीं मिटे।

जब मोहे हादी सुध दई, ए खुले माएने तब।
तले ला मकान के, खुराक मौत की सब।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज ने मुझे सुध दी तब यह सब माएने खुल गए और यह निश्चय हो गया कि निराकार सहित सब मिटने वाले हैं।

कहे दुनियां ला मकान को, बेचून बेचगून।
खुदा याही को बूझहीं, बेसबी बेनिमून।। २५ ।।

दुनियां वाले निराकार को पारब्रह्म समझकर बेचून, बेचगून, बेसबी, बेनिमून की उपमा देते हैं।

Nijanand App

याही को माया कहें, पैदास सब इन से।
कोई कहे ए करम है, सब बंधे इन ने।। २६ ।।

संसार वाले इस निराकार को माया कहते हैं और कहते हैं कि सारी दुनियां इसी से पैदा है। कोई कहता है यह सब कर्म का स्वरूप है और इसी से सब बंधे हैं।

खुदा याही को कहें, याही को कहें काल।
आखिर सब को खाएसी, एही खेलावे ख्याल।। २७ ।।

कोई इसी निराकार को ही खुदा कहते हैं। कोई इसी को काल कहते हैं जो आखिरत के समय में सबको खा जाएगा। तब तक सभी को इस खेल में खिला रहा है।

यासों सुन्य निरगुन कहें, निराकार निरंजन।
यों नाम खुदाए के, बोहोत धरे फिरकन।। २८ ।।

कोई इसी को शून्य (बेचून), निर्गुन (बेचगून), निराकार (बेनिमून), निरंजन (बेसबी) कहते हैं और कई इसे खुदा के नाम से जानते हैं। इस तरह से अलग-अलग धर्म वालों ने अलग-अलग नाम रख दिए।

दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर।
गोते खाए फना मिने, पोहोंचे न बका नजर।। २९ ।।

दुनियां क्षर, अक्षर को खोज़ती रहती है और इसी निराकार में भटकती रहती है। अखण्ड परमधाम की तरफ किसी की दृष्टि नहीं जाती।

ला याही को केहेवहीं, इला भी याही को।
सब कोई गोते खात हैं, ला इला के मों।। ३० ।।

वह इसी संसार को ला (मिटने वाला) तथा इसे ही इलाह (अक्षर) कहते हैं और इसी तरह से क्षर और अक्षर के चक्कर में भटकते फिरते हैं।

दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर।
सब तले ला फना के, एक हरफ ना चले ऊपर।। ३१ ।।

यह दुनियां क्षर, अक्षर को बार-बार खोजती है। यह सब चौदह लोक निराकार सहित मिट जाने वाले हैं। निराकार से आगे कोई एक शब्द भी नहीं बोल पाता।

मैं भी उन अंधेर में, हुती ना सुध दिन रात।
जो मेहर मुझ पर भई, सो कहूं भाइयों को बात।। ३२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहते हैं कि मैं भी इसी अज्ञान के अन्धकार में थी। रात और दिन, ज्ञान और अज्ञान के अन्तर को नहीं समझती थी। श्री राजजी महाराज की मेरे ऊपर कृपा हुई और जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) देने की कृपा मेरे ऊपर हुई। उसका वर्णन अपने भाइयों (सुन्दरसाथ) के वास्ते करती हूं।

जब मोहे हादी सुध दई, पाया ला इला तब।
नूर-मकान नूरतजल्ला, पाई अर्स हकीकत सब।। ३३ ।।

जब मुझे श्री श्यामाजी श्री देवचन्द्रजी महाराज ने तारतम वाणी से सुध दी तब मैंने क्षर, अक्षर का भेद समझा और अक्षरधाम, परमधाम की सारी हकीकत की जानकारी हुई।

Nijanand App

जो मानो सो मानियो, दिल में ले ईमान।
मैं तो तेहेकीक कहूंगी, गिरो अपनी जान।। ३४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस विवरण से जिसको ईमान आ जाए वह अपने दिल से मानना। मैं तो अपने सुन्दरसाथ को धाम की निसबत जानकर निश्चित रूप से बताती हूं।

नफा ईमान का अब है, पीछे दुनियां मिलसी सब।
तोबा दरवाजे बन्द होएसी, कहा करसी ईमान तब।। ३५ ।।

ईमान से नफा लेने का समय तो अभी है। पीछे तो संसार वाले ईमान लाकर इकट्ठे होंगे। तब पश्चाताप करने पर भी लाभ नहीं होगा, तो उस समय ईमान का क्या फायदा?

ईमान ल्याओ सो ल्याइओ, मैं केहेती हों बीतक।
पीछे तो सब ल्यावसी, ऐसा कह्या मोहे हक।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं तो अपनी बीती बात अपने सुन्दरसाथ को बताती हूं। ईमान लाओ तो लाभ उठा लेना। मुझे धनी का हुकम हुआ है कि सुन्दरसाथ को जाहिर करूं। पीछे तो सब दुनियां ईमान लाएगी।

रूह अल्ला अर्स अजीम से, मो सों आए कियो मिलाप।
कहे तुम आए अर्स से, मोहे भेजी बुलावन आप।। ३७ ।।

परमधाम से श्री श्यामाजी आकर श्री देवचन्द्रजी के तन से मुझे मिले और कहा कि तुम परमधाम से आए हो और श्री राजजी महाराज ने मुझे बुलाने के लिए भेजा है।

तुम आए खेल देखन को, सो किया कारन तुम।
ए खेल देख पीछे फिरो, आए बुलावन हम।। ३८ ।।

तुम खेल देखने के लिए आए हो और तुम्हारे लिए ही यह खेल बनाया है। तुम खेल देखकर वापस घर चलो मैं बुलाने के लिए आई हूं।

तुम बैठे अपने वतन में, खेल देखत मिने ख्वाब।
हम आए तुमें देखावने, देख के फिरो सिताब।। ३९ ।।

तुम अपने घर परमधाम (मूल-मिलावा) में बैठे हो और सपने का खेल देख रहे हो। हम तुम्हें खेल दिखाने के लिए आए हैं। खेल देखकर जल्दी घर चलो।

इलम लदुन्नी देय के, खोल दई हकीकत।
सदर-तुल-मुंतहा अर्स अजीम, कही कायम की मारफत।। ४० ।।

जागृत बुद्धि से तारतम वाणी का ज्ञान देकर सारे रहस्य (छिपे भेद) खोल दिए। अक्षरधाम और परमधाम जो अखण्ड है, की पहचान करा दी।

दे साहेदी किताब की, खोल दिए पट पार।
ए खेल लैल का देखिया, तीसरा तकरार।। ४१ ।।

कुरान की गवाही देकर सब बन्द परदे हटा दिए और यह बताया कि यह लैल तुल कदर की रात्रि का तीसरा अन्तिम भाग देखा है।

Nijanand App

दो बेर लैलत कदर में, खेल में तुम उतरे।
चाहे मनोरथ मन में, सो हुए नहीं पूरे।। ४२ ।।

तुम दो बार रात्रि के खेल में आ चुके हो फिर भी तुम्हारी चाही हुई इच्छाएं पूर्ण नहीं हुई थीं।

सो ए पट सब खोल के, दे साहेदी किताब।
कह्या तीसरा तकरार, ए जो खेल दुख का अजाब।। ४३ ।।

अब कुरान की गवाही देकर सब परदे खोल दिए (सब रहस्य बता दिए) और यह बताया कि खेल का यह तीसरा भाग है, जो दुःख से भरा है।

इतहीं बैठे देखें रूहें, कोई आया नहीं गया।
तुम जानो घर दूर है, सेहेरग से नजीक कह्या।। ४४ ।।

रूहें परमधाम में बैठकर ही खेल देख रही हैं। कोई आया गया नहीं है। तुम समझते हो कि घर (परमधाम) दूर है, परन्तु वह प्राण नली (सेहेरग) से भी नजदीक है।

नहीं कायम चौदे तबक में, सो इत देखाए दिया।
सेहेरग से नजीक, अर्स बका में लिया।। ४५ ।।

तुम्हारा अखण्ड घर चौदह लोकों में नहीं हैं। उसको यहीं बैठे-बैठे दिखा दिया। घर सेहेरग से नजदीक है। उस घर (परमधाम) में तुम्हारी आत्मा को लगा लिया।

साहेदी खुदाए की, रूह अल्ला दई जब।
खुले अन्दर पट अर्स के, पाई सूरत खुदाए की तब।। ४६ ।।

जब श्री श्यामा महारानीजी ने श्री राजजी के किशोर स्वरूप को बताया तो अन्दर की आत्म दृष्टि खुल गई और धनी के दर्शन हुए।

अन्दर मेरे बैठ के, खोले पट द्वार।
ल्याए किल्ली अर्स अजीम से, ले बैठाए नूर के पार।। ४७ ।।

साक्षात् धनी ने मेरे अन्दर बैठकर सारे परदे हटाकर सब रहस्य समझा दिए। परमधाम के जागृत बुद्धि के ज्ञान से अक्षर के पार परमधाम पहुंचा दिया।

हक सूरत ठौर कायम, कबहूं न पाया किन।
रूह अल्ला के इलम से, मेरी नजर खुली बातन।। ४८ ।।

हमें पारब्रह्म के स्वरूप और अखण्ड धाम का निश्चय हो गया जो आज तक कोई नहीं कर पाया था। श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी के तारतम वाणी के ज्ञान से मेरी आत्म दृष्टि खुल गई।

ए इलम लिए ऐसा होत है, रूह अपनी साहेदी देत।
बैठ बीच ब्रह्मांड के, अर्स बका में लेत।। ४९ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी लेने से आत्मा स्वयं अन्दर से गवाही देने लगती है। क्षर के ब्रह्माण्ड में बैठकर ही अखण्ड परमधाम के सुख मिलने लगते हैं।

अव्वल बीच और अब लों, ऐसा हुआ न दुनी में कोए।
कायम ठौर हक सूरत, इत देखावे सोए।। ५० ।।

शुरू से लेकर आज तक इस दुनियां में कोई ऐसा नहीं हुआ जो अखण्ड घर (परमधाम) का तथा पारब्रह्म का यहां दर्शन करा दे।

Nijanand App

जो रूहें अर्स अजीम की, कहूं तिनको मेरी बीतक।
जो हुई इनायत मुझ पर, जिन बिध पाया हक।।५१ ।।

परमधाम के जो सुन्दरसाथ हैं उनको मैं अपनी हकीकत बताती हूं मेरे धनी की कैसे कृपा हुई और मुझे मेरे धनी कैसे मिले?

कायम फना बीच दुनी के, हुती न तफावत।
मैं जो बेवरा करत हों, सो कदम हादी बरकत।।५२ ।।

दुनियां वालों को क्षर-अक्षर के भेद का पता नहीं था। अब मैं अपने हादी श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी की कृपा से सबकी हकीकत बताती हूं।

नासूत और मलकूत की, ना ला मकान की सुध।
जबरूत लाहूत हाहूत, दई हादी हिरदे बुध।।५३ ।।

मृत्युलोक, बैकुण्ठ तथा निराकार की सुध नहीं थी। अब श्री श्यामा महारानीजी श्री देवचन्द्रजी ने जागृत बुद्धि देकर अक्षर-धाम, परमधाम तथा मूल-मिलावा तक की पहचान करा दी।

ए सुध पाए पीछे, हुआ बेवरा बुजरक।
ज्यों जाहेर मांहें दुनियां, त्यों बातून मांहें हक।।५४ ।।

यह ज्ञान मिल जाने से क्षर और अक्षर के भेद का पता लगा। जैसे संसार में जाहिरी में देखती और सुनती थीं उसी तरह बातूनी में सत (अक्षर) का ज्ञान होने लगा।

बंदगी सरीयत की, और हकीकत बंदगी।
नासूत दुनियां अर्स मोमिन, है तफावत एती।।५५ ।।

शरीयत और हकीकत की बन्दगी का पता चला। जितना अन्तर संसार के जीवों में, परमधाम की ब्रह्मसृष्टि में है, उतना ही फर्क जीव और आत्माओं में है।

नासूत बीच फना के, अर्स कायम हमेसगी।
दुनियां ताल्लुक दिल की, रूह मोमिन खुदाए की।।५६ ।।

मृत्युलोक नाशवान है। परमधाम सदा अखण्ड है। दुनियां का दिल संसार में लगा है और मोमिनों का दिल खुदा में लगा है।

एता लिख्या बेवरा, सब किताबों मिने।
नुकसान नफा दोऊ देखत, तो भी छोड़ें न हठ अपने।।५७ ।।

सब धर्मग्रन्थों में नाशवान क्षर और अखण्ड अक्षर की हकीकत लिखी है। सब लोग यह भी जानते हैं कि उन्हें लाभ किस में है और हानि किसमें है। फिर भी कोई अपनी जिद नहीं छोड़ पाता।

इस्क बंदगी अल्लाह की, सो होत है हजूर।
फरज बंदगी जाहेरी, सो लिखी हक से दूर।।५८ ।।

इश्क की बन्दगी पारब्रह्म के पास पहुंचाती है। फर्ज की बन्दगी (बन्धन की बन्दगी) खुदा से दूर करती है।

जाहेर मैं केता कहूं, खुदाए का जहूर।
वास्ते खास उमत के, ए करी है मजकूर।।५९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तारतम वाणी से पारब्रह्म सभी प्रकार से जाहिर हो गए हैं। इससे ज्यादा मैं क्या कहूं? अपनी खास उम्मत (सुन्दरसाथ) के वास्ते ही यह सब मेरे से कहलवा दिया।

Nijanand App

ऊपर ला मकान के, राह न मौत की तित।
नूर-मकान नूर-तजल्ला, अर्स हमेसगी जित।। ६० ।।

निराकार के पार मौत भी नहीं पहुंचती। वहां पर अखण्ड अक्षर-धाम और परमधाम हैं।

नूर-तजल्ला अर्स में, सूरत साहेब की।
दरगाह बीच रेहेत हैं, रूहें हमेसगी।। ६१ ।।

परमधाम में साक्षात् पारब्रह्म का स्वरूप विराजमान है। इसी पूज्य स्थान में ब्रह्मसृष्टि रहती है।

बड़ी बड़ाई इन की, कोई नहीं इन समान।
रहें हजूर हक के, ए निसबत करी पेहेचान।। ६२ ।।

इन ब्रह्मसृष्टियों की महिमा बड़ी भारी है। इनके समान कोई दूसरा नहीं है। यह सदा से ही श्री राजजी महाराज के साथ रहती हैं। इस ज्ञान से मुझे पता चला कि मैं उस अक्षरातीत की अंगना हूं।

तब मैं दिल में यों लिया, करों कायम चौदे तबक।
मेरे खावंद के इलम से, सबों पोहोंचाऊं हक।। ६३ ।।

तब मैंने दिल में यह विचार किया कि मैं चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड करूं और अपने धनी की जागृत बुद्धि से सबको पारब्रह्म से मिला दूं।

ऐसा जब दिल में आइया, दिया जोस हकें बल।
उतरी किताबें कादर से, पोहोंच्या हुकम असल।। ६४ ।।

जब मन में यह भावना आई तो धाम धनी अक्षरातीत ने भी यह शक्ति प्रदान की। उनकी कृपा से वाणी उतरी जिसमें श्री राजजी महाराज का मूल हुकम भी था कि ब्रह्माण्ड को अखण्ड कर दो।

ए इनायत पेहेले भई, आए महंमद आप।
रूह अल्ला पेहेले दिल मिने, अहमद कियो मिलाप।। ६५ ।।

रसूल साहब जब आए थे तब कुरान में इस बात की भविष्यवाणी कर दी थी। वही मुहम्मद जब रूह अल्लाह श्री श्यामाजी के दूसरे तन, अर्थात् मेड़ता में श्री इन्द्रावतीजी के तन में मिले, तो अहमद कहलाए।

तब खुदाई इलम से, भई सबे पेहेचान।
ऐसी पाई निसबत, बूझा अपना कुरान।। ६६ ।।

तब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सबकी (श्री राजजी, श्री श्यामाजी, ब्रह्मसृष्टियों की) पहचान हो गई और हमारा मुहम्मद से क्या सम्बन्ध है यह पता चला। यह भी पता चला कुरान हमारे वास्ते आया है।

सो कुरान मैं देखिया, सब पाइयां इसारत।
हाथ मुद्दा सब आइया, हक पेड़ जानी निसबत।। ६७ ।।

अब उस कुरान को मैंने देखा और सब छिपे भेद खुल गए। मेरे तन से क्या कुछ होना है उसकी जानकारी मिली। मूल परमधाम से खेल में आने से पहले ही श्री राजजी महाराज ने मुझसे दुनियां में क्या काम लेना है, यह भी ज्ञान हो गया।

Nijanand App

जो भेजी गिरो हक ने, ए जो खासल खास उमत।
ताए देऊं दोऊ साहेदी, ज्यों आवे असल लज्जत।। ६८ ।।

यह जो जमात (मोमिनों की खासल खास) पारब्रह्म ने खेल में भेजी है उनको वेद और कतेब की (श्री श्यामाजी, श्री देवजन्द्रजी की और मुहम्मद की) गवाहियां देती हूं जिससे उन्हें अखण्ड परमधाम का आनन्द प्राप्त हो।

एह कायम न्यामतें, दोऊ से जुदी जुदी।
नूर-जमाल और नूर की, दई दोऊ की साहेदी।। ६९ ।।

अक्षर और अक्षरातीत के अखण्ड घरों की कुरान और पुराण से दोनों धामों की गवाही दी।

महंमद कहे मैं उनसे, मोमिन मेरे भाई।
कुरान हदीसों बीच में, है उनों की बड़ाई।। ७० ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मैं पारब्रह्म के नूर से हूं और ब्रह्मसृष्टियां मेरे भाई हैं। कुरान और हदीसों में उनकी बड़ी महिमा गाई है।

ए कलाम अल्ला में पेहेले लिख्या, सब छोड़ेंगे सक।
बरकत खास उमत की, सब लेसी इस्क।। ७१ ।।

यह कुरान में पहले से ही लिखा है कि वक्त आखिरत को सबके संशय मिट जाएंगे और ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से सब लोग प्रेम-मार्ग पर चलेंगे।

करसी कतल दज्जाल को, ईसे का इलम।
साफ दिल सब होएसी, जिनको पोहोंच्या दम।। ७२ ।।

ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से शैतान (अबलीस) के प्रभाव को समाप्त कर देंगे। जिनके दिल में ईमान का बल आ जाएगा। उनके दिल साफ हो जाएंगे।

कहे सब्द सब आगूंही, इत खुदा करसी कजाए।
हिसाब सबन का लेय के, भिस्त जो देसी ताए।। ७३ ।।

कुरान में पहले से लिखा है कि पारब्रह्म (खुदा) स्वयं न्यायाधीश बनकर सबका न्याय चुकाएंगे और सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

रूह अल्ला कुंजी ल्यावसी, मेंहेदी इमामत।
दरगाही रूहें आवसी, करसी महंमद सिफायत।। ७४ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी तारतम लाएंगे और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी घर का रास्ता बताएंगे। परमधाम की सब ब्रह्मसृष्टियां आएंगी और श्री प्राणनाथजी उनकी प्रशंसा करेंगे।

जेते कोई फिरके कहे, सब छोड़ देसी कुफर।
आवसी दीन इसलाम में, दिल साफ होए कर।। ७५ ।।

जितने धर्म हैं, सब झूठ की पूजा छोड़ देंगे। दिल के संशय मिटाकर सब निजानन्द सम्प्रदाय में आएंगे।

एह पट जिनको खुले, सो आए बीच इसलाम।
लिया दावा हकीकी दीन का, सिर ले अल्ला कलाम।। ७६ ।।

जिनको इन रहस्यों का पता चल गया, वही निजानन्द सम्प्रदाय में आ गया। श्री श्यामा महारानी जी के तारतम ज्ञान को लेकर निजानन्द सम्प्रदाय के वही सच्चे मानने वाले बने।

Nijanand App

जो बात मैं दिल में लई, सो हकें आगूं रखी बनाए।
इत काम बीच खुदाए के, काहूं दम ना मार्‌यो जाए।।७७।।

जो मैंने अभी सोचा उसको श्री राजजी महाराज ने पहले से ही निश्चित कर रखा है। पारब्रह्म के काम में दखल देने का बल किसी का नहीं चलता।

हुकम साहेब का इन विध, सो लेत सबे मिलाए।
खावंदे बंध ऐसा बांध्या, कोई काढ़ ना सके पाए।।७८।।

धनी का हुकम ही ऐसा है जो सबको अपने आप मिला लेता है। श्री राजजी महाराज ने पहले से ही निश्चित कर रखा है कि कब क्या होगा? इसलिए उससे कोई बाहर नहीं जा सकता।

अग्यारे सै साल का, बंध बांध्या मजबूत कर।
हुकम ऐसा कर छोड़या, काहूं करनी न पड़े फिकर।।७९।।

कुरान में श्री राजजी महाराज ने पहले ही से यह निश्चित करके लिखा है कि ग्यारहवीं सदी में कयामत होगी। ऐसा इसलिए लिखवा दिया कि किसी को चिन्ता करने की आवश्यकता न पड़े।

महामत कहे सुनो मोमिनों, मौला अति बुजरक।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए लेत कदमों हक।।८०।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! सुनो श्री राजजी महाराज बड़ी महिमा वाले हैं। इनकी कृपा जिस पर हो जाती है उसे अपने चरणों में ले लेते हैं।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५७४ ।।

दोनामा किताब मंगलाचरण

अब कहूं विध निगम, देऊं महंमद की गम।
जाथें मिटे दुनी हम तुम, करूं जाहेर रसम खसम।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि वेद, पुराणों की हकीकत और मुहम्मद की पहुंच बताती हूं जिससे मेरे-तेरे झगड़े मिट जाएं, अर्थात् हिन्दू-मुसलमान के झगड़े समाप्त हो जाएं और एक पारब्रह्म की पहचान हो जाए।

कहूं माएने मगज विवेक, जाथें दीन होए सब एक।
छूट जाए छल भेख, ए बुध इमाम को विसेख।।२।।

तारतम वाणी से सबके छिपे रहस्यों को खोलती हूं जिससे सारी दुनियां एक हो जाए और माया के भेषों के झगड़े समाप्त हो जाएं। इमाम मेंहदी साहब जागृत बुद्धि से सबके संशय मिटा देंगे। यही विशेषता है।

खोज थके सब वेद, और खोज्या कैयों कतेब।
पर पाया न काहूं भेद, ताथें रही सबों उमेद।।३।।

बहुतों ने वेदों को पढ़-पढ़कर पारब्रह्म को खोजा और इसी तरह से कईयों ने कतेब को पढ़-पढ़कर खोजा। कोई भी उनके गुझ (गुप्त) रहस्यों के भेद नहीं पा सका, इसलिए सबको विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार आखिरी जमाने के इमाम मेंहदी साहब के आने का इन्तजार था जो सब ग्रन्थों के छिपे रहस्यों का भेद खोलकर बताएं।

Nijanand App

जो बात मैं दिल में लई, सो हकें आगूं रखी बनाए।
इत काम बीच खुदाए के, काहूं दम ना मार्‌यो जाए।।७७ ।।

जो मैंने अभी सोचा उसको श्री राजजी महाराज ने पहले से ही निश्चित कर रखा है। पारब्रह्म के काम में दखल देने का बल किसी का नहीं चलता।

हुकम साहेब का इन विध, सो लेत सबे मिलाए।
खावंदे बंध ऐसा बांध्या, कोई काढ़ ना सके पाए।।७८ ।।

धनी का हुकम ही ऐसा है जो सबको अपने आप मिला लेता है। श्री राजजी महाराज ने पहले से ही निश्चित कर रखा है कि कब क्या होगा? इसलिए उससे कोई बाहर नहीं जा सकता।

अग्यारे सै साल का, बंध बांध्या मजबूत कर।
हुकम ऐसा कर छोड़या, काहूं करनी न पड़े फिकर।।७९ ।।

कुरान में श्री राजजी महाराज ने पहले ही से यह निश्चित करके लिखा है कि ग्यारहवीं सदी में कयामत होगी। ऐसा इसलिए लिखवा दिया कि किसी को चिन्ता करने की आवश्यकता न पड़े।

महामत कहे सुनो मोमिनों, मौला अति बुजरक।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए लेत कदमों हक।।८० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! सुनो श्री राजजी महाराज बड़ी महिमा वाले हैं। इनकी कृपा जिस पर हो जाती है उसे अपने चरणों में ले लेते हैं।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५७४ ।।

दोनामा किताब मंगलाचरण

अब कहूं विध निगम, देऊं महंमद की गम।
जाथें मिटे दुनी हम तुम, करूं जाहेर रसम खसम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि वेद, पुराणों की हकीकत और मुहम्मद की पहुंच बताती हूं जिससे मेरे-तेरे झगड़े मिट जाएं, अर्थात् हिन्दू-मुसलमान के झगड़े समाप्त हो जाएं और एक पारब्रह्म की पहचान हो जाए।

कहूं माएने मगज विवेक, जाथें दीन होए सब एक।
छूट जाए छल भेख, ए बुध इमाम को विसेख।। २ ।।

तारतम वाणी से सबके छिपे रहस्यों को खोलती हूं जिससे सारी दुनियां एक हो जाए और माया के भेषों के झगड़े समाप्त हो जाएं। इमाम मेंहदी साहब जागृत बुद्धि से सबके संशय मिटा देंगे। यही विशेषता है।

खोज थके सब वेद, और खोज्या कैयों कतेब।
पर पाया न काहूं भेद, ताथें रही सबों उमेद।। ३ ।।

बहुतों ने वेदों को पढ़-पढ़कर पारब्रह्म को खोजा और इसी तरह से कईयों ने कतेब को पढ़-पढ़कर खोजा। कोई भी उनके गुझ (गुप्त) रहस्यों के भेद नहीं पा सका, इसलिए सबको विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार आखिरी जमाने के इमाम मेंहदी साहब के आने का इन्तजार था जो सब ग्रन्थों के छिपे रहस्यों का भेद खोलकर बताएं।

Nijanand App

सास्त्र सबे जो ग्रन्थ, ताके करते थे अनरथ।
बिना इमाम न कोई समरथ, जो पट खोल के करे अर्थ।।४।।

आज तक सभी धर्मग्रन्थों के आचार्य अर्थ का अनर्थ करते थे, अर्थात् भटकाते थे। बिना इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के किसी के पास शक्ति नहीं थी जो इन रहस्यों को खोल सके।

हक नाहीं मिने सृष्ट सुपन, ढूंढ़या ला के लोकन।
जो जुलमत से उतपन, दई साख आप मुख तिन।।५।।

पारब्रह्म इस झूठे संसार में नहीं हैं। निराकार से पैदा जीवसृष्टि ने पारब्रह्म को यहां बहुत खोजा और अपने मुख से स्पष्ट कहा कि परमात्मा अगम है। उसके पास पहुंचा नहीं जा सकता।

कई खोज करी निगम, पर पाई नाहीं गम।
ए पैदा जिनके हुकम, सो पाया न किन खसम।।६।।

बहुतेरों ने वेदों को पढ़कर खोजा, परन्तु पारब्रह्म को नहीं पा सके। जिसके हुकम से सृष्टि बनी है, उसको आज तक किसी ने नहीं पाया।

कैयों ढूंढ़या चौदे भवन, ढूंढ़े चार मुक्त के जन।
नवधा के ढूंढ़े, भिंन भिंन, न कछु खबर त्रैगुन।।७।।

लोगों ने चौदह लोकों में ढूंढ़ा। कईयों ने चार प्रकार की मुक्ति सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य और नवधा की भक्ति से खूब खोजा, परन्तु पारब्रह्म नहीं मिले। यहां तक कि इस संसार के पैदा करने वाले, पालने वाले और मारने वाले त्रिदेव भी उसे नहीं पा सके।

महाप्रले होसी जब, सरगुन न निरगुन तब।
निराकार न सुंन, केहेवे को नाहीं वचन।।८।।

जब महाप्रलय होगा, तब यह सारा जगत, निराकार, शून्य कुछ भी नहीं रहेगा तथा सबको ज्ञान देने वाले शब्द भी नहीं रहेंगे।

नेत नेत कर तो गाया, जो ब्रह्म न नजरों आया।
जित देख्यो तित माया, तब नाम निगम धराया।।९।।

वेदों ने जब पारब्रह्म को नहीं पाया तो यहां नहीं, वहां नहीं, मुझे नहीं मिला, कह दिया। जहां-जहां भी खोजा उन्हें माया ही माया दिखाई दी और तब पारब्रह्म के पास न पहुंचने के कारण ही अपना नाम निगम रख लिया।

ब्रह्म नहीं मिने संसार, मन वाचा रही इत हार।
ढूंढ़या कैयों कई प्रकार, पर चल्या न आगे विचार।।१०।।

यह निश्चित है कि पारब्रह्म इस संसार में नहीं हैं और उनका वर्णन करने में मन, वचन थक गए हैं। कईयों ने यहां कई तरह से खोजा और कोई निराकार से आगे नहीं जा सका।

कई अवतार किताबां कर, बहु ग्यानी कहावें तीर्थंकर।
औलिए अंबिए पैगंमर, हक की नाहीं काहूं खबर।।११।।

कई अवतारी पुरुषों ने अनेक ग्रन्थों की रचना कर डाली और बड़े-बड़े ज्ञानी तथा मुनिजन, तीर्थंकर नाम से जाने गए। मुसलमानों में भी औलिया, अंबिया, और पैगम्बर के नाम से जाने गए, परन्तु पारब्रह्म की खबर किसी को नहीं मिली।

Nijanand App

कह्या इतथें आगे सुंन, निराकार निरगुन।
भी कह्या निरंजन, ताथें अगम रह्या सबन।। १२ ।।

सबने यही कहा कि क्षर से आगे, शून्य से आगे, शून्य, निराकार, निरंजन, और निर्गुण बताया, इसीलिए उस पारब्रह्म तक कोई नहीं पहुंच पाया। वह अगम ही रहा।

कैयों ढूंढ़या होए दरवेस, फिरे जो देस विदेस।
पर पाया ना काहूं भेस, आगूं ला मकान कह्या नेस।। १३ ।।

कईयों ने साधु और फकीर का भेष धारण कर देश और विदेश में घूमकर खोजा। किसी भी भेष धारी ने परमात्मा को प्राप्त नहीं किया और अन्त में उन्होंने क्षर से आगे कुछ नहीं है, ऐसा कह दिया।

मंगलाचरन तमाम ।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ५८७ ।।

साखी–
दौड़ करी सिकंदरे, ढूंढ़या हैयाती आब।
बका अर्स पाया नहीं, उलंघ न सक्या ख्वाब।। १ ।।

सिकन्दर बादशाह ने अखण्ड अमृत रस पाने के वास्ते बहुत खोज की, किन्तु निराकार को पार नहीं कर सका और परमधाम नहीं पा सका।

हारे ढूंढ़ ऊपर तले, खुदा न पाया किन।
तब हक का नाम निराकार, कह्या निरंजन सुन।। २ ।।

कईयों ने ऊपर नीचे ढूंढ़ा, पर खुदा (पारब्रह्म) किसी को नहीं मिला। तब पारब्रह्म को निराकार निरंजन और शून्य कह दिया।

और नाम धरया हक का, बेचून बेचगून।
कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून।। ३ ।।

मुसलमानों ने भी खुदा की सूरत नहीं है कहकर उसे बेचून, बेचगून, बेसबी, बेनिमून कह दिया।

इत थें आए महंमद, ल्याए फुरमान हकीकत।
देखाए खोल माएने, अर्स हक सूरत।। ४ ।।

अब उस अखण्ड परमधाम से रसूल साहब आए और हकीकत का ज्ञान कुरान लाए तथा इसके छिपे रहस्यों को खोलकर पारब्रह्म की अमरद (किशोर) सूरत का बयान किया।

मैं आया हक का हुकम, हक आएगा आखिरत।
कौल किया हकें मुझसों, मैं ल्याया हक मारफत।। ५ ।।

रसूल साहब ने कहा कि मैं खुदा के हुकम से आया हूं और आखिर को खुद खुदा आएगा। खुदा ने आने का वायदा मेरे से किया है और उनकी पहचान के वास्ते मैं सब निशान लाया हूं।

उतरी अरवाहें अर्स से, रूहें बारे हजार।
और उतरी गिरो फरिस्ते, और कुंन से हुआ संसार।। ६ ।।

परमधाम से बारह हजार रूहें खेल में आई हैं। अक्षरधाम से ईश्वरीसृष्टि उतरी हैं। कुंन शब्द कहने से यह आम खलक (जीवसृष्टि) की उत्पत्ति हुई है।

Nijanand App

कह्या इतथें आगे सुंन, निराकार निरगुन।
भी कह्या निरंजन, ताथें अगम रह्या सबन।। १२ ।।

सबने यही कहा कि क्षर से आगे, शून्य से आगे, शून्य, निराकार, निरंजन, और निर्गुण बताया, इसीलिए उस पारब्रह्म तक कोई नहीं पहुंच पाया। वह अगम ही रहा।

कैयों ढूंढ़या होए दरवेस, फिरे जो देस विदेस।
पर पाया ना काहूं भेस, आगूं ला मकान कह्या नेस।। १३ ।।

कईयों ने साधु और फकीर का भेष धारण कर देश और विदेश में घूमकर खोजा। किसी भी भेष धारी ने परमात्मा को प्राप्त नहीं किया और अन्त में उन्होंने क्षर से आगे कुछ नहीं है, ऐसा कह दिया।

मंगलाचरन तमाम ।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ५८७ ।।

साखी–
दौड़ करी सिकंदरे, ढूंढ़या हैयाती आब।
बका अर्स पाया नहीं, उलंघ न सक्या ख्वाब।। १ ।।

सिकन्दर बादशाह ने अखण्ड अमृत रस पाने के वास्ते बहुत खोज की, किन्तु निराकार को पार नहीं कर सका और परमधाम नहीं पा सका।

हारे ढूंढ़ ऊपर तले, खुदा न पाया किन।
तब हक का नाम निराकार, कह्या निरंजन सुन।। २ ।।

कईयों ने ऊपर नीचे ढूंढ़ा, पर खुदा (पारब्रह्म) किसी को नहीं मिला। तब पारब्रह्म को निराकार निरंजन और शून्य कह दिया।

और नाम धरया हक का, बेचून बेचगून।
कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून।। ३ ।।

मुसलमानों ने भी खुदा की सूरत नहीं है कहकर उसे बेचून, बेचगून, बेसबी, बेनिमून कह दिया।

इत थें आए महंमद, ल्याए फुरमान हकीकत।
देखाए खोल माएने, अर्स हक सूरत।। ४ ।।

अब उस अखण्ड परमधाम से रसूल साहब आए और हकीकत का ज्ञान कुरान लाए तथा इसके छिपे रहस्यों को खोलकर पारब्रह्म की अमरद (किशोर) सूरत का बयान किया।

मैं आया हक का हुकम, हक आएगा आखिरत।
कौल किया हकें मुझसों, मैं ल्याया हक मारफत।। ५ ।।

रसूल साहब ने कहा कि मैं खुदा के हुकम से आया हूं और आखिर को खुद खुदा आएगा। खुदा ने आने का वायदा मेरे से किया है और उनकी पहचान के वास्ते मैं सब निशान लाया हूं।

उतरी अरवाहें अर्स से, रूहें बारे हजार।
और उतरी गिरो फरिस्ते, और कुंन से हुआ संसार।। ६ ।।

परमधाम से बारह हजार रूहें खेल में आई हैं। अक्षरधाम से ईश्वरीसृष्टि उतरी हैं। कुंन शब्द कहने से यह आम खलक (जीवसृष्टि) की उत्पत्ति हुई है।

Nijanand App

महंमद कहे मैं उमत पर, ल्याया हक फुरमान।
जो लेवे मेरी हकीकत, ताए होवे हक पेहेचान।।७।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैं खुदा से ब्रह्मसृष्टियों का सन्देशा लाया हूं और जो मेरे इन वचनों की हकीकत के रहस्य को समझेंगे उनको सब सच्चाई का पता चल जाएगा।

सात तबक तले जिमी के, तिन पर है नासूत।
तिन पर हैं कई फरिस्ते, तिन पर है मलकूत।।८।।

इस जमीन के नीचे सात लोक हैं (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) इनके ऊपर यह मृत्युलोक है। इसके ऊपर पांच लोकों (भुवर्लोक, स्वर्ग लोक, महर लोक, जन लोक और तप लोक) में देवी देवताओं का वास है। इन तेरह लोकों के ऊपर मलकूत बैकुण्ठ है।

ला हवा मलकूत पर, ला पर नूर मकान।
नूर पार नूर तजल्ला, मैं तहां से ल्याया फुरमान।।९।।

बैकुण्ठ के ऊपर निराकार का आवरण है। निराकार के ऊपर अक्षरधाम है। अक्षरधाम के आगे परमधाम है। मैं वहां से अक्षरातीत का सन्देशा लेकर आया हूं।

जबराईल पोहोंच्या नूर लग, मैं पोहोंच्या पार हजूर।
मैं वास्ते उमत के, बोहोत करी मजकूर।।१०।।

जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम तक पहुंचा। मैं श्री राजजी महाराज पारब्रह्म के पास परमधाम तक गया और पारब्रह्म के पास अपने मोमिनों के वास्ते बहुत वार्तालाप किया।

कह्या सुभाने मुझको, हरफ नब्बे हजार।
कह्या तीस जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अखत्यार।।११।।

पारब्रह्म ने मुझको नब्बे हजार हरफ कहे और हुकम दिया कि तीस हजार जाहिर करना। तीस हजार संकेत में जाहिर करने का अधिकार दिया।

बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए।
बका दरवाजे खोलसी, आखिर को हम आए।।१२।।

बाकी जो मारफत के तीस हजार रहे, उन्हें छिपे रखने का ही आदेश दिया और कहा कि आखिर वक्त में मैं स्वयं आकर अखण्ड घर की पहचान दूंगा।

कौल किया हकें मुझ से, हम आवेंगे आखिर।
ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर।।१३।।

रसूल साहब ने कहा कि पारब्रह्म ने आखिरत को आने का वायदा मुझे किया और यह भी कहा कि मेरी ब्रह्मसृष्टियां को मेरे आने पर मुझ पर यकीन आ जाए। ऐसी खबर जाकर दो।

होए काजी हिसाब लेयसी, दुनी को होसी दीदार।
भिस्त देसी कायम, रूहें लेसी नूर के पार।।१४।।

खुदा ने कहा कि मैं वक्त आखिरत को सबका न्यायाधीश बनकर आऊंगा और सबका न्याय चुकाकर दुनियां को दर्शन दूंगा। दुनियां को बहिश्तों में अखण्ड करके ब्रह्मसृष्टियों को अक्षर के पार घर (परमधाम) ले जाऊंगा।

Nijanand App

ईसा मेंहेदी जबराईल, और असराफील इमाम।
मार दज्जाल एक दीन करसी, खोलसी अल्ला कलाम।। १५ ।।

ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी, जबराईल, असराफील और इमाम मेंहदी दज्जाल को मार करके एक निजानन्द सम्प्रदाय में सबको लाएंगे और कुरान के रहस्यों को जाहिर करेंगे।

सो ए कौल माने नहीं, हिंदू मुसलमान।
महंमद कहे जाहेर, पर ए ल्यावें ना ईमान।। १६ ।।

इन भविष्यवाणियों को हिन्दू और मुसलमान दोनों ने नहीं माना। मुहम्मद साहब ने स्पष्ट कह दिया, परन्तु उनकी बातों पर किसी ने विश्वास नहीं किया।

तो भी न मानें हक सूरत, पातसाह अबलीस दिलों जिन।
कहे हक न किनहूं देखिया, खुदा निराकार है सुंन।। १७ ।।

जिनके दिलों पर अबलीस शैतान (नारद) बैठा है, वह पारब्रह्म के स्वरूप को नहीं मानते। वह कहते हैं कि उसे आज दिन तक किसी ने देखा ही नहीं। वह निराकार और शून्य है।

सोई कौल सरीयत ने, पकड़ लिया इनों से।
कौल तोड़त रसूल के, दुस्मन बैठा दिल में।। १८ ।।

हिन्दुओं की तरह ही शरीयत पर चलने वाले मुसलमानों ने उसी बात को पकड़ लिया। दिल के ऊपर अबलीस शैतान दुश्मन बना बैठा है, इसलिए रसूल साहब के वचनों को झूठा करने में लगा है।

आखिर आए रूहअल्ला, सो लीजो कर आकीन।
ए समझेगा बेवरा, सोई महंमद दीन।। १९ ।।

रसूल साहब ने कहा कि वक्त आखिरत को रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) आएंगे। उन पर विश्वास कर लेना। उनके बताए ज्ञान को वही समझेंगे जो आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के निजानन्द सम्प्रदाय पर विश्वास करेंगे।

जो कछू कह्या महंमदे, ईसे भी कह्या सोए।
ए माएने सो समझहीं, जो अरवा अर्स की होए।। २० ।।

जो कुछ रसूल साहब ने कहा, श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी ने वही कहा पर इन दोनों के सच्चे अर्थों को वही समझेंगे जो परमधाम की रूहें होंगी।

सात लोक तले जिमी के, मृत लोक है तिन पर।
इंद्र रुद्र ब्रह्मा बीच में, ऊपर विष्णु बैकुण्ठ घर।। २१ ।।

इस पृथ्वी के नीचे सात लोक (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) हैं। इन सातों के ऊपर मृत्युलोक है और इनके ऊपर पांच लोक देवी-देवताओं के हैं जिनमें इन्द्र, शंकरजी और ब्रह्माजी रहते हैं। उनके ऊपर चौदह लोकों के मालिक विष्णु भगवान का बैकुण्ठ धाम है।

निराकार बैकुण्ठ पर, तिन पर अछर ब्रह्म।
अछरातीत ब्रह्म तिन पर, यों कहे ईसे का इलम।। २२ ।।

बैकुण्ठ के ऊपर निराकार तथा निराकार के ऊपर अक्षर ब्रह्म है। अक्षरातीत ब्रह्म अक्षर से ऊपर है। ऐसा ज्ञान श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) का कहना है।

Nijanand App

ए बेवरा वेद कतेब का, दोनों की हकीकत।
इलम एकै बिध का, दोऊ की एक सरत।। २३ ।।

हिन्दुओं के वेद और मुसलमानों के कतेब दोनों में सृष्टि का विवरण एक जैसा है। दोनों का ज्ञान तथा कयामत का समय एक जैसा है। केवल भाषा का अन्तर है।

ईसे महंमद मेंहेदी का, इन तीनों का एक इलम।
हक नहीं ब्रह्मांड में, ए हुआ पैदा जिनके हुकम।। २४ ।।

मुहम्मद साहब, ईसा रूह अल्लाह (श्यामाजी श्री देवचन्द्रजी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी का तीनों का एक ही ज्ञान है। वह यह है कि जिसने हुकम देकर ब्रह्माण्ड को पैदा किया है, वह इस संसार में नहीं है।

दुनियां बीच ब्रह्मांड के, ऐसा होए जो इलम लिए ए।
हक नजीक सेहेरग से, बीच बका बैठावे ले।। २५ ।।

इस संसार में जिसको यह ज्ञान मिल जाए उसको पारब्रह्म सेहेरग से भी नजदीक हो जाता है। उसे निराकार से निकाल कर योगमाया के अखण्ड ब्रह्माण्ड में मुक्ति दे देते हैं।

करम कांड और सरीयत, ए तब मानें महंमद।
जब ईसा और इमाम, होवें दोऊ साहेद।। २६ ।।

कर्मकाण्ड के मानने वाले हिन्दू लोग और शरीयत के मानने वाले मुसलमान लोग मुहम्मद साहब को खुदा का पैगाम देने वाला तब सच्चा मानेंगे, जब ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी मुहम्मद की वाणी को सच कहेंगे।

हिंदू न माने कौल महंमद, न सरीयत मुसलमान।
यों जान चौथे आसमान से, आया ईसा देने ईमान।। २७ ।।

हिन्दू लोग मुहम्मद साहब के वचनों को सच्चा नहीं मानते और न ही शरीयत के मानने वाले मुसलमान कयामत को और इमाम मेंहदी के आने की भविष्यवाणी को मानते है, इसलिए ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) चौथे आसमान (लाहूत परमधाम) से उतरकर आए हैं जिससे लोगों को विश्वास आ जाए।

और आए इमाम, ऊपर अपनी सरत।
दे साहेदी महंमद की, करे इमामत।। २८ ।।

अपने किए वायदे के अनुसार इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) भी आए जो रसूल साहब की गवाही देते हुए आगे परमधाम ले जाने का रास्ता बताते हैं।

ईसा इमाम उमत को कहे, चलो हुकम माफक।
दे साहेदी महंमद की, दूर करे सब सक।। २९ ।।

ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी-श्री देवचन्द्रजी) और श्री प्राणनाथजी अपने सुन्दरसाथ को कहते हैं कि अपने धनी के हुकम के अनुसार चलो और रसूल मुहम्मद ने जो कहा है उसकी तारतम ज्ञान से कुरान के वचनों की गवाही दो और सबके संशय मिटाओ।

Nijanand App

पेहेले लिख्या फुरमान में, आवसी ईसा इमाम हजरत।
मारेगा दज्जाल को, करसी एक दीन आखिरत।। ३० ।।

रसूल साहब ने पहले से ही कुरान में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) और हजरत इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आएंगे और दज्जाल को मारकर दुनियां का झूठा ज्ञान मिटाकर सबको निजानन्द सम्प्रदाय में लाएंगे।

वेदों कह्या आवसी, बुध ईश्वरों का ईस।
मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस।। ३१ ।।

वेदों ने भी कहा कि सब ईश्वरों के मालिक जागृत बुद्धि के अवतार श्री प्राणनाथजी आएंगे और कलियुग की राक्षसी बुद्धि को समाप्त कर सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

बुध ब्रह्मसृष्टी वास्ते, आवसी कह्या वेद।
ए बात है उमत की, कोई और न जाने भेद।। ३२ ।।

वेदों ने भी कहा ब्रह्मसृष्टि के वास्ते बुधजी आएंगे। इस बात को ब्रह्मसृष्टि ही समझेगी और कोई नहीं समझेगा।

जो नेत नेत कह्या निगमे, सब लगे तिन सब्द।
माएने निराकार पार के, क्यों समझे दुनियां हद।। ३३ ।।

वेद ने जिस पारब्रह्म को 'नेति-नेति' कहा है, वह यहां नहीं है, कहां है? सब लोग इन्हीं शब्दों को पकड़कर बैठे हैं। यह निराकार (हद) के जीव निराकार के पार के वचनों को कैसे समझ सकते हैं?

पेहेले हवा कही मलकूत पर, सब सोई रहे पकड़।
पाई न हकीकत कुरान की, तो कोई सक्या न ऊपर चढ़।। ३४ ।।

बैकुण्ठ के ऊपर निराकार है। सब लोग इसी को ब्रह्म मानकर बैठे हैं। कुरान का ज्ञान नहीं जान पाने से निराकार के ऊपर कोई अपनी सुरता नहीं ले जा सका।

वेद कहे उत दुनी की, पोहोंचे न मन अकल।
कहे कतेब छोड़ सुरिया को, आगे पोहोंचे न अर्स असल।। ३५ ।।

वेद कहते हैं कि दुनियां की अक्ल पारब्रह्म को नहीं पहुंचती। कतेब ग्रन्थ कहते हैं कि ज्योति स्वरूप (सुरिया सितारा) को लांघकर अखण्ड परमधाम में किसी की बुद्धि नहीं जाती।

निगमें गम कही ब्रह्म की, क्यों समझे ख्वाबी दम।
सो ए करूं सब जाहेर, रूहअल्ला के इलम।। ३६ ।।

वेदों ने पारब्रह्म के बारे में जो बातें कही हैं, उसे सब संसार के जीव नहीं समझ सकते। श्री महामतिजी रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी) की तारतम वाणी से सब छिपे भेदों का रहस्य जाहिर कर रहे हैं।

कहूं ईसे के इलम की, जो है हकीकत।
हक बका अर्स उमत, जाहेर करी मारफत।। ३७ ।।

रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) के तारतम ज्ञान की हकीकत यह है कि इस ज्ञान से पारब्रह्म की, अखण्ड घर की तथा ब्रह्मसृष्टियों की पूर्ण पहचान हो जाती है।

Nijanand App

नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम।
सबमें उमत और दुनियां, सोई खुदा सोई ब्रह्म।। ३८ ।।

संसार में लोगों ने पारब्रह्म को पाने के लिए अलग-अलग नाम रख लिए और उन्हें प्राप्त करने के वास्ते अलग-अलग नियम (रीति-रिवाज) बना लिए। हिन्दू और मुसलमान दोनों की जमात में ब्रह्मसृष्टि उतरी है। इसे मुसलमान उम्मत कहते हैं। हिन्दू लोग ब्रह्मसृष्टि कहते हैं। मुसलमान खुदा कहते हैं। हिन्दू लोग ब्रह्म कहते हैं।

लोक चौदे कहे वेद ने, सोई कतेब चौदे तबक।
वेद कहे ब्रह्म एक है, कतेब कहे एक हक।। ३९ ।।

वेदों ने चौदह लोक कहे हैं। कतेब में चौदह तबक कहा है। वेद कहते हैं ब्रह्म एक है। कुरान कहता है हक एक है।

तीन सृष्ट कही वेद ने, उमत तीन कतेब।
लेने न देवे माएने, दिल आड़ा दुस्मन फरेब।। ४० ।।

वेद ने तीन सृष्टियां बताई हैं। कतेब ने तीन उम्मतें बताई हैं। यह शैतान अबलीस (नारद) दिलों में दुश्मन बनकर बैठा है, इसलिए हिन्दू और मुसलमानों को सीधे अर्थ लेने नहीं देता।

दोऊ कहे वजूद एक है, अरवा सबमें एक।
वेद कतेब एक बतावहीं, पर पावे न कोई विवेक।। ४१ ।।

हिन्दू मुसलमान दोनों कहते हैं कि शरीर एक हैं और सबके अन्दर प्राण एक है, जीव एक है। वेद-कतेब तो एक जैसा ही ज्ञान देते हैं, परन्तु कोई भी विचार करके इसे ग्रहण नहीं कर पाता।

जो कछू कह्या कतेब ने, सोई कह्या वेद।
दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लड़त बिना पाए भेद।। ४२ ।।

जो कुछ कतेब ने कहा वही ज्ञान वेद ने दिया। हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही ब्रह्म के उपासक हैं, किन्तु दोनों की जानकारी न होने के कारण आपस में लड़ते हैं।

बोली सबों जुदी परी, नाम जुदे धरे सबन।
चलन जुदा कर दिया, ताथें समझ न परी किन।। ४३ ।।

संसार के लोगों की भाषाएं अलग-अलग हैं। सबने अपनी-अपनी भाषाओं में पारब्रह्म के अलग-अलग नाम रख लिए हैं। अपनी-अपनी पूजा पद्धति और रहनी अलग-अलग कर ली और इसलिए सब उसको भुला बैठे।

ताथें हुई बड़ी उरझन, सो सुरझाऊं दोए।
नाम निसान जाहेर करूं, ज्यों समझे सब कोए।। ४४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हिन्दू मुसलमान की इस उलझन को मैं सुलझा देती हूं। मैं दोनों के परमात्मा, रीति-रिवाज और विधि-विधान सब जाहिर कर देती हूं, ताकि सभी सत्य को समझ लें।

विष्णु अजाजील फरिस्ता, ब्रह्मा मैकाईल।
जबराईल जोस धनीय का, रुद्र तामस अजराईल।। ४५ ।।

हिन्दू विष्णु भगवान कहते हैं, मुसलमान अजाजील फरिश्ता कहते हैं। हिन्दू जिसे ब्रह्म कहते हैं, मुसलमान उसे मैकाईल कहते हैं। हिन्दू लोग धनी का जोश कहते हैं, मुसलमान जबराईल कहते हैं। हिन्दू लोग शंकर भगवान कहते हैं, मुसलमान अजराइल कहते हैं।

Nijanand App

बुध ब्रह्मा मन नारद, मिल व्यासे बांधे करम।
ए सरीयत है वेद की, जासों परे सब भरम।।४६।।

हिन्दू लोग मानते हैं कि बुद्धि का देवता ब्रह्मा और मन का रूप नारद है। व्यासजी ने कर्मकाण्ड के बन्धनों में बांध दिया है। जिसे लोग समझ नहीं सके हैं। यह सारा संशय वेद के कर्मकाण्ड से है।

वेदें नारद कह्यो मन विष्णु को, जाको सराप्यो प्रजापत।
राह ब्रह्म की भान के, सबों विष्णु बतावत।।४७।।

वेदों ने विष्णु के मन को नारद कहा है। जिन्हें प्रजापति ब्रह्माजी ने अस्थिरता का (यकीन पर न खड़े रहना) श्राप दिया है, इसलिए यह नारद भगवान सबको पारब्रह्म के रास्ते से हटाकर विष्णु की उपासना के रास्ते बताते हैं।

दम अबलीस अजाजील को, जाए कुराने कही लानत।
सो बैठ दुनी के दिल पर, चलावे सरीयत।।४८।।

अबलीस (नारद) अजाजील का मन है। कुरान में लिखा है कि इसे लानत लगी है, इसलिए यह मन नारद दुनियां वालों के दिलों पर बैठकर पारब्रह्म की राह से भटका कर कर्मकाण्ड में फंसाता है।

अजाजील दम सब दिलों, बैठा अबलीस ले लानत।
बीच तौहीद राह छुड़ाए के, दाएं बाएं बतावत।।४९।।

शैतान अबलीस को जो अजाजील फरिस्ता के मन का स्वरूप है, लानत लगी है। वह अखण्ड पारब्रह्म के रास्ते से भटकाकर सबकी वृत्ति को इधर-उधर घुमा देता है।

सोई अबलीस सबन के, दिल पर हुआ पातसाह।
एही दुस्मन दुनी का, जिन मारी सबों की राह।।५०।।

वही शैतान अबलीस सबके दिलों पर बादशाह बनकर बैठा है और दुनियां का दुश्मन होने के कारण श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान नहीं करने देता और सबका रास्ता रोकता है।

मलकूत कह्या बैकुंठ को, मोहतत्व अंधेरी पाल।
अछर को नूरजलाल, अछरातीत नूरजमाल।।५१।।

हिन्दू जिसे बैकुण्ठ कहते हैं, मुसलमान उसे मलकूत कहते हैं। हिन्दू लोग जिसे मोहतत्व कहते हैं मुसलमान उसे अंधेरी पाल (जुलमत) कहते हैं। अक्षर को नूरजलाल और अक्षरातीत को नूरजमाल कहते हैं।

ब्रह्मसृष्ट कहे मोमिन को, कुमारका फरिस्ते नाम।
ठौर अछर सदरतुलमुंतहा, अरसुल्अजीम सो धाम।।५२।।

ब्रह्मसृष्टि को मोमिन कहते हैं। ईश्वरीसृष्टि को फरिश्ते कहते हैं। अक्षरधाम को सदरतुलमुंतहा कहते हैं और परमधाम को अर्श अजीम कहते हैं।

श्री ठकुरानी जी रूहअल्ला, महंमद श्री कृष्ण जी स्याम।
सखियां रूहें दरगाह की, सुरत अछर फरिस्ते नाम।।५३।।

श्री ठकुरानी जी को रूह अल्लाह कहते हैं। जिसकी महिमा शब्दों में न आए ऐसे मुहम्मद श्री कृष्णजी को श्याम कहा है। परमधाम की रहने वाली सखियों को कुरान में रूहें कहा है। अक्षर की सुरता को कुरान में फरिश्ते कहा है।

Nijanand App

बुध जी को असराफील, विजया अभिनन्द इमाम।
उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम।। ५४ ।।

जागृत बुद्धि को कुरान में असराफील कहा है। विजियाभिनन्द को कुरान में इमाम मेंहदी कहा है और इस तरह से सब अलग-अलग बोली और अलग-अलग नामों में उलझे हैं।

बाकी तो वेद कतेब, दोऊ देत हैं साख।
अन्दर दोऊ के गफलत, लड़त वास्ते भाख।। ५५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि वेद और कतेब, अर्थात् सभी पुराण और कुरान साक्षी के ग्रन्थ हैं, परन्तु हिन्दू मुसलमान पढ़ने वालों में ही अन्धकार का ज्ञान भरा है और इसलिए यह दोनों भाषा की लड़ाई लड़ रहे हैं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ६४२ ॥

कंसे काला-गृह में, किए वसुदेव देवकी बन्ध।
भानेज मारे आपने, ऐसा राज मद अन्ध।। १ ।।

कंस ने अपने बहन-बहनोई देवकी और वसुदेव को जेल में बन्द कर दिया और राज मद में अन्धे होकर अपने भांजों को मारा।

नूह काफर की बंध में, रहे साल चालीस।
बेटे मारे कई दुख दिए, तो भी काफर न छोड़ी रीस।। २ ।।

नूह पैगम्बर काफिरों के बन्ध में चालीस वर्ष तक रहे और उनके बेटों को मारकर बहुत कष्ट दिया फिर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ।

कहे वेद बैकुंठ से, आए चतुरभुज दिया दीदार।
वसुदेव तिन सिखापन, स्याम पोहोंचाया नंद द्वार।। ३ ।।

वेद कहते हैं बैकुण्ठ से चतुर्भुज विष्णु भगवान ने जेल में आकर दर्शन दिया और वसुदेवजी को सिखापन (शिक्षा) दिया कि जो अब बच्चा पैदा होगा, उसे नन्दजी के घर गोकुल में पहुंचा देना, इसलिए बालक श्री कृष्ण को नन्द जी के घर पहुंचा दिया।

मलकूत से फरिस्ता, नूह समझाया आए।
नसीहत कर पीछा फिर्या, नूहें स्याम दिया पोहोंचाए।। ४ ।।

मलकूत से फरिश्ते ने आकर नूह पैगम्बर को सब हकीकत किस्ती आदि के बारे में बताई और नूह पैगम्बर ने नसीहत के मुताबिक श्याम को पहुंचा दिया।

अहीरों की कोम में, जित महत्तर नन्द कल्यान।
सुख लिया बृज वधुएं, औरों न हुई पेहेचान।। ५ ।।

अहीर जाति की कौम में नन्दजी और कल्याणजी गांव के मुखिया थे। वहां पर बृज में गोपियों ने श्री कृष्णजी से प्रेम और आनन्द प्राप्त किया। दूसरे लोग उनको नहीं पहचान सके।

महत्तरों की कोम में, जित हूद कील सिरदार।
जोत रसूल टापू मिने, दिया जबराईलें आहार।। ६ ।।

महत्तर जाति के घर में हूद और कील मुखिया थे। जबराईल फरिश्ते ने आत्मिक आहार उनको पहुंचाई जो टापू में सहायता के लिए आए।

Nijanand App

बुध जी को असराफील, विजया अभिनन्द इमाम।
उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम।।५४।।

जागृत बुद्धि को कुरान में असराफील कहा है। विजियाभिनन्द को कुरान में इमाम मेंहदी कहा है और इस तरह से सब अलग-अलग बोली और अलग-अलग नामों में उलझे हैं।

बाकी तो वेद कतेब, दोऊ देत हैं साख।
अन्दर दोऊ के गफलत, लड़त वास्ते भाख।।५५।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि वेद और कतेब, अर्थात् सभी पुराण और कुरान साक्षी के ग्रन्थ हैं, परन्तु हिन्दू मुसलमान पढ़ने वालों में ही अन्धकार का ज्ञान भरा है और इसलिए यह दोनों भाषा की लड़ाई लड़ रहे हैं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ६४२ ॥

कंसे काला-गृह में, किए वसुदेव देवकी बन्ध।
भानेज मारे आपने, ऐसा राज मद अन्ध।।१।।

कंस ने अपने बहन-बहनोई देवकी और वसुदेव को जेल में बन्द कर दिया और राज मद में अन्धे होकर अपने भांजों को मारा।

नूह काफर की बंध में, रहे साल चालीस।
बेटे मारे कई दुख दिए, तो भी काफर न छोड़ी रीस।।२।।

नूह पैगम्बर काफिरों के बन्ध में चालीस वर्ष तक रहे और उनके बेटों को मारकर बहुत कष्ट दिया फिर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ।

कहे वेद बैकुंठ से, आए चतुरभुज दिया दीदार।
वसुदेव तिन सिखापन, स्याम पोहोंचाया नंद द्वार।।३।।

वेद कहते हैं बैकुण्ठ से चतुर्भुज विष्णु भगवान ने जेल में आकर दर्शन दिया और वसुदेवजी को सिखापन (शिक्षा) दिया कि जो अब बच्चा पैदा होगा, उसे नन्दजी के घर गोकुल में पहुंचा देना, इसलिए बालक श्री कृष्ण को नन्द जी के घर पहुंचा दिया।

मलकूत से फरिस्ता, नूह समझाया आए।
नसीहत कर पीछा फिर्या, नूहें स्याम दिया पोहोंचाए।।४।।

मलकूत से फरिश्ते ने आकर नूह पैगम्बर को सब हकीकत किस्ती आदि के बारे में बताई और नूह पैगम्बर ने नसीहत के मुताबिक श्याम को पहुंचा दिया।

अहीरों की कोम में, जित महत्तर नन्द कल्यान।
सुख लिया बृज वधुएं, औरों न हुई पेहेचान।।५।।

अहीर जाति की कौम में नन्दजी और कल्याणजी गांव के मुखिया थे। वहां पर बृज में गोपियों ने श्री कृष्णजी से प्रेम और आनन्द प्राप्त किया। दूसरे लोग उनको नहीं पहचान सके।

महत्तरों की कोम में, जित हूद कील सिरदार।
जोत रसूल टापू मिने, दिया जबराईलें आहार।।६।।

महत्तर जाति के घर में हूद और कील मुखिया थे। जबराईल फरिश्ते ने आत्मिक आहार उनको पहुंचाई जो टापू में सहायता के लिए आए।

Nijanand App

खेल हुआ जो लैल में, तकरार जो अव्वल।
उतरीं रूहें फरिस्ते, अरस के असल।।७।।

रात्रि में जो खेल हुआ उसके पहले भाग में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अपने मूल घर से खेल में उतरीं।

सात रात आठ दिन का, सुकें कह्या इन्द्र कोप।
भेजी वाए जल अगनी, प्रले को मृतलोक।।८।।

श्री शुकदेवजी ने सात रात और आठ दिन का इन्द्र कोप का वर्णन किया है। उसी राजा इन्द्र ने हवा, पानी, आग से मृत्युलोक का प्रलय कर देना चाहा।

तब गोवरधन तले, स्यामें राख्यो गोकुल।
जल प्रले के फिरवले, अंदर न हुआ दखल।।९।।

तब गोवर्द्धन पर्वत के नीचे श्री कृष्णजी ने गोकुल को बचा लिया। घनघोर बादल प्रलय की वर्षा करके वापस लौट गए, पर एक बूंद भी पानी गोकुल में नहीं गया।

सात रात आठ दिन का, हुआ तोफान हूद महत्तर।
राखी रूहें कोहतूर तले, डूब मुए काफर।।१०।।

सात रात और आठ दिन तक हूद नबी के घर भयंकर तूफान चलता रहा। वहां कोहतूर पर्वत के नीचे रूहों को बचाया और काफिर डूब गए।

हूद कह्या नंदजीय को, टापू बृज अखंड।
कोहतूर गोवरधन कह्या, न्यारा जो ब्रह्मांड।।११।।

कुरान में जिसे 'हूद' कहा है, भागवत में उसे 'नन्द' जी कहा है। कुरान में जिसे 'टापू' कहा है वह अखण्ड बृज' है। 'कोहतूर' ही गोवर्द्धन पर्वत है। यह भूमि इस ब्रह्माण्ड से अलग है।

जोगमाया की नाव कर, तित सखियां लई बुलाए।
सो सोभा है अति बड़ी, जित सुख लीला खेलाए।।१२।।

योगमाया की नाव बनाई और चालीस जुत्थ (समूह) बारह हजार सखियों को उसमें बिठा लिया। श्री कृष्णजी उस नाव को नित्य वृन्दावन में ले गए जहां रास की लीला खेलकर आनन्द लिया।

समारी किस्तीय को, तित मोमिन लिए चढ़ाए।
सो स्याम चिराग महंमद की, जिन मोमिन पार पोहोंचाए।।१३।।

नूह पैगम्बर ने किश्ती बनाकर चालीस जुत्थ मोमिनों को चढ़ा लिया। यह श्याम मुहम्मद का नूर है जिन्होंने मोमिनों को नाव में बिठाकर पार पहुंचा दिया।

वेदें कह्या स्याम बृज में, आए नंद के घर।
पीछे आए रास में, इत हुई नहीं फजर।।१४।।

वेदों ने कहा श्री कृष्णजी बृज में नंद के घर आए। उसके बाद रास में आए। उस रास की रात्रि का सवेरा नहीं हुआ।

कालमाया इंड पेहेले रच्यो, जोगमाया रचियो और।
फेर तीसरो कालमाया रच्यो, जाने एही इंड वाही ठौर।।१५।।

कालमाया के ब्रह्माण्ड की रचना पहले हुई। दूसरी बार योगमाया के ब्रह्माण्ड की रचना हुई और तीसरी बार यह कालमाया के ब्रह्माण्ड की रचना हुई, परन्तु संसार के सभी लोग जानते हैं कि यह वही ब्रह्माण्ड है और उसी ठिकाने खड़ा है।

Nijanand App

पेहेला तकरार हूद घर, दूजा किस्ती पर।
तीसरा भया फजर का, जाने वाही लैलत कदर।। १६ ।।

रात्रि के पहले तकरार के भाग में पहली बार हूद नबी के घर आए। दूसरी बार किश्ती से पार किया और तीसरा यह फजर का ब्रह्माण्ड बना। इनके भेदों के रहस्य को जानने वाले लैल तुल की रात्रि को एक ही रात्रि समझते हैं।

किस्ती नूह नबीय की, लिए अपने तन चढ़ाए।
स्याम बेटा नूह नबी का, फिरया किस्ती पार पोहोंचाए।। १७ ।।

नूह पैगम्बर ने तीन सौ हाथ लम्बी और चालीस हाथ चौड़ी किश्ती बनाई और अपने प्यारे चालीस जुत्थों (समूहों), अर्थात् बारह हजार ब्रह्म अंगनाओं को चढ़ा लिया और तब नूह के बेटे श्याम ने किश्ती को पार उतारा।

कहे कुरान डूबे काफर, नूह नबी तोफान।
मोमिन सबे किस्ती चढ़े, ए नई हुई जहान।। १८ ।।

कुरान में लिखा है कि उसके बाद नूह नबी के तूफान में सब काफिर डूब गए और मोमिन किश्ती में बैठकर पार चले गए। यहां माया का ब्रह्माण्ड नया बना है।

कह्या वेदें कृष्ण अवतार की, पेहले आए बृज के माहें।
रहे रात पीछली लग, फजर इंड तीसरा इहांए।। १९ ।।

वेदों ने कहा है (भागवत ने कहा है) कि श्री कृष्णजी पहले बृज भूमि में आए (वहां उन्होंने ग्यारह वर्ष बावन दिन लीला की)। उसके बाद एक रात्रि रास की लीला करने वृन्दावन गए। अब यहां तीसरा फजर का, अर्थात् जागनी लीला का ब्रह्माण्ड शुरू हुआ।

आगूं नूह तोफान के, दो तकरार भए लैल।
दोए पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल।। २० ।।

नूह नबी के तूफान से पहले दो बार बृज और रास की लीला हुई। दो लीलाओं के बाद में यह तीसरा जागनी का खेल रचा गया।

कहे महमंद दिन खुदाए का, दुनियां के साल हजार।
लैलत कदर की फजर को, पावे दुनियां सब दीदार।। २१ ।।

रसूल मुहम्मद कहते हैं कि दुनियां के साल हजार होते हैं तो खुदा का एक दिन होता है। उसके बाद हजार महीने से अधिक समय वाली रात्रि के बाद सवेरा होगा और सब दुनियां को परवरदिगार के दर्शन होंगे।

लैल बड़ी महीने हजार से, ए बताए दई सरत।
सोई फजर सदी अग्यारहीं, ए देखो दिन कयामत।। २२ ।।

यह रात्रि हजार महीने से अधिक लम्बी बताई है। उसके बाद सवेरा ग्यारहवीं सदी में होगा। इसी को कयामत जाहिर होने का समय कुरान में लिखा है।

ब्रह्मसृष्टी सखियां स्याम संग, खेले बृज रास के मांहें।
ए सुनियो तुम बेवरा, खेल फजर तीसरा इहांए।। २३ ।।

ब्रह्मसृष्टि श्री कृष्णजी के साथ बृज रास में खेली। वही ब्रह्मसृष्टियां जिनका वर्णन आ चुका है, सवेरे के उजाले में प्रीतम श्री प्राणनाथजी के साथ जागनी की लीला खेलने आई हैं।

Nijanand App

ए जो खेल देखाया रूहन को, ताके हुए तीन तकरार।
सो ए कहूं मैं बेवरा, ए जो फजर कार गुजार।। २४ ।।

रूहों को लैल तुल कदर की रात्रि में जो खेल दिखाया उसके तीन हिस्से हो गए। अब श्री महामतिजी तीसरे फजर की लीला की हकीकत बताते हैं।

कालमाया जोगमाया, बीच कहे प्रले दोए।
एह खेल भया तीसरा, माएने बुध जी बिना न होए।। २५ ।।

कालमाया और योगमाया की लीला में इन्द्र कोप का प्रलय और बृज से रास में जाते समय नूह तूफान का प्रलय हो गया। यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड फिर से रचा गया है। इस रहस्य को जागृत बुद्धि के बिना कोई जान नहीं सकता।

एक तोफान हूद के, और किस्ती बयान।
प्रले दोऊ जाहेर लिखे, मिने रसूल फुरमान।। २६ ।।

एक तूफान हूद नबी के घर, दूसरा किश्ती के ऊपर हुआ। इन प्रलय का ब्यौरा रसूल साहब के कुरान में लिखा है।

पेहेले भाई दोऊ अवतरे, एक स्याम दूजा हलधर।
स्याम सरूप ब्रह्म का, खेले रास जो लीला कर।। २७ ।।

भागवत में लिखा है कि पहले श्री कृष्ण और बलदाऊजी दोनों भाई खेल में उतरे। इनमें श्री कृष्णजी का स्वरूप ब्रह्म का है जिसने रास की लीला की।

दो बेटे नूह नबीय के, एक स्याम दूजा हिसाम।
स्यामें समारी किस्ती मिने, दिया रूहों को आराम।। २८ ।।

नूह नबी के दो बेटों का बयान है। एक श्याम दूसरा हिसाम। इनमें श्याम ने किश्ती के द्वारा मोमिनों को नित्य वृन्दावन में पहुंचाकर आराम दिया।

हलधर आतम नारायन, जो आया हिन्दुस्तान।
साहेब कह्या हिंदुअन का, संग गीता भागवत ग्यान।। २९ ।।

हलधर शेषशायी नारायण के अवतार हैं। हिन्द में विष्णु भगवान आए और श्री कृष्ण के नाम से जाने गए। अपने साथ गीता और भागवत का ज्ञान लाकर दिया।

बेटा नूह नबीय का, कह्या हिंद का बाप हिसाम।
सो तोफान के पीछे, आया हिंद मुकाम।। ३० ।।

नूह नबी का बेटा हिसाम (विष्णु भगवान श्री कृष्ण रणछोड़जी) हिन्दुस्तान का पूज्य भगवान कहलाया जिसने रास लीला के बाद में हिन्दुस्तान में आकर द्वारिका में राज्य किया।

स्याम रास से बरारब, ल्याया साहेब का फुरमान।
हकीकत अखण्ड धाम की, तिन बांधी सब जहान।। ३१ ।।

और रास लीला खेलने के बाद रास वाले श्री कृष्णजी अरब में रसूल साहब बनकर आए। पारब्रह्म का सन्देश कुरान लेकर आए जिसमें परमधाम की हकीकत बताई है। उन्होंने कयामत का दिन नजदीक है, कहकर दुनियां को शरीयत में बांधा।

Nijanand App

सो बुध जी सुर असुरन पे, लेसी वेद कतेब छीन।
कहे असुराई मेट के, देसी सबों आकीन।। ३२ ।।

अब जागृत बुद्धि के अवतार इमाम मेंहदी ने श्री प्राणनाथजी के रूप में प्रगट होकर हिन्दू और मुसलमानों से वेद और कतेब छीन लिया, अर्थात् वेद और कतेब के रहस्य (जो छिपी बातें थीं) उसकी हकीकत बताकर, जाहिरी अर्थ को लेकर झगड़ने वालों के झगड़े समाप्त कर दिए और उनके हाथ में कुछ नहीं रहा। बुधजी सबकी अज्ञानता को हटाकर, पारब्रह्म का यकीन, सबों के दिलों में दृढ़ कर देंगे।

बाप फारस रूम आरब का, कह्या फुरमाने स्याम।
फुरमान ल्याए वास्ते, रसूल धराया नाम।। ३३ ।।

कुरान में ईरान, रोम, फ्रांस, और अरब के मालिक के रूप में श्याम का नाम आता है। उन्हें अरब में खुदा का सन्देश कुरान लाने के कारण 'रसूल मुहम्मद' कहा गया।

वेद कतेब सबन पे, लेसी छीन बुध जी।
खोल माएने देसी मुक्त, बीच बैठ ब्रह्मसृष्टी।। ३४ ।।

वेद और कतेब (हिन्दुओं और मुसलमानों से) बुधजी सब छीन लेंगे और उनके छिपे भेदों का रहस्य ब्रह्मसृष्टि के बीच जाहिर करेंगे। जीवों को आवागमन के चक्कर से मुक्ति दिलाएंगे।

ए खिताब महंमद मेंहेदी पे, जाकी करे मुसाफ सिफत।
सो महंमद मेंहेदी खोलसी, आखिर अपनी बीच उमत।। ३५ ।।

कुरान में जिस ईमाम मेंहदी की सिफत का ऐसा वर्णन किया गया है, वही इमाम मेंहदी "श्री प्राणनाथजी" हैं जो आखिरत के समय में अपने रूह मोमिनों के बीच सभी धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य खोलेंगे।

अवतार तले विष्णु के, विष्णु करे स्याम की सिफत।
इन बिध लिख्या वेद में, सो आए स्याम बुध जी इत।। ३६ ।।

विष्णु भगवान के नीचे सभी देवी-देवता हैं। जितने अवतार हुए हैं वह सब उन्हीं के अंश हैं। वही विष्णु भगवान, अक्षर ब्रह्म के अन्तःकरण सबलिक में अखण्ड श्री कृष्णजी का ध्यान करते हैं। इस तरह से जो वेद में लिखा है वही श्याम, जागृत बुद्धि के रूप में श्री प्राणनाथजी के अन्दर प्रकट हुए हैं।

लिखी अनेकों बुजरकियां, पैगंमरों के नाम।
ए मुकरर सब महंमद पे, सो महंमद कह्या जो स्याम।। ३७ ।।

कुरान में बहुत सारे पैगम्बरों के नाम की महिमा बताई गई है। वह सभी पैगम्बरों की महानताएं इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के लिए ही निश्चित हैं। रसूल मुहम्मद ने इन्हीं के अन्दर अखण्ड श्री कृष्णजी श्यामजी का स्वरूप कहा है।

तीर्थंकरों सबों खोजिया, और खोज करी अवतार।
तो बुजरकी इत कहां रही, जो कायम न खोले द्वार।। ३८ ।।

बड़े-बड़े तीर्थंकर और बड़े-बड़े अवतारी पुरुषों ने पारब्रह्म को खोजा। जब वह अखण्ड दरवाजे ही नहीं खोल पाए तो उनकी महानता कहां रही?

अवतारों इत क्या किया, जो दई न बका की सुध।
तो लो द्वार मूंदे रहे, आए खोले विजया-अभिनंद-बुध।। ३९ ।।

अवतारी पुरुषों ने परमधाम की खबर नहीं दी, इसलिए जब तक विजियाभिनन्द बुधजी, श्री प्राणनाथजी प्रगट नहीं हो गए तब तक अखण्ड पार के दरवाजे बन्द ही रहे।

Nijanand App

सिफत सब पैगंमरों की, माहें लिखी अल्ला कलाम।
उमत सबे रानी गई, इनों किन को दिया पैगाम।।४०।।

कुरान में जिन सब पैगम्बरों की महिमा कही गई, उन सबके अनुयायी लोगों को सत न समझ आने के कारण, रद्द कर दिया गया, क्योंकि यह कैसे माना जाए कि पैगम्बरों ने सत का सन्देश दिया था, अर्थात् उनके सन्देश का दुनियां को क्या लाभ हुआ?

लिखी बड़ाई पैगंमरों, तिन की कहां गई नसीहत।
अजूं ठाढ़ी उनों की उमतें, देखो पत्थर आग पूजत।।४१।।

कुरान में जिन पैगंमरों की महिमा गाई गई है, उनके द्वारा दी गई सिखापन (शिक्षा) का क्या लाभ हुआ? जबकि आज भी उनको मानने वाले आग, पानी और पत्थर को पूजते हैं।

करी किताबें मनसूख, हुए जमाने रद।
ना मोमिन पीछे तोफान के, जो लो आखिर आए महंमद।।४२।।

इसलिए बीते हुए युगों को और पिछली किताबों को रद्द कर दिया गया, क्योंकि रास लीला के बाद जब तक 'वक्त आखिरत' को रूह अल्लाह मलकी मुहम्मद नहीं आ गए, तब तक परमधाम से मोमिन ब्रह्मसृष्टियां आई ही नहीं थीं।

रात बड़ी है रास की, कही सुके और व्यास।
ता बीच लीला अखंड, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टी प्रकास।।४३।।

शुकदेवजी और व्यासजी ने रास की रात्रि को बड़ी महिमा वाला बताया। उस रास की रात्रि में ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टियों ने आनन्द-विहार की लीला का अखण्ड आनन्द लिया।

मृतलोक और स्वर्ग की, ब्रह्मा और नारायन।
रास रात के बीच में, ए चारों दरम्यान।।४४।।

रास की रात को मृत्युलोक, स्वर्गलोक, ब्रह्माजी और नारायण की रात्रियों से भी बड़ा कहा गया है। रास रात्रि के सामने इन सबकी रात्रियां छोटी पड़ जाती हैं।

रात कही कदर की, बोहोत बड़ी है सोए।
फिरत चिरागें इनमें, चांद सूर ए दोए।।४५।।

कुरान में लैल तुल कदर की महिमा वाली रात्रि को बहुत बड़ा कहा है। इसमें चांद सूर्य दो दीपक जलते हुए घूम रहे हैं।

ब्रह्मलीला तीनों ब्रह्मांड की, सो जाहेर होसी सुख ब्रह्म।
दे मुक्त सब दुनी को, ब्रह्मसृष्टी लेसी कदम।।४६।।

बृज, रास और जागनी की तीनों लीलाओं के प्रगट हो जाने से ब्रह्मसृष्टियों को आनन्द प्राप्त हुआ। यह ब्रह्मसृष्टियां सारी दुनियां को मुक्ति देंगी और पारब्रह्म इन्हें अपने चरणों में लेंगे।

मोमिन तीनों तकरार में, जाहेर होसी लैलत कदर।
एक दीन होसी दुनी में, सुख कायम बखत फजर।।४७।।

रात्रि के तीनों भाग में मोमिनों ने जो लीला की है यह बात जब जाहिर हो जाएगी तो सारी दुनियां को रात के बाद फजर का आनन्द प्राप्त होगा और सब एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में आ जाएंगे।

Nijanand App

ब्रह्मसृष्टी प्रेम लच्छ में, कुमारिका ईश्वर।
तीसरी जीवसृष्ट दुनियां, वेद केहेत यों कर।।४८।।

वेद कहते हैं कि ब्रह्मसृष्टि प्रेम लक्षणा भक्ति वाली होगी। कुमारिका को ईश्वरीसृष्टि कहा है। तीसरी जीवसृष्टि दुनियां की है।

खास रूहें उमत की, और मुतकी दीन इसलाम।
और तीसरी खलक, ए तीनों कहे अल्ला कलाम।।४९।।

कुरान में रूहों को खास उम्मत, ईश्वरीसृष्टि को मुतकी (श्रद्धा वाले) और तीसरी जीवसृष्टि को आम खलक कहा गया है।

ब्रह्मसृष्टी अछरातीत से, ईश्वरी सृष्ट अछर से।
जीवसृष्ट बैकुंठ की, ए जो गफलत में।।५०।।

ब्रह्मसृष्टि अक्षरातीत से आई है। ईश्वरीसृष्टि अक्षर से आई है। जीवसृष्टि बैकुण्ठ से आई है जो अज्ञानता के कारण आवागमन के चक्कर में भटकती रहती है।

रूहें उमत कही लाहूती, और फरिस्ते जबरूती।
और आम खलक तारीक से, सो सब कुंन से मलकूती।।५१।।

कुरान में रूहों की जमात को लाहूत से, फरिश्तों को जबरूत से उतरे हैं लिखा है। आम खलक जो अन्धकार से कुंन कहने से पैदा हुई है, उसका ठिकाना मलकूत है।

बुद्ध नेहेकलंक आए के, मार कलजुग करसी दूर।
असुराई सबों मेट के, देसी मुक्त हजूर।।५२।।

वेद के अनुसार बुध निष्कलंक अवतार प्रगट होकर कलियुगी शक्तियों का नाश करेंगे और सबकी आसुरी बुद्धि को मिटाकर जागृत बुद्धि के ज्ञान से आवागमन का चक्कर छुड़ाकर अखण्ड कर देंगे।

विजिया-अभिनंद- बुध जी, लिखी एही सरत।
ब्रह्मसृष्ट जाहेर होए के, सब को देसी मुक्त।।५३।।

पुराण की भविष्यवाणी के अनुसार विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार अपने समय पर प्रगट होंगे। ब्रह्मसृष्टि जगत में जाहिर होकर सबको मुक्त करेगी।

ईसे के इलम से, होसी सबे एक दीन।
ए दज्जाल को मार के, देसी सबों आकीन।।५४।।

ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी) से सारा एक दीन हो जाएगा। यह शैतान को मार करके सबों को पारब्रह्म के प्रति यकीन दिलाएंगे। दज्जाल को मारने का अर्थ है आसुरी बुद्धि का नाश करना।

चरन रज ब्रह्मसृष्ट की, ढूंढ़ थके त्रैगुन।
कई विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन।।५५।।

ब्रह्मसृष्टि की चरण रज को ब्रह्मा, विष्णु और शंकर ढूंढ़कर थक गए। कई प्रकार की तपस्याएं कीं फिर भी नहीं मिली, ऐसा वेद की वाणी कहती है।

करसी पाक चौदे तबक को, लाहूती उमत।
देसी भिस्त सबन को, ऐसी कुरान में सिफत।।५६।।

कुरान में मोमिन उम्मत (आत्माओं) का चौथे आसमान (लाहूत) से आकर चौदह तबकों के जीवों को पाक करके अखण्ड बहिश्त देने का बयान है।

Nijanand App

बरस मास और दिन लिखे, सरत भांत बिध सब।
बड़ाई ब्रह्मसृष्ट की, ए जो लीला होत है अब।।५७।।

कुरान में वर्ष, महीना और दिन गिनकर बता दिए हैं। वह ब्रह्मसृष्टि कब किस तरह प्रगट होकर क्या लीला करेगी, स्पष्ट लिखा है। यह सब इन्हीं ब्रह्मसृष्टियों के लिए है जो आज यह लीला कर रही हैं।

साल मास और दिन लिखे, कौल कयामत हकीकत।
सिफत उमत मोमिनों, ए जो जाहेर होत आखिरत।।५८।।

कयामत की हकीकत कुरान में वर्ष, महीना और दिनों में लिखी है। उन ब्रह्मात्माओं की महिमा बार-बार गाई है जो वक्त आखिरत में प्रगट होगी।

विजिया-अभिनंद-बुध जी, और नेहकलंक अवतार।
कायम करसी सब दुनियां, त्रिगुन को पोहोंचावें पार।।५९।।

विजियाभिनंद बुध निष्कलंक अवतार संसार में प्रगट होकर सबको अखण्ड करेंगे तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी उनके कर्त्तव्यों से मुक्त कर पार पहुंचा देंगे।

महंमद मेंहदी आवसी, और ईसा हजरत।
ले हिसाब भिस्त देसी सबों, कायम करसी इन सरत।।६०।।

प्रत्येक ग्रन्थ में वर्णन है कि ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी आएंगे और सबका हिसाब लेकर सबको अखण्ड बहिश्त देंगे।

अखंड वतन इत जाहेर, और जाहेर सुख ब्रह्म।
बुध विजिया-अभिनंद जाहेर, जाहेर काटे दुनी के करम।।६१।।

विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार श्री प्राणनाथजी तारतम वाणी के ज्ञान से अखण्ड परमधाम के आनन्द और पारब्रह्म के सुखों को जाहिर करेंगे तथा सारे संसार के कर्मों को मिटा देंगे, ऐसा लिखा है।

भिस्त होसी इत जाहेर, और जाहेर दोजक।
काजी कजा इत जाहेर, और जाहेर होसी सबों हक।।६२।।

कुरान में लिखे अनुसार श्री प्राणनाथजी की कृपा से बहिश्त क्या है, दोजख क्या है, सब ज्ञान यहीं जाहिर हो जाएगा। वह यहां सबके काजी न्यायाधीश बनकर सबको सच्चा न्याय प्रदान कर एक पारब्रह्म की हकीकत सबको जाहिर कर देंगे।

कई हुए ब्रह्मांड कई होएसी, पर ए लीला न हुई कब।
विलास बड़ो ब्रह्मसृष्ट में, सुख नयो पसरसी अब।।६३।।

अक्षर ब्रह्म के द्वारा रचित कई ब्रह्माण्ड ऐसे हो गए और कई बनते रहेंगे, पर यह जागनी की लीला किसी में नहीं हुई और न होगी। इस ब्रह्माण्ड में ब्रह्मसृष्टियों ने जागकर खेल देखा है, इसलिए उनकी कृपा से एक नए तरीके का सुख सब में जाहिर होकर फैल जाएगा।

कई दुनी हुई कई होएसी, पर कबूं न जाहेर उमत।
दे भिस्त चौदे तबकों, करें बखत रोज कयामत।।६४।।

कई दुनियां हुई हैं और कई होंगी, पर रूहों की जमात कभी नहीं आई और न आएगी। अब वक्त रोज कयामत के जाहिर होकर चौदह तबकों के जीवों को मुक्ति देंगी।

Nijanand App

रसम करम कांड की, हुती एते दिन।
अब इलम बुधजीयके, दई सबों प्रेम लछन।। ६५ ।।

इतने दिन तक कर्मकाण्ड का नियम चलता रहा। अब जागृत बुद्धि के ज्ञान ने सबको प्रेम लक्षणा भक्ति दी।

सरीयत बंदगी करे फरज ज्यों, सो करते एते दिन।
महंमद मेंहेदी जाहेर होए के, इस्क दिया सबन।। ६६ ।।

कुरान के अनुसार इतने दिन तक शरीयत की बन्दगी चलती रही। अब मुहम्मद मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने इश्क की बन्दगी करनी सिखायी।

पेहेचान बुध नेहेकलंक, और पेहेचान ब्रह्मसृष्ट।
याकी अस्तुत निगम करे, किन सुन्या न देख्या दृष्ट।। ६७ ।।

तारतम वाणी से बुध निष्कलंक अवतार और ब्रह्मसृष्टियों की पहचान हो गई। जिनकी स्तुति वेद करते हैं और कहते हैं कि आज तक इन आत्माओं के दर्शन किसी को नहीं हुए और न इसकी बाबत किसी ने कुछ ज्ञान दिया।

पेहेचान महंमद रूहअल्ला, और पेहेचान मोमिन।
तोरा सबों पर इनका, यों कहे कुरान रोसन।। ६८ ।।

कुरान के ज्ञान के अनुसार मुहम्मद रूह अल्लाह और मोमिनों की पहचान हुई। अब सब दुनियां पर इन्हीं का हुकम चलेगा।

तीन सरूप कहे वेद ने, बाल किसोर बुढ़ापन।
बृज रास प्रभात को, ए बुध जी को रोसन।। ६९ ।।

वेदों ने बाल, किशोर और बुढ़ापे की लीलाओं की चर्चा की है। बृज, रास और जागनी की लीला बताकर बुधजी ने इस छिपे ज्ञान को जाहिर कर दिया।

ब्रह्मलीला ब्रह्मसृष्ट में, चढ़ती चढ़ती कहे वेद।
प्रेम लच्छ दोऊ कहे, किए जाहेर बुधजीएं भेद।। ७० ।।

वेद शास्त्रों में ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि की बृज, रास और जागनी की लीला बताकर बुधजी ने इस छिपे ज्ञान को जाहिर कर दिया।

साहेब के संसार में, आए तीन सरूप।
सो कुरान यों केहेवहीं, सुन्दर रूप अनूप।। ७१ ।।

श्री राजजी महाराज संसार में तन धारण कर तीन स्वरूप में आए। बृज में बाल स्वरूप, रास में किशोर और जागनी में बूढ़ापन। (श्री राजजी महाराज)। कुरान में भी खुदा के सुन्दर स्वरूपों का वर्णन है।

एक बाल दूजा किसोर, तीसरा बुढ़ापन।
सुन्दरता सुग्यान की, बढ़त जात अति घन।। ७२ ।।

पहली बार बृज में बाल स्वरूप में, दूसरी बार रास में किशोर स्वरूप में और तीसरी बार विजियाभिनंद बुध निष्कलंक अवतार श्री प्राणनाथजी आए। इस तीसरे स्वरूप में ज्ञान की बढ़ोतरी की सुन्दरता है जो पल-पल बढ़ता जा रहा है।

Nijanand App

ज्यों चढ़ती अवस्था, बाल किसोर बुढ़ापन।
यों बुध जाग्रत नूर की, भई अधिक जोत रोसन।।७३ ।।

जिस तरह अवस्था बढ़ती है, पहले बालक, फिर किशोर फिर बूढ़ापन, उसी प्रकार जागृत बुद्धि का नूर भी बृज, रास और जागनी एक के ऊपर एक बढ़ा।

ए केहेती हों प्रगट, ज्यों रहे न संसे किन।
खोल माएने मगज मुसाफ के, सब भाने विकल्प मन।।७४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं बार-बार इसलिए कहती हूं कि किसी का संशय बाकी न रहे। अन्तिम स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने पुराण आदि धर्म-ग्रन्थों के छिपे रहस्य को खोला और सबके संशय मिटा दिए।

श्री कृष्णजीएं बृज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टी मन काम।
सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाय स्याम।।७५ ।।

श्री कृष्णजी ने बृज और रास में ब्रह्मसृष्टियों की इच्छा पूर्ण की वह श्री कृष्णजी बरारब (अरब) में आकर रसूल मुहम्मद कहलाए और वही पारब्रह्म का फरमान (कुरान) लेकर आए।

चौथा सरूप ईसा रूहअल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम।
पांचमां सरूप निज बुध का, खोल माएने भए इमाम।।७६ ।।

चौथा स्वरूप ईसा रूह अल्लाह (श्यामाजी महारानी श्री देवचन्द्रजी) जो तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम की हकीकत लेकर आए। पांचवां स्वरूप जागृत बुद्धि का है जिन्होंने धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य को खोला और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी कहलाए।

ए भी पांच सरूप का, है बेवरा मांहें कुरान।
जो कछू लिख्या भागवत में, सोई साख फुरमान।।७७ ।।

इन पांचों स्वरूपों का विवरण कुरान में भी है। जो कुछ भागवत में लिखा है वही कुरान में लिखा है।

एही बड़ी इसारत, इमाम की पेहेचान।
सबको सब समझावहीं, यों केहेवत है कुरान।।७८ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी की यही पहचान होगी कि वह सभी धर्म वालों को उनके ही धर्म-ग्रन्थों से मायने खोलकर समझाएंगे, ऐसा कुरान में लिखा है।

वेद कहे बुध इनपे, और बुध सुपन।
एही सब को जगाए के, देसी मुक्त त्रैगुन।।७९ ।।

वेद कहते हैं कि जागृत बुद्धि केवल श्री प्राणनाथजी के पास है और संसार के सब धर्माचार्यों के पास सपने की बुद्धि है। यही श्री प्राणनाथजी सब संसार के लोगों के संशय मिटाकर त्रिगुण को मुक्ति देंगे।

हिंदू कहें धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम।
कह्या हमारा होएसी, साहेब आगे हम।।८० ।।

हिन्दू कहते हैं कि पारब्रह्म आएंगे। ऐसी भविष्यवाणी वेदों में लिखी है। वह कहते हैं कि हमारे सारे काम पूरे हो जाएंगे जब हम उनके सामने होंगे।

मुसलमान कहें आवसी, सो हमारा खसम।
लिख्या है कतेब में, आगे नबी हमारा हम।।८१ ।।

मुसलमान कहते हैं कि हमारे खसम आएंगे और कतेब में लिखा है कि हमारे रसूल साहब हमारी सिफारिश कर उनसे मिलवा देंगे।

Nijanand App

ईसा अल्ला आवसी, कहे किताब फिरंगान।
किल्ली भिस्त जो याही पे, खोल देसी नसरान।। ८२ ।।

इंजील (बाइबल) कहती है कि ईसा रूह अल्लाह आएंगे और बहिश्तों की कुंजी उनके हाथ में होगी। वह ईसाइयों को पहले बहिश्त में भेजेंगे।

यों लड़ के लोक जुदे हुए, पर खसम न होवे दोए।
रब आलम का ना टरे, जो सिर पटके कोए।। ८३ ।।

इस तरह से संसार के लोग आपस में लड़-झगड़कर अलग हो गए, परन्तु पारब्रह्म दो नहीं एक ही है। चाहे कोई कितना भी सिर पटक ले, सारी सृष्टि का स्वामी एक ही है, उसे बदल नहीं सकते।

यों सब जाहेर पुकारहीं, कोई माएने ना समझत।
ए माएने मगज इमाम पे, दूजा कौन खोले मारफत।। ८४ ।।

यह सब जाहिरी लोग शोर मचाते हैं, परन्तु अपने ग्रन्थों के भावार्थ नहीं समझते। इन सब धर्मग्रन्थों के रहस्य खोलने की शक्ति इन्हीं इमाम मेंहदी के पास है कोई दूसरा इन रहस्यों को कैसे खोल सकता है?

यों आए तीनों सरूप, धर धर जुदे नाम।
सो कारन ब्रह्म उमत के, गुझ जाहेर किए अलाम।। ८५ ।।

इस तरह से पारब्रह्म के तीन स्वरूप संसार में अलग-अलग नाम से आए और अन्त में ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते सारे छिपे रहस्य जाहिर किए।

सुर असुर अदयाप के, करत लड़ाई दोए।
ए द्वेष साहेब बिना, मेट ना सके कोए।। ८६ ।।

हिन्दू और मुसलमान, मोमिन और काफिर दोनों शुरू से आपस में लड़ाई करते थे। इस झगड़े को स्वामी श्री प्राणनाथजी के बिना कौन मिटा सकता है?

द्वेष जो लाग्या पेड़ से, सब सोई रहे पकर।
साधो द्वेष मिटावने, उपाय थके कर कर।। ८७ ।।

इन दोनों में झगड़ा शुरू से ही चल रहा है और उनकी औलादें भी नकल करती जा रही हैं। बहुत से साधु, सन्त और फकीरों ने इस झगड़े को मिटाने के उपाय किए, परन्तु झगड़ा नहीं मिटा।

कई अवतारों बल किए, कई बल किए तीर्थंकर।
द्वेष अद्यापी ना मिटया, कई फरिस्ते पैगंमर।। ८८ ।।

कई अवतारी पुरुष, ऋषि, मुनि, तीर्थंकरों ने अपनी शक्ति दिखाई। इसी तरह से मुसलमानों में भी कई फरिश्तों और पैगम्बरों ने साहस किया, किन्तु शुरू से पैदा इस झगड़े को मिटा नहीं सके।

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन।
सो सब का झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन।। ८९ ।।

अब श्री प्राणनाथजी विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार आखरुल्जमा इमाम मेंहदी इस संसार में तीन कार्य करने आए हैं। वह हिन्दू, मुसलमान और सभी के झगड़े मिटाएंगे और एक पारब्रह्म की पूजा कराएंगे। दूसरा काम हिन्दुओं को वेद और मुसलमानों को कतेब के जाहिर अर्थों में भटकना समाप्त कर हकीकत के रहस्य बताकर सत्य की राह पर चलाना है। तीसरा काम नसली पुत्र बिहारीजी और नजरी पुत्र श्री मेहराज ठाकुर (श्री प्राणनाथजी) के बीच गद्दी का झगड़ा मिटाना। यही तीनों काम उन्होंने पूरे

Nijanand App

कर दिये। जाहिरी गद्दी को बिलकुल बन्द कर दिया जो बिहारीजी के बाद चली ही नहीं और अपना ठिकाना मोमिनों का दिल बताया और सबसे पहले अपने ही आदेश से अपने ही सिंहासन पर श्री कुलजम सरूप साहब का गादी अभिषेक किया।

ब्रोध सुर असुरों को, दूजे जादे पैगंमर और।
वेद कतेब छुड़ावने, धनी आए इन ठौर।। ९० ।।

पहले हिन्दू मुसलमानों के झगड़े मिटाए। दूसरा नसली और नजरी बेटों में गादी के झगड़े मिटाए और तीसरा वेद कतेब के जाहिरी अर्थों से छुड़ाकर छिपे रहस्यों को बताकर सत्य का मार्ग दिखाकर संसार में एक रूपता कायम की, अर्थात् निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) एक दीन में लाए।

दो बेटे रूह अल्लाह के, एक नसली और नजरी।
भई लड़ाई इन वास्ते, मसनन्द पैगंमरी।। ९१ ।।

रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी के दो बेटे नसली बिहारीजी और नजरी मेहेराज ठाकुर हुए। इन दोनों में पैगम्बरी गादी (श्री देवचन्द्रजी की गादी) के वास्ते आपस में झगड़ा हुआ।

वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान।
मूल माएने उलटाए के, कई जाहेर किए तोफान।। ९२ ।।

हिन्दुओं के पास वेद का ज्ञान आया। मुसलमानों के पास कुरान का ज्ञान आया। इन दोनों ने ही धर्म-ग्रन्थों के मूल सार के अर्थों को उलटकर संसार में कई तरह के झगड़े पैदा कर दिए थे।

मेटन लड़ाई बन्दन की, और जादे पैगंमर।
धनी आए वेद छुड़ावने, ए तीन बातें चित्त घर।। ९३ ।।

इन सब संसार के लोगों की उपासना के झगड़े तथा पैगम्बरों को मानने वालों से जाहिरी अर्थ छुड़ाकर छिपे (बातूनी) रहस्य बताकर झगड़ा समाप्त किया। इन तीनों बातों के वास्ते श्री प्राणनाथजी आए।

जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध।
मन चाह्या सरूप होए के, कारज किए सब सिध।। ९४ ।।

जिसके दिल में जैसा भाव रहा, उसको उसी रूप में श्री प्राणनाथजी मिले। जिसके मन में जैसी भावना थी वैसा ही स्वरूप धारणकर उसकी सब मनोकामना पूर्ण की।

सो बुध इमाम जाहेर भए, तब खुले सब कागद।
सुख तो सांचों को दिए, और झूठे हुए सब रद।। ९५ ।।

अब बुध निष्कलंक अवतार इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी जाहिर हो गए हैं। जो ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि हैं उन्हें घर की सुध देकर अखण्ड सुख दिए और बाकी दुनियां के झूठे प्रचार रद्द कर दिए।

वेदांत गीता भागवत, दैयां इसारतां सब खोल।
मगज माएने जाहेर किए, माहें गुझ हुते जो बोल।। ९६ ।।

वेद, गीता, भागवत सबके छिपे भेद खोल दिए।

अंजील जंबूर तौरेत, चौथी जो फुरकान।
ए मायने मगज गुझ थे, सो जाहेर किए बयान।। ९७ ।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान के छिपे भेद भी जाहिर कर दिए।

Nijanand App

ए कागद उमत ब्रह्मसृष्ट को, सोभा आई तिन पास।
माएने इन रोसन किए, तब झूठे भए निरास।। ९८ ।।

यह सब ग्रन्थ मोमिनों की शोभा के वास्ते आये थे। यह शोभा उनको मिली। उन्होंने ही इनके छिपे भेद खोले। दुनियां वाले झूठे प्रचारक देखते रह गए और उन्हें निराश होना पड़ा।

जब हक हादी जाहेर भए, और अर्स उमत।
सब किताबें रोसन भई, ऊगी फजर मारफत।। ९९ ।।

जब श्री राजजी, श्री श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टि जाहिर हो गए, तब सब ग्रन्थों के छिपे रहस्य खुल गए तथा सबके संशय मिट गए और ज्ञान का सवेरा हो गया।

कहे काफर असुर एक दूसरे, करते लड़ाई मिल।
फुरमान जब रोसन भया, तब पाक हुए सब दिल।। १०० ।।

हिन्दू और मुसलमान एक-दूसरे से लड़ाई-झगड़ा करते थे। कुरान और भागवत के सब सच्चे रहस्य जाहिर हो गए, तो दोनों मन का मैल मिटाकर इकट्ठे निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) में आए।

रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन।
रब आलम जाहेर भए, सुर असुरों ग्रहे चरन।। १०१ ।।

अज्ञानता का अन्धकार मिटा व ज्ञान का उजाला हुआ। सारे जगत के मालिक पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी प्रगट हुए। हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उनके चरण पकड़ लिए।

हांसी हुई अति बड़ी, झूठों बड़ी जलन।
मेला अति बड़ा हुआ, आखिर सुख सबन।। १०२ ।।

थोथी बातों का प्रचार करने वालों और लड़ने वालों की बड़ी हंसी हुई। उनको बड़ी जलन हुई। आखिरत में बड़ा भारी मेला हुआ। जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सबको सुख मिला।

बिना सुख कोई न रह्या, सब मन काम पूरन।
अंधेरी कछू न रही, भए चौदे तबक रोसन।। १०३ ।।

सबकी मनोकामना पूरी कर सबको सुख दिए व चौदह लोकों की अज्ञानता मिटाकर ज्ञान का उजाला कर दिया।

मोह तत्व अहं उड़यो, जो परदा ऊपर त्रैगुण।
ए सब बीच द्वैत के, निराकार निरंजन सुंन।। १०४ ।।

त्रिगुण (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के ऊपर जो अहंकार का परदा पड़ा था, श्री प्राणनाथजी की तारतम वाणी से उड़ गया। सबको पहचान हो गई। शून्य, निराकार, निर्गुण, निरंजन यह सब माया के ब्रह्माण्ड हैं।

वचन थके सब इतलों, आगे चले न मनसा वाच।
सुपन सृष्ट खोजे सास्त्रों, पर पाया न अखंड घर सांच।। १०५ ।।

सबके धर्मग्रन्थ यहीं तक आकर थके पड़े थे। जीवसृष्टि ने सब शास्त्रों को मन-वचन से खोजा, पर अखण्ड घर की प्राप्ति किसी को नहीं हुई।

अछरब्रह्म जाहेर किया, जित उतपत फरिस्तों नूर।
घर जबराईल जबरूत, जो नेहेचल सदा हजूर।। १०६ ।।

अक्षरब्रह्म की सत्ता जाहिर हो गई जहां से ईश्वरीसृष्टि व नूरी फरिश्तों की उत्पत्ति है। जबराईल फरिश्ते का ठिकाना अक्षरधाम अखण्ड है जो सदा पारब्रह्म की आज्ञा के अधीन है।

Nijanand App

और धाम अछरातीत, नूरतजल्ला अर्स।
रूह बड़ी ब्रह्मसृष्ट की, जो है अरस-परस।। १०७ ।।

परमधाम और अक्षरातीत को कुरान में नूर तजल्ला और अर्शे अजीम कहते हैं। यहां पर बड़ी रूह श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियों का अद्वैत सम्बन्ध है, अर्थात् एक ही तन है और एकदिली है।

ए लीला सब प्रगट करी, महंमद ईसा बुध जी आए।
ए तीनों सरूपों मिल के, सबको दिए जगाए।। १०८ ।।

रसूल मुहम्मद, मलकी मुहम्मद (श्री देवचन्द्रजी) और नूरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) तीनों स्वरूपों के मिलने पर सबके संशय मिट गए और सबको परमधाम की लीला का रहस्य मालूम हो गया।

भिस्त दई सबन को, चढ़े अछर नूर की दृष्ट।
कायम सुख सबन को, सुपन जीव जो सृष्ट।। १०९ ।।

जीवसृष्टि जो सपने की है उसको अक्षर की नूरी नजर (योगमाया) में बहिश्तें कायम कर अखण्ड कर दिया।

दूजी सृष्ट जो जबरूती, जो ईश्वरी कही।
अधिक सुख अछर में, दिल नूर चुभ रही।। ११० ।।

दूसरी सृष्टि जो ईश्वरीसृष्टि है, जिसका घर अक्षरधाम है, उनको भी नित्य अखण्ड सुख प्राप्त हुआ।

और उमत जो लाहूती, ब्रह्मसृष्टी घर धाम।
इन को सुख देखाए के, पूरन किए मन काम।। १११ ।।

ब्रह्मसृष्टियां, जो परमधाम की हैं जिनको कुरान में लाहूती उम्मत कहा है, इनको खेल के सुख दिखाकर इनकी मनोकामनाएं पूरी कीं।

मुक्त दई त्रैगुन फरिस्ते, जगाए नूर अछर।
रूहें ब्रह्मसृष्ट जागते, सुख पायो सचराचर।। ११२ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश को मुक्ति दी और इनको अक्षर के अव्याकृत में अखंड किया। मोमिनों ने जागकर के जिस संसार को देखा, वहां के चल-अचल सभी प्राणियों को अखण्ड सुख दिया।

करनी करम कछू ना रह्या, धनी बड़े कृपाल।
सो बुधजीएं मारया, जो त्रैलोकी का काल।। ११३ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज बड़े कृपालु हैं। उन्होंने बिना तपस्या, कठोर साधना की करनी के सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान की। श्री प्राणनाथजी (बुधजी) ने तीनों लोक (मृत्यु, स्वर्ग, बैकुण्ठ) अर्थात् चौदह लोकों को अखण्ड कर दिया और सबके जन्म-मरण का चक्कर समाप्त कर दिया।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७५५ ॥

कुरान की कहूं

अब कहूं कुरान की, सब विध हकीकत।
मगज मायने खोले बिना, क्यों पाइये मारफत।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि अब कुरान के यथार्थ ज्ञान को बतलाता हूं। इसके गुझ (गुप्त) छिपे रहस्य खोले बिना परमधाम के मारफत का ज्ञान, अर्थात् पारब्रह्म की पहचान सम्भव नहीं है।

Nijanand App

और धाम अछरातीत, नूरतजल्ला अर्स।
रूह बड़ी ब्रह्मसृष्ट की, जो है अरस-परस।। १०७ ।।

परमधाम और अक्षरातीत को कुरान में नूर तजल्ला और अर्शे अजीम कहते हैं। यहां पर बड़ी रूह श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियों का अद्वैत सम्बन्ध है, अर्थात् एक ही तन है और एकदिली है।

ए लीला सब प्रगट करी, महंमद ईसा बुध जी आए।
ए तीनों सरूपों मिल के, सबको दिए जगाए।। १०८ ।।

रसूल मुहम्मद, मलकी मुहम्मद (श्री देवचन्द्रजी) और नूरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) तीनों स्वरूपों के मिलने पर सबके संशय मिट गए और सबको परमधाम की लीला का रहस्य मालूम हो गया।

भिस्त दई सबन को, चढ़े अछर नूर की दृष्ट।
कायम सुख सबन को, सुपन जीव जो सृष्ट।। १०९ ।।

जीवसृष्टि जो सपने की है उसको अक्षर की नूरी नजर (योगमाया) में बहिश्तें कायम कर अखण्ड कर दिया।

दूजी सृष्ट जो जबरूती, जो ईश्वरी कही।
अधिक सुख अछर में, दिल नूर चुभ रही।। ११० ।।

दूसरी सृष्टि जो ईश्वरीसृष्टि है, जिसका घर अक्षरधाम है, उनको भी नित्य अखण्ड सुख प्राप्त हुआ।

और उमत जो लाहूती, ब्रह्मसृष्टी घर धाम।
इन को सुख देखाए के, पूरन किए मन काम।। १११ ।।

ब्रह्मसृष्टियां, जो परमधाम की हैं जिनको कुरान में लाहूती उम्मत कहा है, इनको खेल के सुख दिखाकर इनकी मनोकामनाएं पूरी कीं।

मुक्त दई त्रैगुन फरिस्ते, जगाए नूर अछर।
रूहें ब्रह्मसृष्ट जागते, सुख पायो सचराचर।। ११२ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश को मुक्ति दी और इनको अक्षर के अव्याकृत में अखंड किया। मोमिनों ने जागकर के जिस संसार को देखा, वहां के चल-अचल सभी प्राणियों को अखण्ड सुख दिया।

करनी करम कछू ना रह्या, धनी बड़े कृपाल।
सो बुधजीएं मारया, जो त्रैलोकी का काल।। ११३ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज बड़े कृपालु हैं। उन्होंने बिना तपस्या, कठोर साधना की करनी के सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान की। श्री प्राणनाथजी (बुधजी) ने तीनों लोक (मृत्यु, स्वर्ग, बैकुण्ठ) अर्थात् चौदह लोकों को अखण्ड कर दिया और सबके जन्म-मरण का चक्कर समाप्त कर दिया।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७५५ ॥

कुरान की कहूं

अब कहूं कुरान की, सब विध हकीकत।
मगज मायने खोले बिना, क्यों पाइये मारफत।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि अब कुरान के यथार्थ ज्ञान को बतलाता हूं। इसके गुझ (गुप्त) छिपे रहस्य खोले बिना परमधाम के मारफत का ज्ञान, अर्थात् पारब्रह्म की पहचान सम्भव नहीं है।

Nijanand App

बिध सारी यामें लिखी, जाथें न रहे अग्यान।
माएने ऊपर के लेय के, कर बैठे अपना कुरान।। २ ।।

कुरान में सब बातें इस तरह से लिखी हैं जिससे कोई अज्ञान रह ही नहीं सकता, परन्तु जाहिरी मुसलमान ऊपर के अर्थ लेकर कुरान को अपना मान बैठे हैं।

आरबों सों ऐसा कह्या, कागद ए परवान।
आवसी रब आलम का, तब खोलसी कुरान।। ३ ।।

रसूल साहब ने अरब के लोगों से कहा था कि यह कुरान खुदाई सन्देश है, इसलिए जब सारे संसार के मालिक पारब्रह्म आएंगे तो इसके रहस्य खोलेंगे।

कागद में ऐसा लिख्या, आवेगा साहेब।
अंदर अर्थ खोलसी, सब जाहेर होसी तब।। ४ ।।

कुरान में ऐसा लिखा है कि पारब्रह्म अवश्य ही आएंगे और जब वह अन्दर के बातून अर्थ खोलेंगे तो सब कुछ जाहिर हो जाएगा और किसी का कोई संशय नहीं रह जाएगा।

दुनियां चौदे तबकों, और मिलो त्रैगुन।
माएने मगज मुसाफ के, कोई खोले न हम बिन।। ५ ।।

दुनियां के चौदह लोक मिल जाएं और त्रिदेव भी मिल जाएं तो भी कुरान के छिपे भेदों को हमारे बिना कोई खोल नहीं सकता।

धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए।
साहेब बिना ए माएने, और खोल न सके कोए।। ६ ।।

पारब्रह्म ही कुरान के रहस्यों को खोलेंगे यह तुम सत्य मानना। पारब्रह्म के बिना इन रहस्यों को कोई नहीं खोल सकता।

नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत।
फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित।। ७ ।।

सभी ने पारब्रह्म के जुदा-जुदा नाम धारण कर आने का संकेत दिया है और कहा है कि कुरान के भेद जो खोलेगा वही पारब्रह्म सच्चिदानन्द है।

गुझ अर्थ यामें लिखे, सो समझे कैसे कर।
अर्थ ऊपर का लेय के, अकस लेत दिल धर।। ८ ।।

कुरान में खुदा, पारब्रह्म और परमधाम के सब भेद छिपे हैं। बाकी सब उनको कैसे समझ सकते हैं? यह सब ऊपर के जाहिरी अर्थ लेकर दिलों में दुश्मनी ले लेते हैं।

बड़ी सोभा अहेल किताब की, लिखी मिने कुरान।
सो आरब जाने आपको, ए जो धनी फुरमान।। ९ ।।

कुरान के बीच कुरान के वारिस (मोमिनों) की बड़ी महिमा लिखी है। यह सब अरब के लोग अपने आपको खुदा का फुरमान और कुरान का अपने को वारिस मानते हैं।

अहेल किताब जानें आपको, और सब जाने कुफरान।
फजर होसी माएने खुले, तब होसी पेहेचान।। १० ।।

यह अपने आपको कुरान का वारिस कहते हैं और सबको काफिर कहते हैं। कुरान के छिपे भेदों का रहस्य खुलकर सवेरा होगा। तब पता चल जाएगा कि इसका सच्चा वारिस कौन है।

Nijanand App

एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार।
ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरों पार।। ११ ।।

मोमिनों की गिनती कुरान में बारह हजार लिखी है। अरब के मुसलमान तो संख्या में बेशुमार (अनगिनत) हैं।

एता भी न विचारहीं, होए खावंद बैठे सब।
फैल न देखें अपने, लिया मोमिनों का मरातब।। १२ ।।

वह इतना भी विचार नहीं करते और मोमिनों का दावा लेकर कुरान के मालिक बने बैठे हैं। अपने कर्मों को देखते नहीं हैं और मोमिनों का दावा लिए बैठे हैं।

सहूर न करें दिल से, कह्या नाजी फिरका एक।
और बहत्तर नारी कहे, पर पावें नहीं विवेक।। १३ ।।

दिल से सोचते भी नहीं हैं और कहते हैं कि हम नाजी फिरका हैं, पर कुरान में तो नाजी फिरका एक होगा, ऐसा जिकर आया है। और बहत्तर फिरके नारी (दोजखी) कहे हैं। उन्हें इसकी खबर नहीं है कि नारी कौन है और नाजी कौन है?

लिख्या है कुरान में, कुलफ किए दिल पर।
परदा कानों आंखों पर, तो न सके अर्थ कर।। १४ ।।

कुरान में लिखा है कि जाहिरी अर्थ लेने वालों के दिलों पर ताले लगे हैं, अर्थात् आंखों और कानों पर परदा पड़ा है, इसलिए वह बातूनी अर्थों तक नहीं पहुंच सके।

कागद एक उमत का, और हुआ झूठों सों छल।
माएने जब जाहेर भए, तब भाग्यो झूठों बल।। १५ ।।

कुरान केवल नाजी फिरके के वास्ते आया है। जब इसके छिपे भेदों का रहस्य जाहिर हो गया तो झूठे दावेदारों का दावा झूठा हो गया। झूठे दावेदार का कोई बल न रहा।

एह विध साख कुरान में, जाहेर लिखी हकीकत।
सो धनी आए जहूदों मिने, ओ आरबों में ढूंढ़त।। १६ ।।

इस तरह से कुरान में गवाही लिखी है कि पारब्रह्म तो हिन्दुओं में आ गये हैं, लेकिन अभी भी लोग अरब में उनके आने का इन्तजार कर रहे हैं।

परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं माहें।
जाहेर परस्त जो आरब, सो इसारत समझत नाहें।। १७ ।।

खुदा के मुंह पर परदा होगा। इसका मतलब है कि वह हिन्दुओं में आएंगे, किन्तु जाहिरी अर्थ करने वाले इसका भेद नहीं समझते।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ७७२ ॥

कुरान के निसान कयामत के जाहेर हुए

बरस नब्बे हजार पर, गुजरे एते दिन।
कयामत लिखी कुरान में, सो ए न पाई किन।। १ ।।

रसूल साहब के जाने के बाद एक हजार नब्बे वर्ष (सम्वत् १७३५) बीतेंगे, कुरान में लिखा है तब कयामत होगी। इस संकेत को कोई समझ नहीं सका।

Nijanand App

एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार।
ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरों पार।। ११ ।।

मोमिनों की गिनती कुरान में बारह हजार लिखी है। अरब के मुसलमान तो संख्या में बेशुमार (अनगिनत) हैं।

एता भी न विचारहीं, होए खावंद बैठे सब।
फैल न देखें अपने, लिया मोमिनों का मरातब।। १२ ।।

वह इतना भी विचार नहीं करते और मोमिनों का दावा लेकर कुरान के मालिक बने बैठे हैं। अपने कर्मों को देखते नहीं हैं और मोमिनों का दावा लिए बैठे हैं।

सहूर न करें दिल से, कह्या नाजी फिरका एक।
और बहत्तर नारी कहे, पर पावें नहीं विवेक।। १३ ।।

दिल से सोचते भी नहीं हैं और कहते हैं कि हम नाजी फिरका हैं, पर कुरान में तो नाजी फिरका एक होगा, ऐसा जिकर आया है। और बहत्तर फिरके नारी (दोजखी) कहे हैं। उन्हें इसकी खबर नहीं है कि नारी कौन है और नाजी कौन है?

लिख्या है कुरान में, कुलफ किए दिल पर।
परदा कानों आंखों पर, तो न सके अर्थ कर।। १४ ।।

कुरान में लिखा है कि जाहिरी अर्थ लेने वालों के दिलों पर ताले लगे हैं, अर्थात् आंखों और कानों पर परदा पड़ा है, इसलिए वह बातूनी अर्थों तक नहीं पहुंच सके।

कागद एक उमत का, और हुआ झूठों सों छल।
माएने जब जाहेर भए, तब भाग्यो झूठों बल।। १५ ।।

कुरान केवल नाजी फिरके के वास्ते आया है। जब इसके छिपे भेदों का रहस्य जाहिर हो गया तो झूठे दावेदारों का दावा झूठा हो गया। झूठे दावेदार का कोई बल न रहा।

एह विध साख कुरान में, जाहेर लिखी हकीकत।
सो धनी आए जहूदों मिने, ओ आरबों में ढूंढ़त।। १६ ।।

इस तरह से कुरान में गवाही लिखी है कि पारब्रह्म तो हिन्दुओं में आ गये हैं, लेकिन अभी भी लोग अरब में उनके आने का इन्तजार कर रहे हैं।

परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं माहें।
जाहेर परस्त जो आरब, सो इसारत समझत नाहें।। १७ ।।

खुदा के मुंह पर परदा होगा। इसका मतलब है कि वह हिन्दुओं में आएंगे, किन्तु जाहिरी अर्थ करने वाले इसका भेद नहीं समझते।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ७७२ ॥

कुरान के निसान कयामत के जाहेर हुए

बरस नब्बे हजार पर, गुजरे एते दिन।
कयामत लिखी कुरान में, सो ए न पाई किन।। १ ।।

रसूल साहब के जाने के बाद एक हजार नब्बे वर्ष (सम्वत् १७३५) बीतेंगे, कुरान में लिखा है तब कयामत होगी। इस संकेत को कोई समझ नहीं सका।

Nijanand App

कई पढ़ पढ़ काजी हुए, कई आलम आरिफ।
माएने मगज मुसाफ के, किन खोल्या ना एक हरफ।। २ ।।

कई कुरान को पढ़-पढ़कर काजी और कई ज्ञानी (विद्वान) बन गए, परन्तु कुरान के छिपे भेदों के रहस्यों में से एक को भी नहीं खोला।

लिख्या जाहेर कुरान में, और माजजे सब रद।
सांचा माजजा इमाम पे, जो ले उतरया अहमद।। ३ ।।

कुरान में स्पष्ट लिखा है कि सभी चमत्कार रद्द हो जाएंगे। सच्चा चमत्कार यह होगा कि रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी, श्री देवचन्द्रजी) तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर उतरेंगे और इमाम मेंहदी को सौंपेंगे।

करामात कलाम अल्लाह की, सांची कहियत हैं सोए।
लिख्या है कुरान में, सो बिना इमाम न होए।। ४ ।।

कुरान में लिखे चमत्कार सत कहे जाते हैं। कुरान में यह भी लिखा है कि कुरान के छिपे भेदों को इमाम मेंहदी साहब श्री प्राणनाथजी के बिना कोई खोल नहीं सकेगा।

पढ़या नाहीं फारसी, ना कछू हरफ आरब।
सुन्या न कान कुरान को, और खोलत माएने सब।। ५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने फारसी को नहीं पढ़ा और न अरबी को ही पढ़ा है। कुरान को सुना तक नहीं है और उसके सब छिपे भेदों के रहस्यों को मैंने खोल दिया है, अर्थात् श्री प्राणनाथजी ही इमाम मेंहदी हैं।

ए सब किताबें इन पे, तामें किल्ली कुरान।
रूह अल्ला महंमद मेंहेदी, एही इमाम पेहेचान।। ६ ।।

सब धर्मग्रन्थों का ज्ञान श्री प्राणनाथजी के पास है और कुरान के छिपे रहस्यों को खोलने की कुंजी है। रूह अल्लाह मुहम्मद मेंहदी इन्हीं के अन्दर विराजमान हैं। यही इनकी पहचान है।

जो लों माएने मगज न पाइया, तो लों पढ़या न किन कुरान।
किन भेज्या किन वास्ते, ना कछू रसूल पेहेचान।। ७ ।।

जब तक कुरान के छिपे भेदों को नहीं समझा जाए तब तक यही समझना चाहिए मैंने कुरान पढ़ा ही नहीं, क्योंकि तब तक यह जाना नहीं जा सकता कि इस कुरान को भेजने वाले कौन हैं और यह किसके वास्ते भेजा गया है तथा रसूल साहब का वास्तविक स्वरूप क्या है?

जो अर्थ ऊपर का लेवहीं, सो कहे देव सैतान।
यों जंजीरां मुसाफ की, कई विध करी बयान।। ८ ।।

जो कुरान के ऊपर के अर्थों को लेते हैं वही पढ़े-लिखे शैतान हैं। इस तरह कुरान की जब आयतों की कड़ियों को मिलाकर कई तरह से उनके अर्थ खोल दिए।

अजाजील दम सबन में, फरिस्ता जो बुजरक।
सारी जिमी पर सिजदा, किया ऊपर हक।। ९ ।।

अजाजील फरिश्ता जो सबसे बड़ा फरिश्ता है और सबके अन्दर बैठा है, उसने सारी जमीन पर खुदा के लिए सिजदा किया यह किस्सिसुल अंबिया कुरान शरीफ में लिखा है।

Nijanand App

हुकम हुआ तिन को, कर सिजदा आदम पर।
माएने मगज न ले सके, लिया ऊपर का जाहेर।। १० ।।

उसी अजाजील को खुदा का हुकम हुआ कि आदम के ऊपर सिजदा कर। उस अजाजील ने आदम के अन्दर पारब्रह्म की रूह है, इस भेद को नहीं समझा और इसलिए जाहिरी रूप से पहचान न कर सका और सिजदा नहीं किया, अर्थात् विष्णु भगवान सबके अन्दर बैठे हैं, इसलिए दुनियां वाले श्री प्राणनाथजी को एक मनुष्य तन में होने के कारण पहचान नहीं सके।

लानत हुई तिन को, हुआ गले में तौक।
यों सब जाहेर पुकारहीं, तो भी छोड़ें ना वे लोक।। ११ ।।

इस कारण से अजाजील को लानत लगी (फटकार लगी) और गले में लानत का फंदा पड़ गया। यह सभी लोग स्पष्ट कहते हैं और खुद उस रास्ते को नहीं छोड़ते।

तिन दिया धक्का आदम को, अबलीस गेहूं खिलाए।
काढया प्यारी भिस्त से, दुस्मन संग लगाए।। १२ ।।

इसी अजाजील फरिश्ते के मन अबलीस ने (विष्णु भगवान के मन स्वरूप नारद ने) बाबा आदम को धोखे से गेहूं खिलाकर बहिश्त से बाहर निकलवा दिया और साथ में अबलीस को आदम की औलाद के अन्दर बिठा दिया।

ए विचारे क्या करें, सब आदम की नसल।
तो फुरमाया ना करें, वे खैंचे पेड़ असल।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यह सब आदम की नस्ल है। मन के अन्दर अबलीस बैठा है जो खुदाई आदेश का पालन नहीं करने देता और संसार की तरफ उनकी अकल को मोड़ देता है। यह बिचारे क्या करें?

ओ तो ले ले माएने मगज, लिखे बड़े निसान।
सो ए धरे सरत पर, करने अपनी पेहेचान।। १४ ।।

मुहम्मद साहब ने कुरान में बड़े-बड़े निशान इशारतों में लिखा है और उनमें पारब्रह्म के आने का समय भी लिखा है जिससे छिपे भेदों के रहस्य खुल जाने से दुनियां को इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के आने की पहचान हो जाए।

दुनियां सबे जाहेरी, सो लेवे माएनें जाहेर।
अंदर अर्थ खुले बिना, क्यों पावे दिन आखिर।। १५ ।।

जाहिरी दुनियां के सभी लोगों की बाहरी नजर है, इसलिए सब अपने धर्म-ग्रन्थों के मायने जाहिरी लेते हैं। जब तक अन्दर के भेदों का पता नहीं चलेगा तब तक कयामत का दिन कैसे निश्चित करेंगे।

निसान कहे इन वास्ते, सो बांधें कौल पर हद।
लेत माएने ऊपर के, सो करने को सब रद।। १६ ।।

कयामत के समय को निश्चित करने के लिए ही कयामत के सात बड़े निशान लिखे हैं। इनके यह लोग जाहिरी अर्थ लेते हैं और उन रहस्य भरी बातों को झूठा कर रहे हैं।

Nijanand App

कलाम अल्ला के माएने, सो भी कही इसारत।
ए नसल आदम हवाई, क्यों पावे दिन आखिरत।। १७ ।।

कुरान में अल्लाह के वचन हैं और वह भी इशारतों में लिखे हैं। यह दुनियां के मुसलमान निराकार से पैदा आदम (सफी उल्लाह) की औलाद हैं, इसलिए इन निशानों में कयामत के जाहिर होने के छिपे भेद कैसे समझें?

माएने मुल्लां या ब्राह्मण, करते जो उलटाए।
सोई हरफ जबराईल, गया सब चटाए।। १८ ।।

धर्मग्रन्थों के अर्थ मौलवी और ब्राह्मण लोग मनमाने और उल्टे करते थे। अब जबराईल फरिश्ते ने जाहिरी अर्थ को समाप्त कर दिया और सच्चे छिपे अर्थ को जाहिर कर दिया।

नेहेरें चलसी उलटी, किए नजीकी दूर।
ईसा मेंहेदी महंमद, आए हिन्द में बरस्या नूर।। १९ ।।

कुरान में लिखा है कि कयामत के समय नहरें उलटी चलेंगी, अर्थात् यह पण्डित, मुल्ला, काजी सब जो अपने को खुदा का नजदीकी कहते हैं वह उलटे अर्थ करने के कारण खुदा के नजदीक होने का दावा लेते हैं वह सब दूर हो जाएंगे। ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) मुहम्मद मेंहदी श्री प्राणनाथजी जब हिन्द में आए तो उनकी जागृत बुद्धि तारतम वाणी से ज्ञान की वर्षा हुई।

नूर खुदा रोसन हुआ, खैंच छूटी सब तरफ।
लेत माएने ऊपर के, सो रह्या न कोई हरफ।। २० ।।

अब खुदा (पारब्रह्म) के स्वरूप की पहचान हुई तो सभी के बड़प्पन की खींचतान का झगड़ा समाप्त हो गया। हकीकत के मायने जाहिर होते ही ऊपर के झूठे मायने करने वालों का कोई महत्व न रहा।

महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम।
अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम।। २१ ।।

श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी के तन में श्यामजी के मन्दिर में श्री राजजी महाराज रास वाले स्वरूप में विराजमान हुए तो श्री श्यामाजी श्याम कहलाए। अब यह युगल स्वरूप श्री इन्द्रावतीजी के तन में हवसा में विराजमान हुए और वहां से जब मेड़ता पधारे तो वहां मुहम्मद साहब की शक्ति भी अन्दर आने से वह युगल स्वरूप श्याम अहमद कहलाए। फिर दिल्ली से अनूपशहर जाते समय श्री राजजी महाराज का आवेश मेंहदी स्वरूप विरह तामस में अन्दर आया तो वह अहमद इमाम मेंहदी के रूप में प्रगट हुए (अहमद अर्थात् पूर्ण स्वरूप)।

अल्लफ कह्या महंमद को, रूह अल्ला ईसा लाम।
मीम मेंहेदी पाक सें, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम।। २२ ।।

हरफ मुक्तआत में कुरान के शुरू में अलिफ, लाम, मीम शब्द लिखे हैं जिनको हरफे मुक्तआत (छिपे भेद वाला) कहा है। इनके छिपे भेदों का रहस्य खुदा ही खोलेंगे। वह अब इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने उनके अर्थ जाहिर कर दिए। अलिफ का अर्थ मुहम्मद साहब है। लाम का अर्थ ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) है। मीम इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के लिए कहा है। कुरान कहता है यह तीनों स्वरूप एक हैं।

Nijanand App

महंमद ईसा आए मेयराज में, और असराफील इमाम।
बुध जबराईल मिल के, किए गुझ जाहेर अल्ला कलाम।। २३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी के तन में हवसा में दर्शन देने के समय ईसा रूह अल्लाह की शक्तियां श्री राजजी और श्यामाजी के अन्दर विराजमान हुईं। मुहम्मद और जबराईल यह दोनों मेड़ते में अन्दर आकर बैठे। अनूपशहर जाते समय असराफील फरिश्ता श्री इन्द्रावतीजी के तन में इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के नाम से जाहिर हुए और उन्होंने कुरान के छिपे रहस्यों को जाहिर किया।

माएने इन मुसाफ के, कलाम अल्ला का कौल।
ईसे के इलम से, दई इसारतें सब खोल।। २४ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को तथा अल्लाह के वक्त-ए-आखिरत को आने के वायदे की सभी इशारतें जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से खोल दिए।

बड़े निसान आखिरत के, आजूज माजूज दोए।
बेटे कहे याफिस के, इनहूं न छोड़या कोए।। २५ ।।

कयामत के बड़े निशानों में आजूज-माजूज का जिक्र है। यह नूह पैगम्बर के बेटे याफिस (विष्णु) के बेटे हैं। इन दोनों (दिन और रात) ने सबकी आयु को समाप्त कर दिया।

कहे बड़े सबन से, सौ गज का आजूज।
और तंग चसम कह्या, एक गज का माजूज।। २६ ।।

कुरान में आजूज को सबसे बड़ा सौ गज का कहा है, अर्थात् दिन के समय इन्सान का मन सौ तरफ दौड़ता है और माजूज को एक गज का कहा है तथा तंग चश्म (दूर तक न देखने) वाला कहा है। यह रात्रि है जिसमें मनुष्य एक ही तरफ हो जाता है।

चार लाख कौम इन की, फौजां होसी तीन।
अर्थ ऊपर के आखिरत, क्यों पावें रात दिन।। २७ ।।

इन दिन और रात (आजूज और माजूज) की चार लाख कौम (चार लाख दिन और रात) और तीन फौजें—तुलुअ, ताबां और साबा, अर्थात् सुबह, दोपहर और शाम कही हैं। जाहिरी अर्थ लेने से यह आजूज-माजूज का पता नहीं चलता कि यही दिन और रात हैं।

ए तो गिनती कही दिनन की, आखिरत बड़े निसान।
माएने मगज मुसाफ के, और करे सो कौन बयान।। २८ ।।

आखिरत के निशानों में यह चार लाख दिनों की गिनती है जो मुहम्मद साहब के जाने के बाद सम्वत् १७३५ तक पूरी होती है। कुरान के छिपे इस तरह के भेदों को दूसरा कौन जाहिर कर सकता है?

काल याही दिन कहे, सो पोहोंचे कौल पर आए।
तब पिंड या ब्रह्मांड, देत सबे उड़ाए।। २९ ।।

वह समय और दिन जिसमें इमाम मेंहदी के जाहिर होने का वायदा है वह आ गए। अब यह आजूज और माजूज (दिन और रात) हर इन्सान के आठ तत्वों के तन (पांच तत्व और तीन गुण) तथा ब्रह्माण्ड को नष्ट कर देंगे।

Nijanand App

दाभ-तूल-अर्ज मक्के से, जाहेर होसी सब ठौर।
एक हाथ आसा मूसे का, दूजे सलेमान की मोहोर।। ३० ।।

मक्का से प्रगट होने वाले पशु वृत्ति वाले मनुष्यों के संसार में होने की बात कही है। वह न्याय के दिन जाहिर होंगे। न्याय के दिन न्यायाधीश श्री प्राणनाथजी के एक हाथ में मूसे की लाठी और दूसरे हाथ में सुलेमान पैगंबर की मोहर होगी।

सो मुख होसी उजला, मोहोर करसी जिन।
आसा चुभावे जिन मुख, स्याह मुख होसी तिन।। ३१ ।।

न्याय के समय मोहर लगाने से उनके मुख उज्ज्वल हो जाएंगे। जो पारब्रह्म की पहचान कर चले हैं वह उज्ज्वल मुंह वाले होंगे। मूसा पैगम्बर की लाठी लगाने से जिसका मुंह काला हो जाएगा, अर्थात् काफिरों के मुख काले हो जाएंगे।

उज्जल मुख मोमिन कहे, स्याह मुख कहे काफर।
या भिस्ती या दोजखी, जाहेर होसी आखिर।। ३२ ।।

इसलिए मोमिनों को उज्ज्वल मुंह वाला कहा गया है और इन्हें अखण्ड सुख मिलेगा। काफिरों के मुंह काले होंगे उनको दोजख (नरक) मिलेगा, ऐसा कुरान में लिखा है।

कही दाभा वास्ते वह जिमी, पेहेले हुती सबे कुफरान।
जोलों स्याम बरारब ना हतें, ना रसूल खबर फुरमान।। ३३ ।।

अरब की जमीन पर पहले सभी जानवरों की भांति रहते थे और सब काफिर का काम करते थे। जब तक रसूल मुहम्मद वहां पर प्रकट नहीं हुए तब तक किसी को खुदाई आदेश नहीं मिला।

जब स्याम रसूल आए इन जिमी, तब हुआ नूर रोसन।
कुरान रसूल उमत, जाहेर करी सबन।। ३४ ।।

जब रास की लीला के बाद श्री कृष्ण मुहम्मद बनकर आए तो उनकी वाणी का ज्ञान फैला और तब रसूल साहब ने वहां के लोगों को कुरान के और उम्मत के आने के बारे में बताया।

ल्याए बंदगी केहेलाए कलमा, बरस्या खुदा का नूर।
सो नूर फिरया खाली भई, जैसी असल दाभा थी अंकूर।। ३५ ।।

रसूल साहब ने खुदा का कलमा पढ़ाकर खुदा की बन्दगी कराई और खुदा के ज्ञान को जाहिर किया। जब रसूल साहब चले गए तो एक हजार नब्बे वर्ष तक कुरान की वाणी की शक्ति वहां रही और इमाम मेंहदी साहब के जाहिर होने पर मक्का से सब शक्तियां उठकर इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर आ गई और अरब पर फिर काफिरों का जैसा रसूल साहब के आने से पहले था, वैसा ही जोर हो गया।

सो नूर सब इत आइया, इन जिमी मसरक।
तब वह जिमी दाभा भई, जैसी पेहेले थी बिना हक।। ३६ ।।

यह सब कुरान का ज्ञान पूर्व में हिन्दुस्तान में हिन्दुओं में इमाम मेंहदी के तन में आ गया और मक्का की हालत रसूल साहब से पहले जैसी थी वैसी हो गई।

Nijanand App

मोमिन मुख उज्जल भए, भए काफर मुख स्याह।
यों मसरक और मगरब, दोनों दुरस्त कह्या।। ३७ ।।

कुरान में मोमिनों के मुख उज्ज्वल और काफिरों के मुख काले होने का जो इशारा है वही अब पूरब दिशा हिन्दुओं में और पच्छिम दिशा मुसलमानों में जाहिर हो गया। जो कुछ कुरान में लिखा था वह हो गया।

रूह अल्ला महंमद इमाम, मसरक आए जब।
सूरज गुलबा आखिरी, मगरब ऊग्या तब।। ३८ ।।

रूह अल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) मुहम्मद रसूल और इमाम मेंहदी जब पूरब में हिन्दुओं के तन में श्री प्राणनाथजी के रूप में जाहिर हुए तो इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के जाहिर होने से पहले जो ज्ञान का सूर्य मुसलमानों में था तब तक अरब की दिशा पूरब कही गई, क्योंकि खुदाई ज्ञान वहां आया और अब इमाम मेंहदी के हिन्दुओं में जाहिर होने पर वह ज्ञान हिन्द में आ जाने से हिन्द में हिन्दुओं की दिशा पूरब की हो गई और अरब में मक्का मगरिब (पच्छिम) दिशा बन गई और वहां अंधेरा हो गया।

नूर खुदा आया मसरक, ऊग्या सूरज मगरब।
जाहेरी ढूंढे सूरज जाहेर, ए जो पढ़े आखिरी सब।। ३९ ।।

जब इमाम मेंहदी तारतम वाणी के साथ हिन्दुओं में आए तब मुसलमानों में अज्ञान का अन्धकार फैला। पढ़े-लिखे लोग जाहिरी सूर्य को मगरिब (पच्छिम) में उदय होने का रास्ता देखते रहेंगे।

ज्यादा चौदे तबक से, दज्जाल गधा इन हद।
काना अस्वार तिन पर, सो भी वाही कद।। ४० ।।

चौदह तबकों से बड़ा दज्जाल का गधा होगा, ऐसा वर्णन है। उसके ऊपर उसी ऊंचाई का एक काना दज्जाल सवार होगा।

ताए रूहअल्ला मारसी, करसी दुनियां साफ।
आखिर उमत महंमदी, करसी आए इंसाफ।। ४१ ।।

और उस दज्जाल को रूह अल्लाह दूसरे जामे में बैठकर मारेंगे और संसार को उसकी गुलामी से मुक्त करेंगे और फिर अन्त में इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज तथा उनकी जमात सुन्दरसाथजी सारी दुनियां का न्याय करेंगे।

दम दज्जाल सबन में, रहत दुनी दिल पर।
ए जो पातसाह अबलीस, करत सबों में पसर।। ४२ ।।

दज्जाल का मन अबलीस (नारद) सबके दिलों पर बादशाह बना बैठा है। यह बात भी जाहिर हो गई।

ऐसा ए जानत हैं, तो भी जाहेर चाहें दज्जाल।
जब ए दज्जाल मारिया, तब दुनी रेहेसी किन हाल।। ४३ ।।

इस हकीकत को पढ़े-लिखे मुसलमान जानते हैं फिर भी दज्जाल को जाहिरी रूप से ढूंढ़ते हैं। जब रूह अल्लाह इस दज्जाल को मारकर गिरा देंगे तो इतनी बड़ी लाश कहां गिरेगी और दुनियां का क्या हाल होगा, यह विचार नहीं करते।

Nijanand App

आखिर आए असराफील, उड़ावसी बजाए सूर।
फेर करसी कायम, बजाए खुदाए का नूर।। ४४ ।।

आखिर में असराफील (जागृत बुद्धि का फरिश्ता) जागृत बुद्धि के ज्ञान का सूर फूंकेगा तो बड़े-बड़े पहाड़ के समान धर्माचार्य ज्ञानियों के झूठे ज्ञान के अहंकार टूट जाएंगे और फिर दूसरा सूर फूंकने से पारब्रह्म के दर्शन कराकर सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर।
तब फिरसी सब फरिस्ते, एह बात चित्त धर।। ४५ ।।

असराफील फरिश्ता जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का उजाला करेगा तब सब देवी-देवता योगमाया की अव्याकृत की बहिश्त में जाएंगे।

जब जहूर जाहेर हुआ, कलाम अल्ला का नूर।
तब ए होसी कायम, ले याही का जहूर।। ४६ ।।

जब तारतम वाणी से छिपे भेदों का रहस्य फैलेगा तब सारी दुनियां को जानकारी मिल जाएगी और फिर वह सब अखण्ड सुख को प्राप्त करेंगे।

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए।
सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए।। ४७ ।।

कुरान और सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के बिना और कोई नहीं खोल सकता, ऐसा कुरान में जब स्वयं पारब्रह्म ने लिखवा दिया तो फिर दूसरा कोई कैसे खोल सकता है?

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ८१९ ।।

सूरत मीजान की

केहेती हों उमत को, सुनसी सब संसार।
मकसूद तिन का होएसी, जो लेसी एह विचार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते कहती हूं जिसे सारा संसार सुनेगा। पर लाभ उसी को ही होगा जो सुनकर इसे विचारेगा।

फिरके सबों ने यों कह्या, ए जो दुनियां चौदे तबक।
ढूंढ़ ढूंढ़ के हम थके, पर पाया नाहीं हक।। २ ।।

सभी धर्मग्रन्थों ने कहा कि चौदह लोकों के देवी-देवता और ज्ञानी लोग सभी पारब्रह्म को ढूंढ़कर थक गए, परन्तु पारब्रह्म किसी को नहीं मिला।

वेद कतेब पढ़ पढ़ थके, केहे केहे थके इलम।
कह्या तिनों मुख अपने, ठौर कायम न पाया हम।। ३ ।।

वेद और कतेब को पढ़-पढ़कर लोग थक गए। ज्ञान की चर्चा करके थक गए। उन्होंने भी अपने मुख से स्पष्ट कहा कि निराकार के पार बेहद अखण्ड भूमि का पता नहीं लगा।

मेहेर करी मोहे मेहेबूबें, रूह अल्ला मिले मुझ।
खोल दिए पट अर्स के, जो बका ठौर थी गुझ।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे ऊपर धाम-धनी ने कृपा की जिससे श्यामाजी मुझे मिले और तारतम वाणी से अखण्ड परमधाम तक के दरवाजे खोल दिए जो आज तक छिपे थे।

Nijanand App

आखिर आए असराफील, उड़ावसी बजाए सूर।
फेर करसी कायम, बजाए खुदाए का नूर।। ४४ ।।

आखिर में असराफील (जागृत बुद्धि का फरिश्ता) जागृत बुद्धि के ज्ञान का सूर फूंकेगा तो बड़े-बड़े पहाड़ के समान धर्माचार्य ज्ञानियों के झूठे ज्ञान के अहंकार टूट जाएंगे और फिर दूसरा सूर फूंकने से पारब्रह्म के दर्शन कराकर सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर।
तब फिरसी सब फरिस्ते, एह बात चित्त धर।। ४५ ।।

असराफील फरिश्ता जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का उजाला करेगा तब सब देवी-देवता योगमाया की अव्याकृत की बहिश्त में जाएंगे।

जब जहूर जाहेर हुआ, कलाम अल्ला का नूर।
तब ए होसी कायम, ले याही का जहूर।। ४६ ।।

जब तारतम वाणी से छिपे भेदों का रहस्य फैलेगा तब सारी दुनियां को जानकारी मिल जाएगी और फिर वह सब अखण्ड सुख को प्राप्त करेंगे।

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए।
सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए।। ४७ ।।

कुरान और सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के बिना और कोई नहीं खोल सकता, ऐसा कुरान में जब स्वयं पारब्रह्म ने लिखवा दिया तो फिर दूसरा कोई कैसे खोल सकता है?

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ८१९ ।।

सूरत मीजान की

केहेती हों उमत को, सुनसी सब संसार।
मकसूद तिन का होएसी, जो लेसी एह विचार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते कहती हूं जिसे सारा संसार सुनेगा। पर लाभ उसी को ही होगा जो सुनकर इसे विचारेगा।

फिरके सबों ने यों कह्या, ए जो दुनियां चौदे तबक।
ढूंढ़ ढूंढ़ के हम थके, पर पाया नाहीं हक।। २ ।।

सभी धर्मग्रन्थों ने कहा कि चौदह लोकों के देवी-देवता और ज्ञानी लोग सभी पारब्रह्म को ढूंढ़कर थक गए, परन्तु पारब्रह्म किसी को नहीं मिला।

वेद कतेब पढ़ पढ़ थके, केहे केहे थके इलम।
कह्या तिनों मुख अपने, ठौर कायम न पाया हम।। ३ ।।

वेद और कतेब को पढ़-पढ़कर लोग थक गए। ज्ञान की चर्चा करके थक गए। उन्होंने भी अपने मुख से स्पष्ट कहा कि निराकार के पार बेहद अखण्ड भूमि का पता नहीं लगा।

मेहेर करी मोहे मेहेबूबें, रूह अल्ला मिले मुझ।
खोल दिए पट अर्स के, जो बका ठौर थी गुझ।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे ऊपर धाम-धनी ने कृपा की जिससे श्यामाजी मुझे मिले और तारतम वाणी से अखण्ड परमधाम तक के दरवाजे खोल दिए जो आज तक छिपे थे।

Nijanand App

इलम दिया मोहे लदुन्नी, आई असल अकल।
सेहेरग से नजीक, पाया अर्स असल।। ५ ।।

मुझे जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी और अपने घर को (परमधाम को) सेहेरग से (प्राणनली से) नजदीक पाया।

और मेहेर महंमद की, खुली हकीकत।
पाई साहेदी दूसरी, हक की मारफत।। ६ ।।

और रसूल मुहम्मद की कृपा से घर की हकीकत का पता चला और घर की पहचान हो गई। दूसरी गवाही कुरान से मिलने से हकीकत का पता चला।

पाई इसारतें रमूजें, बीच अल्ला कलाम।
सक जरा ना रही, पाया कायम आराम।। ७ ।।

कुरान में पारब्रह्म श्री अक्षरातीत ने जो गुझ (गुप्त) इशारतें कही थीं उनके छिपे भेदों के रहस्य का पता चला जिससे अखण्ड सुख प्राप्त हुआ और सब संशय मिट गए।

अब करूं बका जाहेर, वास्ते अर्स उमत के।
कहूं अर्स और खेल की, ज्यों बेवरा समझें ए।। ८ ।।

अब ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते अखण्ड परमधाम को जाहिर करती हूं। अब मैं परमधाम और माया के खेल की हकीकत बताती हूं जिससे दोनों की हकीकत समझ में आ जाए।

अब लीजो ए रोसनी, जो अरवा अर्स के।
ए निमूना देखिए, ज्यों सुध होए हिरदे।। ९ ।।

जो कोई परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो, वह इस ज्ञान को ग्रहण करे और दोनों के नमूने देखकर पहचान करे।

नासूत और मलकूत का, निमूना देखकर।
ए बल दिल में लेय के, देखो अर्स जानवर।। १० ।।

मृत्युलोक और बैकुण्ठ के नमूनों की शक्ति को देखकर अपने दिल में परमधाम के जानवरों के बल को देखो।

एक जानवर अर्स का, मैं तौल्या तिन का बल।
क्यों कहूं तफावत, ओ फना ए नेहेचल।। ११ ।।

मैंने परमधाम के एक जानवर की शक्ति को तौला। अब उनके फर्क को कैसे बयान करूं? नासूत और मलकूत (मृत्युलोक और बैकुण्ठ) नाशवान हैं और परमधाम अखण्ड है।

लाख ब्रह्मांड की दुनी का, है हिकमत बल बुद्ध जेता।
दे दिल नजरों तौलिया, मैं लिया अंदर में एता।। १२ ।।

दुनियां के लाखों ब्रह्माण्ड की बुद्धि और ताकत को मैंने दिल की नजरों से तौला और यह समझा।

ज्यों कबूतर खेल के, हुए अलेखे इत।
आदमी एक नासूत का, दोऊ देखो तफावत।। १३ ।।

जैसे खेल के कबूतर बेशुमार बन जाते हैं और वह झूठे होते हैं। इस मृत्युलोक के आदमी के सामने इन दोनों की तुलना करो।

Nijanand App

कोई केहेसी ए कछुए नहीं, और ए तो हैं जीवते।
ए जवाब है तिनको, देखो पटंतर ए।। १४ ।।

कोई कहेगा कि कबूतर कुछ नहीं है और यह सब संसार के लोग जिन्दा हैं, उनका एक ही उत्तर है, उसके अन्तर को देखो।

आगूं कायम अर्स के, है चौदे तबक यों कर।
ज्यों आगूं नासूत दुनीय के, ए खेल के कबूतर।। १५ ।।

अखण्ड परमधाम के सामने यह सारा संसार बाजीगर के उसी कबूतर की तरह है, जिस तरह से यहां संसार में संसार के आदमी इस खेल के कबूतर हैं।

जो कछु पैदा कुंन से, मैं तिन का देत निमूना।
सो क्यों कही जाए कायम को, ज्ो वस्त है झूठ फना।। १६ ।।

जो सृष्टि कुंन कहने से पैदा हुई है, मैं उसके नमूने को कहती हूं। यह सृष्टि मिट जाने वाली झूठ है, इसलिए इसकी तुलना अखण्ड से कैसे की जाए?

तो कह्या सब्दातीत को, हद सब्द पोहोंचत नाहें।
ऐसे झूठ निमूना देय के, पछतात हों जीव माहें।। १७ ।।

इसलिए कहा है कि उस अखण्ड पारब्रह्म जो शब्दातीत है उसके यहां हद के मिट जाने वाले संसार के शब्द नहीं पहुंचते और इसलिए झूठा नमूना देकर पश्चाताप हो रहा है।

कछुक सुख तो उपजे, हिस्सा कोटमां पोहोंचे तित।
एक जरा न पोहोंचे हक को, मैं ताथें दुख पावत।। १८ ।।

यदि यह नमूना अखण्ड के करोड़वें हिस्से के बराबर भी होता, तो भी कुछ समझाने का सुख होता। संसार का एक जर्रा भी पारब्रह्म को नहीं पहुंचता, इसलिए मुझे दुःख हो रहा है।

मैं देख्या सुन्या दुनीय में, सो सब फना वस्त।
इन झूठे आकार से, क्यों होए कायम सिफत।। १९ ।।

मैंने जो कुछ दुनियां में देखा और सुना वह सब झूठी वस्तुएं हैं। नाशवान हैं। मैं भी इस झूठे शरीर से कैसे अखण्ड का वर्णन करूं?

ताथें सिफत मैं क्यों करूं, अर्स अजीम की ख्वाब में इत।
एता भी कहूं मैं हुकमें, और केहेने वाला न कित।। २० ।।

अखण्ड परमधाम के सुखों की सिफत मैं सपने के संसार में कैसे बताऊं? इतना भी जो कुछ कह रही हूं पारब्रह्म धनी धाम के हुकम से कह रही हूं, क्योंकि दूसरा कोई और कहने वाला नहीं है।

ताथें अर्स और दुनी के, तफावत जानवर।
कायम और फना की, क्यों आवे बराबर।। २१ ।।

अखण्ड परमधाम के जानवर और इस सारी दुनियां का अन्तर कैसे बराबर हो सकता है, जबकि यह नाशवान और परमधाम अखण्ड है।

चुप किए भी न बने, समझाए ना बिना मिसल।
पसु पंखी अर्स और खेल के, देखो तफावत बल।। २२ ।।

चुप भी रहा नहीं जाता और बिना नमूने के समझाया नहीं जाता। अखण्ड परमधाम के पशु-पक्षी और संसार के पशु-पक्षियों का अन्तर देखो।

Nijanand App

इत अंगद बाल सुग्रीव, गरुड़ जाबूं हनुमान।
ए उठावें पहाड़ को, ऐसे कहे बलवान।। २३ ।।

यहां पर अंगद, बालि, सुग्रीव, गरुड़, जामवंत और हनुमान इतने बलवान कहे हैं कि पहाड़ को भी उठा लेते हैं।

लोक नासूती एह बल, कहे जो जानवर।
राम कृष्ण इनके सिर, तो कहे ऐसे जोरावर।। २४ ।।

मृत्युलोक के जानवरों की यह ताकत है। इनके ऊपर भगवान राम और भगवान कृष्ण की कृपा होने से ही यह इतने ताकतवर हैं।

अब कहूं मलकूत की, बल की हकीकत।
लोक जिमी आसमान के, ए देखो तफावत।। २५ ।।

अब बैकुण्ठ के जानवरों की हकीकत को देखो। इससे मृत्युलोक और बैकुण्ठ की ताकत का अन्तर पता चलेगा।

बोझ उठावें ब्रह्मांड को, ऐसे जोरावर।
गरुड़ बल ऐसा रखे, चले विष्णु मन पर।। २६ ।।

बैकुण्ठ का गरुड़ पक्षी सारे ब्रह्माण्ड का बोझ उठा लेता है। ऐसा ताकतवर पक्षी विष्णु के मन माफिक चलता है।

देख बल इन खावन्द का, जो मलकूत में बसत।
कोट ब्रह्मांड नए कर, अपने बन्दों को बकसत।। २७ ।।

अब बैकुण्ठ में रहने वाले गरुड़ के मालिक भगवान विष्णु की ताकत को देखो जो करोड़ों नए ब्रह्माण्ड बनाकर अपने सेवकों को दे देते हैं।

ओ तो भए नासूत में, मलकूत है तिन पर।
ए तो दोऊ फना मिने, ज्यों लेहेरें उठें मिटें सागर।। २८ ।।

यह तो मैंने मृत्युलोक और बैकुण्ठलोक जो इसके ऊपर है की तुलना करके बताया है। यह दोनों मृत्युलोक और बैकुण्ठ क्षर ब्रह्माण्ड के अन्दर नाशवान हैं। जिस तरह से सागर की लहरें उठती और मिटती हैं वैसे यह संसार बनते और मिट जाते हैं।

नासूती अवतार के, ऐसे बंदे जोरावर।
सो मलकूत के एक खिन में, कई कोट जात मर मर।। २९ ।।

मृत्युलोक के अवतार भगवान राम और भगवान कृष्ण के सेवक इतने बलशाली हैं कि यह सभी बैकुण्ठ के एक पल में करोड़ों बनकर मिट जाते हैं।

नासूत तले मलकूत के, ज्यों लेहेर सागर।
तले इन मलकूत के, नासूत है यों कर।। ३० ।।

बैकुण्ठ के नीचे मृत्युलोक सागर की लहरों के समान है।

दरिया ला मकान का, तिनकी लेहेर मलकूत।
तिन से लेहेर उठत है, सो जानो नासूत।। ३१ ।।

अब निराकार सागर है। सागर में बैकुण्ठ एक लहर के समान है। बैकुण्ठ सागर के सामने मृत्युलोक एक लहर के समान है।

Nijanand App

ए तले ला मकान के, दोऊ फना के माहें।
ए बल मलकूत नासूत, पर जरा कायम नांहें।। ३२ ।।

निराकार के नीचे मलकूत और नासूत (बैकुण्ठ और मृत्युलोक) दोनों नाशवान हैं, इसलिए बैकुण्ठ और मृत्युलोक की शक्ति कुछ भी नहीं है।

विष्णु ब्रह्मा रुद्र की, साहेबियां बुजरक।
ए चौदे तबक की दुनियां, जाने याही को हक।। ३३ ।।

चौदह लोकों की दुनियां में विष्णु, ब्रह्मा और शंकर भगवान को ही सभी मालिक मानकर अखण्ड समझते हैं।

बिना हिसाबें उमतें, करें सिफतें अनेक।
सो सारे यों केहेवहीं, हम सिर एही एक।। ३४ ।।

इनके पूजने और गुण गाने वालों के अनेक धर्म और सम्प्रदाय हैं जो सभी यह कहते हैं कि हमारा मालिक तो यही है (तीनों में से कोई एक जिसके वह पूजक हैं)।

खुदा याही को जानहीं, जो मलकूत में त्रैगुन।
कदी ले इलम आगूं चले, गले ला मकान जो सुंन।। ३५ ।।

बैकुण्ठ धाम में ब्रह्मा, विष्णु और शंकर हैं, उन्हें दुनियां वाले खुदा मानते हैं, इनमें यदि कोई ज्ञान से आगे बढ़ा तो शून्य निराकार में जाकर गल जाता है।

ए जो खावंद मलकूत के, सो ढूंढ़ें हक को अटकल।
रात दिन करें सिफतें, पर पावें नहीं असल।। ३६ ।।

यह जो बैकुण्ठ के मालिक (त्रिदेव) हैं वह पारब्रह्म को अपनी अटकल से ढूंढ़ते हैं। यह रात-दिन अपने अनुमान से ही पारब्रह्म की तारीफ के गीत गाते हैं, परन्तु वह कौन है, कहां पर है, इसका ज्ञान उनको नहीं है।

ऐसे बिना हिसाबें मलकूत, सो तीनों फरिस्ते समेत।
सिफत कर कर आखिर, कहे नेत नेत नेत।। ३७ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, शंकर सहित करोड़ों ब्रह्माण्ड बैकुण्ठ की सिफत करके आखिर थक गए और नेति-नेति (यहां नहीं है, यहां नहीं है) कह दिया।

करें कोट मलकूती सिफतें, देख नूरजलाल कुदरत।
तो पट आड़ा ना टरे, कई कर कर गए सिफत।। ३८ ।।

करोड़ों बैकुण्ठ अक्षर ब्रह्म की योगमाया (कुदरत, मूल प्रकृति) की सिफत करते हैं, परन्तु मोह तत्व के परदे को उलंघ नहीं सके, केवल गुण गाते रह गए।

ए सबें सिफतें करें, पर पोहोंचें न नूरजलाल।
ए पैदा ला मकान की, याको पोहोंचे ना फैल हाल।। ३९ ।।

इन सबकी सिफतें अक्षर ब्रह्म को नहीं पहुंचतीं। यह सब त्रिदेव और संसार मोह तत्व से पैदा हुए हैं, इसलिए इनकी मन और बुद्धि अखण्ड को नहीं पहुंचती।

Nijanand App

इन विध चले जात हैं, आखिर अव्वल से।
यों सिफत कर कर गए, पर नूर न पाया किनने।। ४० ।।

शुरू से आखिर तक सारे इस तरह पारब्रह्म के गुण गाते चले जाते हैं, परन्तु अक्षर तक को किसी ने नहीं पाया।

अब देखो बल महंमद का, दई दुनियां को सरीयत।
कह्या आखिर रब आवसी, खोलसी हकीकत।। ४१ ।।

अब रसूल साहब की ताकत को देखो जिन्होंने दुनियां को खुदा की शरीयत पर चलना सिखाया और कहा कि अन्त समय में पारब्रह्म आएंगे और मैं जो कुरान लाया हूं इसके छिपे भेदों की हकीकत खोलकर बताएंगे।

आवसी उमत अर्स से, ए खेल को देखन।
करें हक को जाहेर, सब का एह कारन।। ४२ ।।

परमधाम से ब्रह्मसृष्टि की जमात खेल देखने आएंगी। जिनके वास्ते यह खेल बनाया है वही पारब्रह्म को जाहिर करेंगे।

कायम वतन करें जाहेर, करें जाहेर नूरजलाल।
करें उमत अर्स की जाहेर, करें जाहेर नूरजमाल।। ४३ ।।

वह अखण्ड परमधाम को, अक्षरधाम को, ब्रह्मसृष्टियों को तथा पारब्रह्म अक्षरातीत को जाहिर करेंगे।

जब ए करें जाहेर, देवें पट उड़ाए।
भिस्त दे सबन को, लेवें कयामत उठाए।। ४४ ।।

जब मोमिन इनको जाहिर करेंगे तो सारे परदे हट जाएंगे और सबके सारे संशय मिट जाएंगे। फिर सारे संसार को मिटाकर सब जीवों को बहिश्तों में अखण्ड कर देंगे।

ए सब नूर महंमद के, महंमद नूर खुदाए।
तो आखिर आए सबन को, दई हैयाती पोहोंचाए।। ४५ ।।

यह सब श्यामाजी महारानी के नूर से होगा। श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के नूर से उनके अंग हैं जो आखिरत में आकर सबको अखण्ड कर देंगे।

बारे हजार उमत की, रूहें जो इसदाए।
जबराईल के पर पर, दोऊ बाजू बैठाए।। ४६ ।।

मूल इसदाए से, अर्थात् शुरू से ही जो बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों की जमात है को जबराईल फरिश्ते के दोनों परों पर बिठाकर घर ले जाएंगे।

आप बैठे बीच में, ले अपनी तीन सूरत।
ला मकान उलंघ के, नूर पार पोहोंचत।। ४७ ।।

आप पारब्रह्म अक्षरातीत अपनी तीनों सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) को बीच में बिठाकर निराकार को पार करके अक्षर के पार अपने घर लेकर जाएंगे।

ऐसा जोस बल महंमद का, जबराईल जानवर।
नासूत मलकूत ला परे, पोहोंचे अपने घर।। ४८ ।।

ऐसा बल मुहम्मद का है। जबराईल फरिश्ते की इतनी बड़ी ताकत है कि मृत्युलोक से बैकुण्ठ और बैकुण्ठ से निराकार से परे अपने घर परमधाम पहुंचा देता है।

Nijanand App

एह बल महंमद के, जानवर का जान।
दूजी गिरो फरिस्ते, पोहोंचाई नूर मकान।।४९ ।।

मुहम्मद के जानवर जबराईल की इतनी बड़ी ताकत है कि वह दूसरी ईश्वरीसृष्टि की जमात को भी अक्षरधाम पहुंचाएगा।

गिरो फरिस्ते इत रहे, जबराईल मकान।
एह आगे ना चल सके, याको याही ठौर निदान।।५० ।।

ईश्वरीसृष्टि और जबराईल यहीं अपने मकान में रह जाएंगे। यह आगे नहीं जा सकेंगे। इनका यहीं ठिकाना है।

जो रूहें अर्स अजीम की, खासल खास उमत।
ले पोहोंचे नूरतजल्ला, महंमद तीन सूरत।।५१ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वही खासल खास उम्मत हैं। वह मुहम्मद की तीनों सूरतों सहित अक्षरातीत के धाम पहुंचेंगी।

खेल देख उमत फिरी, भिस्त दे सबन।
इतहीं बैठे पोहोंचहीं, अपने कायम वतन।।५२ ।।

यह खेल देखकर सबको अखण्ड बहिश्तों में कायम करेंगे। ब्रह्मसृष्टियां अपने घर वहीं मूल-मिलावे पहुंच जाएंगी तो उनको पता लगेगा कि हमने यहां मूल-मिलावे में बैठे-बैठे ही खेल देखा है।

ए जो दुनियां चौदे तबक, ताए जबराईल जोस देत।
ए झूठों इस्क देखाए के, कायम सबों कर लेत।।५३ ।।

इस चौदह तबकों की दुनियां को जबराईल ही शक्ति देता है और इस मिटने वाले संसार को प्रेम लक्षणा भक्ति दिखाकर अखण्ड कर देता है।

क्यों कहूं बल जबराईल, जिन सिर हैं महंमद।
ए सिफत इन बल बुध की, क्यों कहे जुबां हद।।५४ ।।

जबराईल की ताकत का वर्णन कैसे करूं क्योंकि इनको मुहम्मद साहब की शक्ति प्राप्त है। इसकी (जबराईल की) सिफत यहां की बल और बुद्धि से कैसे कहूं, क्योंकि मेरी जबान हद की व मिटने वाली है।

कायम जिमी अर्स की, सांची जो साबित।
पसु पंखी इन भोम के, जो हमेसा बसत।।५५ ।।

परमधाम की भूमि अखण्ड है और सदा सत्य है। इस भूमि के पशु, पक्षी जो भी यहां रहते हैं, अखण्ड हैं।

कायम जिमी का खावंद, जिन को कहिए हक।
तिन जिमी के जानवर, सो होए तिन माफक।।५६ ।।

इस अखण्ड भूमि के मालिक को अक्षरातीत पारब्रह्म कहते हैं। इसलिए उस जमीन के जानवर भी उन्हीं के माफिक हैं।

बिना हिसाबें जानवर, पसु बिना हिसाब।
ए बल दिल में लेय के, तौलो निमूना ख्वाब।।५७ ।।

यहां बेशुमार जानवर और बेहिसाब पशु हैं। इनकी ताकत को दिल में विचार करके संसार की तरफ फिर तौलकर देखो।

Nijanand App

कोट इंड की दुनीय का, कूवत बल हिकमत।
अपार अर्स के जानवर, क्यों कहूं बल बुध इत।।५८ ।।

करोड़ों ब्रह्माण्डों की शक्ति और कला को देखो। परमधाम के बेशुमार जानवरों के बल और बुद्धि को यहां बैठे कैसे बताऊं?

अलेखे बल इन का, क्यों देऊं निमूना इन।
झूठे दम कहे ख्वाब के, जाको पेड़ ला मकान सुंन।।५९ ।।

अर्श के जानवरों की ताकत बेशुमार है जिसका यहां कोई नमूना नहीं है। संसार के जीव जिनकी उत्पत्ति निराकार और शून्य से है, वह सब सपने के हैं।

ए बल सब्दातीत को, सो सांचे हैं सूर।
और बल फना मिने, इत तिन की क्या मजकूर।।६० ।।

अर्श के जानवरों की शक्ति शब्दों में नहीं आती। वह सदा अखण्ड और बहादुर हैं। इस क्षर ब्रह्माण्ड (मिट जाने वाले संसार) की ताकत की क्या हस्ती कि उनसे इसकी तुलना करूं?

सांच झूठ पटंतरो, कबहूं कह्यो न जाए।
सांच हक झूठी दुनियां, ए क्यों तराजू तौलाए।।६१ ।।

अखण्ड और मिटने वालों का अन्तर कहा नहीं जा सकता। पारब्रह्म सत है। दुनियां झूठी है। दोनों को एक तराजू में कैसे तौला जा सकता है?

मलकूत और नूर के, क्यों कहूं तफावत।
झूठी दुनी बका हक को, ए कैसी निसबत।।६२ ।।

बैकुण्ठ और अक्षर का अन्तर कैसे बताऊं? दुनियां झूठी है और अक्षर अखण्ड है। इनकी कैसी निसबत, कैसी तुलना?

कोट मलकूत नासूत, एक पल में करें पैदाए।
सो नूर नजर देख के, एक खिन में दें उड़ाए।।६३ ।।

करोड़ों मृत्युलोक और बैकुण्ठ अक्षर ब्रह्म अपने हुकम से एक पल में पैदा करके मिटा देते हैं।

ओ जाने हम कदीम के, आद हैं असल।
कई चले जात हैं मलकूत, नूरजलाल के एक पल।।६४ ।।

संसार के जीव जो अक्षर ब्रह्म के हुकम से पैदा होते हैं, वह जीव समझते हैं हम सदा से ही ऐसे हैं, जबकि अक्षर के एक पल में कई मलकूती ब्रह्माण्ड समाप्त होते हैं।

कोट इंड पैदा फना, करे नूर की कुदरत।
ए बल नूर जलाल का, पाव पल की इसारत।।६५ ।।

अक्षर ब्रह्म की योगमाया अक्षर ब्रह्म के हुकम से करोड़ों ब्रह्माण्ड एक पलक के इशारे से बनाती और मिटाती है।

झूठ तो कछुए है नहीं, सांच कायम साबित।
यों अर्स और दुनीय के, कौन निमूना इत।।६६ ।।

झूठ तो कुछ है ही नहीं और सत सदा अखण्ड है। इस तरह से अखण्ड परमधाम और मिटने वाली दुनियां की कैसे तुलना करोगे?

Nijanand App

बल अलेखे इन का, कोई इनका निमूना नाहें।
तो निमूना दीजिए, जो होवे कोई क्याहें।। ६७ ।।

अखण्ड की शक्ति अपार है जिसका कोई नमूना नहीं है। यदि कोई सत जैसा दूसरा रूप हो, तो उसकी उपमा दी जाए।

ऐसे अति जोरावर, जो रेहेत हक हजूर।
तो मुख से सब्द ना केहे सकों, इन बल हक जहूर।। ६८ ।।

इतने बलशाली जानवर पारब्रह्म के परमधाम में रहते हैं, इसलिए इनकी ताकत का वर्णन इस जबान से और यहां के शब्दों से करना सम्भव नहीं है।

जो बसत अर्स जिमिएं, या नजीक या दूर।
रात दिन इन के अंग में, बरसत हक का नूर।। ६९ ।।

परमधाम में जो रहते हैं वह पास हों या दूर, उनके अंग में रात-दिन पारब्रह्म का ही तेज समाया रहता है।

यों अर्स के जानवर, सो सारे ही पेहेलवान।
बरसत नूर इनों पर, नजर हक मेहेरबान।। ७० ।।

और इस तरह से परमधाम के सभी जानवर बलशाली हैं। इनके ऊपर पारब्रह्म की नजरे करम ठहरी हैं।

जोत सरूपी जानवर, बल बुध को नाहीं सुमार।
नजरों अमी रस पीवत, अर्स खांवद सींचनहार।। ७१ ।।

यह जानवर पारब्रह्म के तेज (नूर) के ही स्वरूप हैं। जिनकी बल बुद्धि अपार है। वह अपनी नजरों से सदा पारब्रह्म का अमृत रस पान करते हैं।

कौन बल होसी इन का, देखो दिल विचार।
जिनका सका साहेब, पल पल सींचनहार।। ७२ ।।

अब दिल में विचार करके देखो कि जिनको पारब्रह्म पल-पल अमृत रस पिलावें, उनका बल क्या होगा ?

ऐसे कोट ब्रह्मांड को, एक फूंके देवे तोड़।
तो भी निमूना इन का, कह्या न जावे जोड़।। ७३ ।।

यहां के करोड़ों ब्रह्माण्डों को अर्श का एक जानवर एक फूंक में उड़ाने की शक्ति रखता है, तो भी इनकी शक्ति की कोई उपमा नहीं है।

उड़ावे कोट ब्रह्मांड को, एक जरे सा जानवर।
उड़ जाएं इन के वाउ सों, जब ए उठावें पर।। ७४ ।।

परमधाम का छोटा सा पक्षी जब अपना पर (पंख) उठाता है तो उसके पर की हवा से ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं।

ए निमूना अर्स ख्वाब का, देखो तफावत।
देखो अकल असल की, जो होवे अर्स उमत।। ७५ ।।

अब अखण्ड परमधाम और सपने के अन्तर को देखो। परमधाम की जो ब्रह्मसृष्टियां होंगी उनके पास जागृत बुद्धि होगी।

Nijanand App

उमत को देखलावने, बनाए चौदे तबक।
देने पेहेचान गिरो को, यासे जाने हक।।७६ ।।

ब्रह्मसृष्टियों को खेल दिखाने के वास्ते चौदह लोक बनाए जिससे ब्रह्मसृष्टियों को पारब्रह्म की साहबी की पहचान हो जाए।

पावने बुजरकी अर्स की, और बुजरकी खुदाए।
पावने बुजरकी रूहों की, कायम जो इमदाए।।७७ ।।

परमधाम की, पारब्रह्म की, ब्रह्मसृष्टियों की जो सदा से अखण्ड हैं, महिमा बताने के वास्ते ही खेल बनाया है।

सो बुजरकी तो पाइए, जो फिकर कीजे दिल दे।
अर्स लज्जत पाइयत हैं, तेहेकीक किए ए।।७८ ।।

उनकी साहेबी तब जानी जाए जब यहां दिल से विचार करके देखी जाए। तब परमधाम के सुख यहां बैठे मिलते हैं।

सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को।
विचार देखो हादीय की, वानी ले दिलमों।।७९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम खेल में सुख लेने आए हो, सोने के लिए नहीं आए हो। हादी श्री प्राणनाथजी की वाणी को दिल से विचारकर देखो।

गिरो देखत जो ब्रह्मांड, सो तो कछुए नांहें।
सांच निमूना दूसरा, कोई नाहीं अर्स के माहें।।८० ।।

यह जो ब्रह्माण्ड तुम देख रहे हो कुछ नहीं है। परमधाम में कोई और अखण्ड नमूना नहीं है।

जब खावंद अर्स देखिए, तब तो एही एक।
इस बिना और जरा नहीं, जो तूं लाख बेर फेर देख।।८१ ।।

जब परमधाम में श्री राजजी महाराज को देखो तब उस एक की पहचान होती है और दृढ़ता मन में आती है। यहां नाटक बार-बार देखो तो उनके समान यहां कुछ भी नहीं है।

जो कछू अर्स में देखिए, सो सब जात खुदाए।
और खेलौने बगीचे, सो सब जातै के इमदाए।।८२ ।।

परमधाम में जो कुछ भी दिखाई देता है वह सब उसी पारब्रह्म सच्चिदानन्द श्री राजजी महाराज का स्वरूप दिखाई देता है। वहां के खिलौने, बगीचे तथा सब सामग्री अनादि से ही एक जैसी है।

न अर्स जिमिएं दूसरा, कोई और धरावे नाउ।
ए लिख्या वेद कतेब में, कोई नाहीं खुदा बिन काहूं।।८३ ।।

वेद और कतेब में लिखा है कि परमधाम की जमीन में खुदा के सिवाय दूसरा कुछ ऐसा है ही नहीं जिसे वहां से अलग कहा जाए।

और खेलौने जो हक के, सो दूसरा क्यों केहेलाए।
एक जरा कहिए तो दूसरा, जो हक बिना होए इमदाए।।८४ ।।

जो पारब्रह्म के खिलौने हैं वह पारब्रह्म के ही स्वरूप हैं। उनको दूसरा कैसे कहा जाए? दूसरा तो तब कहा जाए यदि उनका स्वरूप पारब्रह्म से अलग हो।

Nijanand App

और पैदा फना जो होत है, क्यों दूसरा कहिए ताए।
ए खेल हैं खावंद के, ए जो चली कतारें जाए।। ८५ ।।

जो पैदा होकर मिटने वाले संसार में मिट जाते हैं उनको भी दूसरा कैसे कहा जाए? यह खेल भी खाविंद का है जो सदा परम्परा से जन्म-मरण के चक्कर में चले जाते हैं।

ए जो दुनियां खेल की, सो चीन्हत हक को नांहें।
ना तो क्यों कहे छल को दूसरा, जो होत पैदा फनाए।। ८६ ।।

यह जो बनने मिटने वाली दुनियां है वह पारब्रह्म को नहीं पहचानती वरना जो पैदा होकर मिट जाता है उसे दूसरा कैसे कहा जाए?

ए जो दुनियां ला इलाह की, ताए क्यों होए चिन्हार।
सो ला ही लिए जात हैं, ज्यों चले चींटी हार।। ८७ ।।

यह दुनियां जो अक्षर ब्रह्म के हुकम से निराकार से पैदा होती है उसे पारब्रह्म की पहचान कैसे हो? वह चींटी की हार कतार की तरह निराकार में ही समा जाती है।

बड़ी बुजरकी हक की, तिन के खेल भी बुजरक।
लिख्या वेद कतेब में, पर इनों न जात सक।। ८८ ।।

पारब्रह्म की बड़ी महिमा है, इसलिए उनके खेल भी महान हैं। वेद कतेबों में सब कुछ लिखा है, परन्तु इस सृष्टि के संशय नहीं मिटते।

झूठ सांच का निमूना, ओ फना ए नेहेचल।
खेल देखे पाइयत हैं, खुद खावंद का बल।। ८९ ।।

झूठ और सत का नमूना कैसा? वह झूठ मिट जाने वाला है और यह अखण्ड सत्ता है। यह तो खेल देखने से पता लगता है कि पारब्रह्म की कितनी महान शक्ति है।

असल आदमियों मिने, कोई पाइए उमत का एक।
ए देखो पटंतर दिल में, दोऊ का विवेक।। ९० ।।

यहां असंख्य मनुष्यों के अन्दर कोई एक ही ब्रह्मसृष्टि दिखाई देती है। अब दिल में विचार करके दोनों के अन्तर को देखो।

अब कहूं मैं तिन को, अर्स खावंद की बात।
खड़ियां तले कदम के, जो हैं हक की जात।। ९१ ।।

अब मैं उन मोमिनों को पारब्रह्म की बात कहती हूं जो पारब्रह्म के ही स्वरूप हैं और उनके चरणों के तले ही मूल-मिलावे में बैठे हैं।

जो उतरे हैं अर्स अजीम से, रूहें और फरिस्ते।
कहिए जात खुदाए की, असल हैं अर्स के।। ९२ ।।

अर्श अजीम से जो रूहें और श्री श्यामाजी खेल में उतरी हैं, वह पारब्रह्म के ही स्वरूप हैं और अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं।

ए जो बात खुदाए की, सुनेंगे भी सोए।
एही हकुल्यकीन, जो अर्स दरगाह के होए।। ९३ ।।

पारब्रह्म की बात को भी वही सुनेंगे जो मोमिन हैं, जिनका यकीन पक्का है और परमधाम के रहने वाले हैं।

Nijanand App

सो फुरमान केहेत है जाहेर, जो उतरे अर्स से।
उतरते अरवाहों सों, कौल किया हक ने।।९४।।

कुरान में स्पष्ट लिखा है कि जो मोमिन परमधाम से उतरकर खेल में आए हैं उनसे पारब्रह्म ने वायदा किया है।

कह्या उतरते हक ने, अलस्तो-बे-रब-कुंम।
फेर कह्या अरवाहों ने, वले न भूलें हम।।९५।।

पारब्रह्म ने रूहों से खेल में उतरते समय कहा था कि मैं ही तुम्हारा खाविंद हूं। तब रूहों ने उत्तर दिया कि बेशक आप हमारे खाविंद है, हम आपको नहीं भूलेंगे।

ए देत अर्स निसानियां, याद आवसी तिन।
सरत करी खावंद ने, उतरते अर्स रूहन।।९६।।

परमधाम की यह बातें (निशान) मोमिनों को ही याद आएंगी, क्योंकि खेल में उतरते समय पारब्रह्म ने आने का वायदा इन्हीं से किया था।

अब जो असल उमत का, ताए देऊं अर्स निसान।
इन विध देऊं साहेदी, ज्यों होए हक पेहेचान।।९७।।

अब जो सच्ची ब्रह्मसृष्टि है उनको परमधाम की पहचान कराती हूं। इस तरह से गवाहियां दूंगी जिससे उन्हें पारब्रह्म की पहचान हो जाए।

कलाम अल्ला की साहेदी, और हदीसें महंमद।
तुमें कहूं तौहीद की, ले रूह अल्ला साहेद।।९८।।

मैं अल्लाह (पारब्रह्म) के वचन कुरान और मुहम्मद साहब की हदीस की गवाही दूंगी और रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) की जागृत बुद्धि की वाणी से उस एक पारब्रह्म की पहचान कराऊंगी।

नूर आवें दीदार को, लेने सुख सुभान।
ए कायम सुख देखिए, ए किया वास्ते पेहेचान।।९९।।

अक्षर ब्रह्म पारब्रह्म के दर्शन को रोज आते हैं। यह अखण्ड सुख देखें। यह मोमिनों की पहचान के वास्ते कहे हैं।

नूरें चाह्या दिल में, देखूं इस्क रूहन।
तब तुमें खेल नूर का, दिल में हुआ देखन।।१००।।

अक्षर ब्रह्म ने रूहों का इश्क (प्रेम) देखने की इच्छा की तब तुमको (रूहों को) भी अक्षर का खेल देखने की इच्छा हुई।

खेल किया तुम वास्ते, देखो दिल में आन।
ए झूठ खेल देखाइया, करने हक पेहेचान।।१०१।।

दिल में विचार करके देखो। यह खेल इसलिए तुम्हारे वास्ते बनाया ताकि झूठ का खेल देखकर सत्य की पहचान कर लो।

विचारो रूहें अर्स की, जो देखाई झूठ नकल।
देखो तफावत दिल में, ले अपनी असल अकल।।१०२।।

हे परमधाम की रूहो! अपनी मूल बुद्धि से विचार करके देखो। यह संसार किस तरह झूठा है। तुम्हारे अखण्ड घर (परमधाम) में और इसमें कितना फर्क है।

Nijanand App

ए निमूना देखाइया, करने पेहेचान तुम।
पेहेले चीन्हो आप को, पीछे हादी और खसम।। १०३ ।।

यह झूठा नमूना तुमको दिखाया है ताकि तुम पहले अपने को श्री श्यामाजी की और फिर अपने धनी की पहचान कर सको।

ए खावंद सिर अपने, आपन इन के अंग।
अर्स वतन अपना, कायम हमेसा संग।। १०४ ।।

यह पारब्रह्म ही हमारे धनी हैं और हम इनकी अंगना हैं। अपना घर परमधाम है। जहां हम हमेशा धनी के साथ रहते हैं।

कायम जिमी अर्स की, साहेबी पूरन कमाल।
तो कैसा निमूना इनका, जिन सिर नूर जमाल।। १०५ ।।

परमधाम की जिमी (जमीन) अखण्ड है, जहां के तुम पूर्ण रूप से मालिक हो। ऐसे मोमिन जिनके मालिक पारब्रह्म हों उनका नमूना खेल में कहां मिलेगा?

इत निमूना तो कहिए, जो कोई छोटा होवे और।
कायम जिमी में दूसरा, काहूं न पाइए ठौर।। १०६ ।।

परमधाम में यदि कोई छोटा हो तो इसका नमूना दिया जाए। उस अखण्ड परमधाम में पारब्रह्म के सिवाय कोई और है ही नहीं।

ना निमूना नूर का, ना निमूना बका वतन।
ना निमूना हक का, ना निमूना हादी रूहन।। १०७ ।।

न अक्षर ब्रह्म का, न अखण्ड परमधाम का, न पारब्रह्म का और न श्यामा महारानी (रूह अल्लाह) का और न रूहों का कोई नमूना है जिससे तुलना कर पहचान कराई जाए।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम हो बका के।
हक अर्स किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते।। १०८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम अखण्ड परमधाम के हो और अब तुम्हारे वास्ते ही अखण्ड परमधाम और पारब्रह्म की पहचान बताई है।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ९२७ ।।

अर्स अजीम की हक मारफत-महाकारन

कहूं अर्स अरवाहों को, रूह अल्ला के इलम।
जासों पाइए हकीकत हक की, मुझे हुआ ज्यों हुकम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे अर्श की अरवाहो! श्री श्यामाजी महारानी के जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से कहती हूं। मुझे जिस तरह से हुकम हुआ है उस तरह से हक की हकीकत कहती हूं, ताकि तुम्हें हक की पहचान हो जाए।

और कहूं मैं अर्स की, ज्यों खबर उमत को होए।
सब विध कहूं कायम की, ज्यों समझे सब कोए।। २ ।।

अब पहले मैं परमधाम की बात कहती हूं जिससे मोमिनों को जानकारी मिल जाए कि मैं सारी अखण्ड हकीकत का बयान करूंगी, जिससे सभी कोई आसानी से समझ सकें।

Nijanand App

ए निमूना देखाइया, करने पेहेचान तुम।
पेहेले चीन्हो आप को, पीछे हादी और खसम।। १०३ ।।

यह झूठा नमूना तुमको दिखाया है ताकि तुम पहले अपने को श्री श्यामाजी की और फिर अपने धनी की पहचान कर सको।

ए खावंद सिर अपने, आपन इन के अंग।
अर्स वतन अपना, कायम हमेसा संग।। १०४ ।।

यह पारब्रह्म ही हमारे धनी हैं और हम इनकी अंगना हैं। अपना घर परमधाम है। जहां हम हमेशा धनी के साथ रहते हैं।

कायम जिमी अर्स की, साहेबी पूरन कमाल।
तो कैसा निमूना इनका, जिन सिर नूर जमाल।। १०५ ।।

परमधाम की जिमी (जमीन) अखण्ड है, जहां के तुम पूर्ण रूप से मालिक हो। ऐसे मोमिन जिनके मालिक पारब्रह्म हों उनका नमूना खेल में कहां मिलेगा?

इत निमूना तो कहिए, जो कोई छोटा होवे और।
कायम जिमी में दूसरा, काहूं न पाइए ठौर।। १०६ ।।

परमधाम में यदि कोई छोटा हो तो इसका नमूना दिया जाए। उस अखण्ड परमधाम में पारब्रह्म के सिवाय कोई और है ही नहीं।

ना निमूना नूर का, ना निमूना बका वतन।
ना निमूना हक का, ना निमूना हादी रूहन।। १०७ ।।

न अक्षर ब्रह्म का, न अखण्ड परमधाम का, न पारब्रह्म का और न श्यामा महारानी (रूह अल्लाह) का और न रूहों का कोई नमूना है जिससे तुलना कर पहचान कराई जाए।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम हो बका के।
हक अर्स किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते।। १०८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम अखण्ड परमधाम के हो और अब तुम्हारे वास्ते ही अखण्ड परमधाम और पारब्रह्म की पहचान बताई है।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ९२७ ॥

अर्स अजीम की हक मारफत-महाकारन

कहूं अर्स अरवाहों को, रूह अल्ला के इलम।
जासों पाइए हकीकत हक की, मुझे हुआ ज्यों हुकम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे अर्श की अरवाहो! श्री श्यामाजी महारानी के जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से कहती हूं। मुझे जिस तरह से हुकम हुआ है उस तरह से हक की हकीकत कहती हूं, ताकि तुम्हें हक की पहचान हो जाए।

और कहूं मैं अर्स की, ज्यों खबर उमत को होए।
सब विध कहूं कायम की, ज्यों समझे सब कोए।। २ ।।

अब पहले मैं परमधाम की बात कहती हूं जिससे मोमिनों को जानकारी मिल जाए कि मैं सारी अखण्ड हकीकत का बयान करूंगी, जिससे सभी कोई आसानी से समझ सकें।

Nijanand App

हक जात जाहेर करूं, और जाहेर हादी उमत।
नूर मकान जाहेर करूं, ए ऐकै जात सिफत।। ३ ।।

मैं हक की जात श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टि का वर्णन करती हूं और उसके बाद अक्षर ब्रह्म का वर्णन करूंगी। जिसकी सिफत भी एक सी है। वह भी पारब्रह्म के ही अंग हैं।

महंमद नूर हक का, रूहें महंमद का नूर।
ए हमेसा बका मिने, ए एकै जात जहूर।। ४ ।।

श्यामा महारानी पारब्रह्म के अंग हैं और रूहें श्री श्यामा महारानी के अंग हैं। यह हमेशा ही अखण्ड घर (परमधाम) में एक ही स्वरूप हैं, ऐसा जानना।

ए जो सदरतुल-मुंतहा, ए है कायम अर्स।
ए जात सिफात एकै, ए हैं अरस-परस।। ५ ।।

यह जो अक्षरधाम है, यह भी अखण्ड घर है और यह एक ही पारब्रह्म के अंग हैं। यह दोनों एक ही स्वरूप हैं और दोनों धाम भी एक जैसे हैं।

नूर महंमद रूहें हक की, ए हैं एकै जात।
और बाग जोए हौज कौसर, ए साहेबी अर्स सिफात।। ६ ।।

अक्षर ब्रह्म, ब्रह्मसृष्टियां, श्यामाजी और पारब्रह्म सभी एक अक्षरातीत की जात हैं। परमधाम के बाग, हौज कौसर और जमुनाजी सब उस परमधाम की शोभा हैं।

पार ना अर्स जिमी का, ना बागों का पार।
पार ना पसु पंखियन को, ना कछू खेल सुमार।। ७ ।।

परमधाम के जमीन, बगीचे, पशु, पक्षी तथा उनके खेल सब बेशुमार हैं।

पार न बुध बल को, पार ना खूबी खुसबोए।
पार ना इस्क आराम को, नूर पार ना इत कोए।। ८ ।।

इनकी बुद्धि, शक्ति, खूबियां, सुगन्धि, इश्क के सुख और आराम बेशुमार हैं। अक्षर धाम के आगे दूसरा और कुछ वहां नहीं है (परमधाम के सिवाय)।

एक पात बिरिख को ना गिरे, ना खिरे पंखी का पर।
ना होए नया कछू अर्स में, जंगल या जानवर।। ९ ।।

यहां पर वृक्ष का एक भी पत्ता नहीं गिरता। पक्षी का पर (पंख भी) नहीं गिरता। यहां जंगल या जानवर कुछ भी नया नहीं होता।

अब कहूं बेवरा खेल का, हुआ जिन कारन।
सो वास्ता कहूं इन भांत सों, ज्यों होए सबे रोसन।। १० ।।

अब खेल की हकीकत बताती हूं जिनके वास्ते यह बना है। उस बनने के कारण को बताती हूं जिससे सबको पता चल जाए।

नूर मकान जो हक का, जित होत है हुकम।
होए पल में पैदा फना, ऐसे लाख इंड आलम।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज का जो अक्षरधाम है वहां उनका हुकम चलता है और उस हुकम से एक पल में लाखों ब्रह्माण्ड बनकर नष्ट हो जाते हैं।

Nijanand App

अर्स खावंद है एकला, आपै हक जात।
बिना कुदरत कादर की, क्यों पाइए सिफात।। १२ ।।

परमधाम का मालिक पारब्रह्म एक है और अपनी जात सब कुछ जो वहां है वह स्वयं पारब्रह्म ही है। अब अक्षर की कुदरत (योगमाया) की शक्ति जाने बिना पारब्रह्म को कैसे समझा जाए?

इत हमेसा होत है, इन कादर की कुदरत।
ए खेल इन खावंद के, देखो नूर सिफत।। १३ ।।

यहां अक्षरधाम में अक्षर ब्रह्म के हुकम से खेल बनता है। ऐसी सिफत इस पारब्रह्म की है।

खेल में कई मुद्दत, होत है दुनियां को।
कई कोट होत पैदा फना, नूर के निमखमों।। १४ ।।

दुनियां के इस खेल में कई मुद्दतें (युग) बीत जाते हैं और अक्षर के एक पल में कई दुनियां बनकर मिट जाती हैं।

जब कछू पैदा न हुआ, जिमी या आसमान।
सो हुकम तब ना हुआ, जिनथें उपजी जहान।। १५ ।।

जब यहां सृष्टि में जमीन आसमान कुछ भी बना नहीं था, तब पारब्रह्म का कुछ हुकम नहीं हुआ था जिससे दुनियां बनी है।

अब सुनो इन खेल की, रूहें उतरी जिन वास्ते।
फुरमान ल्याया रसूल, और उतरे फरिस्ते।। १६ ।।

अब इस खेल की हकीकत को सुनो जिसमें रूहें खेल देखने आई हैं। इनके वास्ते और ईश्वरीसृष्टि के वास्ते रसूल साहब कुरान लेकर आए हैं।

ए बीच ला मकान के, खेल जिमी आसमान।
चौदे तबक भई दुनियां, आखिर फना निदान।। १७ ।।

जमीन और आसमान का यह सारा खेल निराकार के बीच लटक रहा है। चौदह लोकों की दुनियां इसी निराकार के बीच है जो आखिर को नष्ट हो जाएगी।

ए खेल हुआ महंमद वास्ते, और अर्स उमत।
आखिर जाहेर होए के, खोलसी हकीकत।। १८ ।।

यह खेल श्यामा महारानी, ब्रह्मसृष्टियों और अक्षरब्रह्म के वास्ते बनाया गया है जो आखिर वक्त में प्रगट होकर सारी हकीकत बताएंगे।

अर्स उमत होसी जाहेर, और जाहेर हक जात।
करसी दुनियां कायम, ए महमंद की सिफात।। १९ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां और श्यामा महारानी जाहिर होंगी और मुहम्मद की सिफारिश से दुनियां को अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगी।

रूह अल्ला उतरे अर्स से, होए काजी लेसी हिसाब।
दे दीदार करसी कायम, यों कहे महंमद किताब।। २० ।।

श्यामा महारानी परमधाम से उतरकर न्यायाधीश बनकर दुनियां का हिसाब लेंगी और आखिरत में सबको दर्शन देकर बहिश्तों में कायम करेंगी, ऐसा कुरान में लिखा है।

Nijanand App

महंमद मेंहेदी आवसी, करसी इमामत।
बका पर सिजदा गिरोह को, करावसी आखिरत।। २१ ।।

इन सबके बीच में इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी प्रगट होंगे और अखण्ड परमधाम पर सब दुनियां वालों को सिजदा करवाएंगे।

सब कहें किताबें हक के, खेल हुआ हुकमें।
किस वास्ते हुकम किया, ए ना कह्या किनने।। २२ ।।

सभी धर्मग्रन्थ कहते हैं कि पारब्रह्म के हुकम से ही यह खेल बना है, पर यह हुकम किसके वास्ते हुआ, यह किसी ने नहीं बताया।

अब देखो दुनियां जाहेरी, करम कांड सरीयत।
इनके इस्क ईमान की, कहूं सो हकीकत।। २३ ।।

अब दुनियां को जाहिरी रूप से देखो जो कर्मकाण्ड और शरीयत में चल रही है। इनके इश्क और ईमान की हकीकत बताती हूं।

दुनी कहे हक को, वजूद नहीं मुतलक।
तो ए हुकम किनने किया, जो सूरत नाहीं हक।। २४ ।।

दुनियां पारब्रह्म को बिल्कुल निराकार कहती है। यदि पारब्रह्म का स्वरूप नहीं है, तो यह हुकम करने वाला कौन है?

न ठौर ठेहेरावें अर्स को, ना हक की सूरत।
हुकम सूरत बिना क्यों होए, और हुकम रखे साबित।। २५ ।।

इस दुनियां वाले पारब्रह्म का परमधाम कहां है, नहीं मानते। पारब्रह्म का स्वरूप नहीं मानते। यदि पारब्रह्म का स्वरूप नहीं होगा तो हुकम कौन करेगा? जिस हुकम का होना तो मानते हैं।

हक वजूद महंमद कहे, नूर पार तजल्ला नूर।
रद-बदल वास्ते उमत, पोहोंच के करो हजूर।। २६ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि जो पारब्रह्म का स्वरूप है, वह अक्षरधाम के पार अक्षरातीत धाम में है। जहां पहुंचकर ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते आमने-सामने बातें कीं।

हकें हुकम यों किया, कहे हरफ नब्बे हजार।
तीस जाहेर कीजियो, तीस तुम पर अखत्यार।। २७ ।।

पारब्रह्म ने रसूल साहब को नब्बे हजार हरफ कहे और इस तरह से हुकम किया कि तीस हजार शब्द जाहिर करना तथा दूसरे तीस का तुमको अख्तियार है चाहो तो जाहिर कर सकते हो।

और तीस गुझ रखो, वे आखिर पर मुद्दार।
सो हम आए के खोलसी, अर्स बका के द्वार।। २८ ।।

बाकी बचे तीस हजार को छिपाकर रखो। यह अन्तिम समय में मैं आकर जाहिर करूंगा और अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलूंगा।

सो साहेब आखिर आवसी, किया महंमद सों कौल।
भिस्त दरवाजे कायम, सब को देसी खोल।। २९ ।।

मुहम्मद साहब से खुदा ने वायदा किया कि आखिर में मैं आऊंगा और मारफत के तीस हजार हरफ खोलूंगा और सबको बहिश्तों में कायमी दूंगा।

Nijanand App

काजी होए के बैठसी, होसी सबों दीदार।
तो भी ईमान न दुनी को, जो एती करी पुकार।। ३० ।।

जब स्वयं इमाम मेंहदी सबके न्यायाधीश बनकर बैठेंगे तो सबको दर्शन होगा। इतनी पुकार करने पर भी दुनियां को उन पर ईमान नहीं आता।

ऐसा ईमान इन दुनी का, कहे महंमद को बरहक।
और महंमद के फुरमाए में, फेर तिन में ल्यावें सक।। ३१ ।।

दुनियां वालों का ऐसा ईमान है कि मुहम्मद को तो सच्चा कहते हैं, परन्तु मुहम्मद की बताई बातों में संशय रखते हैं।

महंमद बातें हकसों, पोहोंच के करी हजूर।
दुनी न माने हक सूरत, जासों एती भई मजकूर।। ३२ ।।

मुहम्मद ने पारब्रह्म से आमने-सामने बातें कीं। जिस खुदा से इतनी बातें हुईं उस पारब्रह्म के स्वरूप को दुनियां वाले नहीं मानते।

और कहूं लैलत कदर की, जो कहे तकरार तीन।
हादी हुकमें रूहें फरिस्ते, बीच नाजल इसलाम दीन।। ३३ ।।

अब लैल तुल कदर की रात का बयान करती हूं जिसके तीन भाग हुए। श्री राजजी महाराज के हुकम से श्यामा महारानी ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टि खेल देखने के वास्ते निजानन्द सम्प्रदाय में आए हैं।

और आगे नूह तोफान के, बीच लैलत कदर।
गिरो उतरी अर्स से, जो चढ़ी किस्ती पर।। ३४ ।।

लैल तुल कदर की रात्रि में नूह-तूफान के बाद, अर्थात् रास लीला के बाद वही रूहें इस खेल में उतरीं।

दो तकरार पेहेले कहे, जो गुजरे मांहें लैल।
तोफान पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल।। ३५ ।।

लैल तुल कदर में दो बार पहले बृज में और फिर रास में लीला हुई। इन दोनों के बाद यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड है। जिसमें तारतम वाणी से सवेरा होने पर पहचान कर खेल देख रहे हैं।

दसमी लग रोज रब का, सो दुनी के साल हजार।
कह्या बेहेतर महीने हजार से, लैल तीसरा तकरार।। ३६ ।।

रसूल साहब के जाने के बाद दसवीं सदी तक दुनियां के हजार साल और पारब्रह्म का दिन एक है। रात्रि का तीसरा भाग हजार महीने से अधिक साल का लिखा है।

महंमद मेंहेदी ईसा नाजल, असराफील जबराईल।
रूहें फरिस्ते ऊपर, हकें भेजे एह वकील।। ३७ ।।

इस रात्रि के तीसरे भाग में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि के वास्ते पारब्रह्म ने इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी, ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी देवचन्द्रजी) असराफील (जागृत बुद्धि का फरिश्ता) और जबराईल (जोश का फरिश्ता) इन सबको भेजा है।

Nijanand App

रहे साल चौरासी लैल में, तिन ऊपर हुई फजर।
अग्यारैं सदी मिने, मेरी बातून खुली नजर।। ३८ ।।

इस ब्रह्माण्ड में आने के बाद (अर्थात् सम्वत् १६३८ से १७२२ तक) चौरासी साल तक अंधेरे में रहे। जब जयराम भाई के घर दीप बन्दर में पहुंचकर जागनी का काम शुरू किया तो ज्ञान का सवेरा हुआ। इस तरह से ग्यारहवीं सदी में मेरी बातूनी दृष्टि खुल गई।

चौदे तबकों न पाइया, अर्स हक का कित।
सो नजीक देखाए सेहेरग से, इलम ईसा के इत।। ३९ ।।

चौदह लोकों में कोई जानकारी देने वाला नहीं था कि परमधाम कहां है। धनी श्री देवचन्द्रजी के तारतम वाणी से वह परमधाम सेहेरग से (प्राण की नली से) नजदीक लगने लगा।

अर्स ना चौदे तबक में, सो लिए इलम ईसा के।
नजीक देखाया सेहेरग से, बीच अर्स बैठाए ले।। ४० ।।

ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान से यह निश्चय हो गया कि वह अखण्ड घर (परमधाम) चौदह लोकों में नहीं है और वह सेहेरग से नजदीक है। यह पहचान हुई कि मैं परमधाम में बैठी हूं।

और मेहेर करी मोहे रूहअल्ला, दिया खुदाई इलम।
तूं रूह है अर्स अजीम की, तुझ को दिया हुकम।। ४१ ।।

श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी ने खुदाई इलम (तारतम ज्ञान) देकर मेरे ऊपर कृपा की और कहा कि तुम परमधाम की हो और मैं तुमको हुकम देता हूं।

गिरो आई लैल के खेल में, सो तुमें मिलसी आए।
दिल साफ इनों के करके, अर्स में लीजे उठाए।। ४२ ।।

बारह हजार ब्रह्मसृष्टियां खेल में आई हैं। वह तुम्हें आकर मिलेंगी। उनके दिलों के संशय मिटाकर घर ले आओ।

ए बात मैं दिल में लई, तब महंमद हुए मेहेरबान।
हकीकत मारफत के, पट खोल दिए फुरमान।। ४३ ।।

इस बात को मैंने दृढ़ कर लिया। उसके बाद रसूल साहब की मेहरबानी हुई और कुरान से परमधाम की हकीकत का पता चला।

सब सुध भई अर्स की, हुई हक सों निसबत।
गिरो मिली मोहे वतनी, ताए देऊं अर्स न्यामत।। ४४ ।।

अब घर की सारी पहचान हो गई। पारब्रह्म की अंगना होने की पहचान हुई। मेरे सुन्दरसाथ मिले। अब उनको अर्श का खजाना देती हूं।

ए सुकन पेहेले लिखे, बीच कतेब वेद।
सो ए करत हों जाहेर, जो दिया दोऊ हादियों भेद।। ४५ ।।

यह वचन वेद और कतेब में पहले से ही लिखे थे। उसको मैं जाहिर करता हूं दोनों हादी (वेद के श्री देवचन्द्रजी ने और कुरान के रसूल साहब) ने छिपे भेदों का रहस्य बताया।

Nijanand App

रूहें बेनियाज थीं, बीच दरगाह बारे हजार।
जाने ना आप अर्स की, साहेबी अपार।।४६ ।।

परमधाम में बारह हजार रूहों (जो द्वेष और इच्छा रहित थीं) उनको अपने घर की साहेबी की खबर नहीं थी।

सुध नाहीं दुख सुख की, ना सुध विरह मिलाप।
ना सुध बुजरक अर्स की, खबर न खावंद आप।।४७ ।।

उन्हें दुःख की, सुख की, बिछुड़ने की, मिलने की, अपनी, धनी की तथा परमधाम की महिमा क्या है, की कुछ भी खबर नहीं थी।

साहेब बंदे की सुध नहीं, छोटा बड़ा क्यों कर।
ना सुध एक ना दोए की, ना सांच झूठ खबर।।४८ ।।

उन्हें धनी तथा रूहें और फरिश्ते बड़े छोटे कैसे हैं, पारब्रह्म एक अद्वैत कैसा है और संसार द्वैत कैसा है, सच कैसा है झूठ क्या है की सुध नहीं थी।

ना सुध दोस्त ना दुस्मन, ना सुध नफा नुकसान।
ना सुध दूर नजीक की, ना सुध कुफर ईमान।।४९ ।।

उनके दोस्त कौन हैं, दुश्मन कौन हैं, नफा किसमें है, नुकसान किसमें है, दूर कौन है, पास कौन है, ईमान वाले कौन हैं, काफिर कौन हैं, की पहचान नहीं थी।

तिस वास्ते खेल देखाइया, ए बात दिल में आन।
झूठ निमूना देखाए के, रूहों होए हक पेहेचान।।५० ।।

पारब्रह्म ने इन बातों का दिल में विचार कर खेल दिखाया जिससे झूठ का नमूना देखकर रूहों को सत की पहचान हो जाए।

सांची साहेबी हक की, कोई नाहीं दूजा और।
झूठ नकल देखे बिना, पावे ना अर्स ठौर।।५१ ।।

पारब्रह्म की साहेबी ही सत्य है और दूसरा कुछ नहीं, परन्तु झूठी नकल को देखे बिना अखण्ड घर के ठिकाने की कदर नहीं होती।

बिना निमूने न पाइए, क्यों है तफावत।
कछू दूजी देखे बिना, पाइए ना हक सिफत।।५२ ।।

बिना नमूने के फर्क पता नहीं चलता। जब तक झूठी माया को न देख लें, तब तक सत्य की पहचान नहीं होती।

यों जान बीच बका मिने, दिल में ल्याए हक।
नूर-जलाल रूहन को, देखें असल इस्क।।५३ ।।

अखण्ड परमधाम के बीच में श्री राजजी महाराज ने दिल में ऐसा विचार किया कि अक्षर ब्रह्म और रूहों को सच्चे इश्क की पहचान करा दें।

और लिया ए दिल में, जो अरवाहें अर्स की।
दूजी बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी।।५४ ।।

और दिल में यह विचार किया कि जो परमधाम की रूहें हैं उनको द्वैत संसार का खेल देखे बिना सच्ची साहेबी क्या है, का ज्ञान नहीं होगा।

Nijanand App

जित दूजी कोई है नहीं, एकै साहेब हक।
तो तिन को दूजी बिना, कौन कहे बुजरक।।५५।।

जहां एक सच्चे पारब्रह्म के अलावा कोई दूसरा है ही नहीं, तो दूसरे के बिना उसको बड़ा कौन कहेगा?

असल होए जित अकेला, और होए नाहीं नकल।
सो नकल देखे बिना, क्यों पाइए असल।।५६।।

जहां पर केवल असल हो और नकल न हो, तो नकल को देखे बिना असल की पहचान कैसे होगी?

जित दुख कोई जाने नहीं, होए अकेला सुख।
ए सुख लज्जत तब पाइए, जब देखिए कछू दुख।।५७।।

जहां कोई दुःख को जानता ही नहीं, वहां केवल सुख ही सुख है, वहां सुख की कदर तब होगी जब कुछ दुःख देखें।

सांच होए जित एकै, पाइए ना जिद के छूट।
सांच हक तब पाइए, जब होए निमूना झूठ।।५८।।

जहां केवल सत्य हो और झूठ हो ही नहीं, वहां सच्चे की पहचान झूठे नमूने के बिना कैसे होगी?

दूसरा कोई है नहीं, जित एकै होए।
तो तिन की सुध दूजे बिना, क्यों कर देवे सोए।।५९।।

जहां एक के बिना कोई दूसरा है ही नहीं, तो उस एक की सुध दूसरे के बिना कोई कैसे देगा?

जित साहेब होवे एकला, न साहेदी दूजे बिन।
बिन दिए साहेदी तीसरे, क्यों आवे ईमान तिन।।६०।।

जहां पर पारब्रह्म अकेले हों और गवाही देने के लिए दूसरा कोई न हो, तो तीसरे आदमी को बिना गवाही के ईमान कैसे आएगा?

तो कह्या खुदा एक है, और महंमद कह्या बरहक।
सो न आवे ख्वाबी दम पर, जो लो होए न रूहें बुजरक।।६१।।

इसीलिए कुरान में खुदा एक है और मुहम्मद के वचन सत्य हैं, लिखा है। वह खुदा जब तक उसकी रूहें खेल में नहीं आ जातीं तब तक जीवसृष्टि के वास्ते नहीं आएंगे?

ए खेल हुआ तिन वास्ते, हक के हुकम।
महंमद आया रूहों वास्ते, ले फुरमान खसम।।६२।।

पारब्रह्म के हुकम से ही यह खेल मोमिनों के वास्ते बना है और कुरान लेकर मुहम्मद साहब मोमिनों के वास्ते ही आए हैं।

जो ल्याए फुरमान रसूल, सो अब खोली हकीकत।
अर्स रूहें फरिस्ते, हुई हक की मारफत।।६३।।

रसूल साहब जो कुरान लाए हैं उसकी हकीकत अब खुली। अब घर की, ब्रह्मसृष्टि की, ईश्वरीसृष्टि की तथा पारब्रह्म की पहचान हुई।

Nijanand App

लिख्या था जो अव्वल, सो आए पोहोंची कयामत।
भिस्त दुनी को देय के, हादी ले उठसी उमत।। ६४ ।।

जो पहले से कुरान में लिखा था, वह कयामत का समय आ गया। अब दुनियां को बहिश्तों में अखण्ड करके श्री प्राणनाथजी अपनी अंगनाओं को साथ लेकर अपने घर जाएंगे।

इन बिध कहूं बेवरा, ज्यों रूहें जानें बुजरकी।
देखाए बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी।। ६५ ।।

मैंने यह हकीकत इस तरह से लिखी है जिससे ब्रह्मसृष्टियों को पारब्रह्म की साहेबी का पता चल जाए। इस तरह से दिखाए बिना वह अपने आप नहीं समझ सकती थीं।

हकें देखाई अर्स साहेबी, हादी रूहों को यों कर।
दुई देखाई झूठ ख्वाब में, पावने पटंतर।। ६६ ।।

पारब्रह्म ने श्यामाजी महारानी और रूहों को परमधाम की साहेबी इस तरह से दिखा दी। इस संसार के झूठे सपने में द्वैत और अद्वैत भाव के फर्क को दिखा दिया।

चढ़ना है नासूत से, तिन ऊपर है मलकूत।
तिन पर ला-मकान है, तिन पर नूर बका साबूत।। ६७ ।।

मृत्युलोक से चढ़कर बैकुण्ठ, उसके ऊपर निराकार तथा उसके ऊपर अखण्ड अक्षरधाम जाना है।

कोट नासूत की दुनियां, मलकूत को पूजत।
खुदा याही को जानहीं, ए मलकूत साहेबी इत।। ६८ ।।

करोड़ों मृत्युलोकों की दुनियां बैकुण्ठ को पूजती है और उसी को खुदा करके जानती है।

कोट मलकूत के खावंद, ला के तले बसत।
नूर सिफत कर कर गए, पर आगे ना पोहोंचत।। ६९ ।।

ऐसे करोड़ों बैकुण्ठों के मालिक निराकार के नीचे बसते हैं। वह अक्षर की सिफतें तो करते हैं पर निराकार के आगे नहीं जा सकते।

वेदें नाम धरे खेल के, पूत बंझा सींग ससक।
आकास फूल इनको कह्या, एक जरा न रखी रंचक।। ७० ।।

वेदों में खेल को बंझा पूत (वंध्या-पुत्र), खरगोश (शशक) के सिर पर सींग, आकाश के फूल के समान कहा है, जो कभी होते ही नहीं, अर्थात् निराकार कहा है।

कतेब कहे तले ला के, सो खेल है सब ला।
ए कुंन केहेते हो गया, सो कयामत को फना।। ७१ ।।

कतेब कहता है कि (ला, हवा) निराकार के नीचे सब मिट जाने वाला है। जो संसार कुंन कहने से बन गया है, वह कयामत के दिन नष्ट हो जाएगा।

जो जाने खेल को साहेबी, सो खेलै के कबूतर।
इन की सद्दर सुरिया लग, सो हकें पोहोंचें क्यों कर।। ७२ ।।

जैसे खेल के कबूतर बाजीगर को नहीं जानते, उसी तरह से जीवसृष्टि पारब्रह्म को नहीं जानती। इनका ध्यान सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) तक ही जाता है। तो यह पारब्रह्म को कैसे पहचानें?

Nijanand App

कहे कबूतर खेल के, खेल सरीक हक का।
हक हमेसा वेद कतेब में, खेल तीनों काल फना।।७३ ।।

खेल के कबूतरों के समान ही पारब्रह्म का यह संसार खेल है। पारब्रह्म हमेशा अखण्ड है। वेद कतेब में खेल को तीन काल (भूत, वर्तमान और भविष्य) में नाशवान बताया है।

एक साहेबी नूर हक की, और खेल कछुए नाहें।
न सरीक न निमूना, ए लिख्या वेद कतेबों मांहें।।७४ ।।

वेद-कतेबों में लिखा है कि पारब्रह्म के नूर की साहेबी सत्य है और यह खेल कुछ भी नहीं है। न कोई नमूना देने योग्य वस्तु है जिससे उसकी उपमा दी जाए।

खेल तो झूठा फना कह्या, साहेब हमेसा हक।
जैसा साहेब बुजरक, खेल भी तिन माफक।।७५ ।।

खेल को नाशवान कहा है। पारब्रह्म अखण्ड है। जैसे पारब्रह्म महान हैं उनका खेल भी उसी तरह बड़ा है।

झूठ निमूना हक को दीजिए, ए कैसी निसबत।
ए झूठ खेल देखाइया, लेने हक लज्जत।।७६ ।।

झूठे की उपमा सत को कैसे दी जाए और कैसे उनके सम्बन्ध की पहचान की जाए? श्री राजजी महाराज ने सत्य की लज्जत देने के वास्ते ही यह झूठा खेल दिखाया है।

कोट इंड पैदा फना, होवें नूर के एक पल।
ऐसी नूर जलाल की, कुदरत रखे बल।।७७ ।।

अक्षर के एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड पैदा होते हैं। इतनी ताकत अक्षर ब्रह्म की कुदरत (मूल प्रकृति) में है।

तिन से कायम होत है, सदरतुलमुंतहा जित।
होए नाहीं इन जुबां, नूर मकान सिफत।।७८ ।।

सदरतुलमुंतहा (अक्षरधाम) जो अखण्ड है, उसकी सिफत इस झूठी जबान के कहने में नहीं आती।

सदरतुलमुंतहा थें, आवत नूर-जलाल।
जित है अर्स अजीम, खावंद नूर जमाल।।७९ ।।

अक्षरधाम से अक्षर ब्रह्म परमधाम में नूरजमाल (अक्षरातीत) के दर्शन को आते हैं।

सो नूर नूरतजल्ला के, दायम आवे दीदार।
इन दरगाह में उमत, रूहें बारे हजार।।८० ।।

अक्षर ब्रह्म पारब्रह्म के दर्शन को रोज ही आते हैं। इस पवित्र घर में बारह हजार रूहें रहती हैं।

एह मरातबा रूहन का, जिन का हादी अहमद।
मीम गांठ जब खुली, तब सोई हक अहद।।८१ ।।

इन रूहों की ऐसी साहेबी है। जिनके हादी श्यामा महारानी हैं। मीम की गांठ खुलेगी, तब 'यह एक पारब्रह्म है' यह जाहिर हो जाएगा, अर्थात् जब श्री प्राणनाथजी जाहिर हो जाएंगे तो सब धर्मों के रहस्य खुल जाएंगे।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, देखो खसम प्यार।
ईसा महंमद अंदर आए के, खोल दिए सब द्वार।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अपने धनी के प्यार को देखो कि रसूल मुहम्मद और श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी को मेरे अन्दर बिठाकर सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य खोल दिए।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ १००९ ॥

अब तुम निकसो नींद से, आए पोहोंची सरत।
कौल किया था हक ने, सो आई कयामत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! श्री राजजी महाराज ने जो कयामत के समय आने का वायदा किया था वह समय आ गया है। अब तुम खेल से बाहर निकलो।

जबराईल हक हुकमें, ल्याया नामें वसीयत।
फुरमान फकीरों सफकत, ले आवे दुनी बरकत।। २ ।।

पारब्रह्म के हुकम से जबराईल फरिश्ता मक्का मदीना से वसीयतनामा लाए हैं जिनमें कुरान, पीरों की शफकत (कृपा) और दुनियां की बरकत मक्का से उठकर हिन्दुस्तान में आ गई है, का लेख है।

द्वार तोबा के बंद होएसी, अग्यारैं सदी आखिर।
जो होवे अरवा अर्स की, सो नींद करे क्यों कर।। ३ ।।

ग्यारहवीं सदी के अन्त में तोबा के दरवाजे बन्द हो जाएंगे (वाणी उतरनी बन्द हो जाएगी)। परमधाम की जो ब्रह्मसृष्टियां हैं वह अब कैसे सोती रहेंगी?

आए लैल के खेल में, लेने अर्स लज्जत।
सुख सांचे झूठे दुख में, लेने को एह बखत।। ४ ।।

रात्रि में खेल देखने के वास्ते आए थे ताकि परमधाम के सुखों की लज्जत मिल सके। परमधाम के सच्चे सुख को संसार के झूठे दुःख में बैठकर लेने का यह मौका है।

अपन बैठे बीच अर्स के, अर्स को नाहीं सुमार।
दसों दिस मन दौड़ाइए, काहूं न आवे पार।। ५ ।।

हम अखण्ड घर (परमधाम) में बैठे हैं। जो बेशुमार सुख देने वाला है। इसी दिशा से मन में विचार करके देखो तो उन सुखों की कोई सीमा नहीं है।

खसमें ख्वाब देखाइया, बीच अर्स अपने इत।
हक हादी रूहें मिलाए के, उड़ाए दई गफलत।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमको घर में ही बिठाकर सपने का खेल दिखाया है और अब श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानी और रूहों को मिलाकर सब संशय दूर कर दिए हैं।

ए खेल तो जरा है नहीं, सब है अर्स खसम।
बैठे इतहीं जागिए, उठो अर्स में तुम।। ७ ।।

यह खेल तो कुछ नहीं है, मिटने वाला है। अखण्ड तो श्री राजजी महाराज का परमधाम ही है। जब यहां जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से जाग जाएंगे, तो तुम्हारे मूल तन परमधाम में उठ बैठेंगे।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, देखो खसम प्यार।
ईसा महंमद अंदर आए के, खोल दिए सब द्वार।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अपने धनी के प्यार को देखो कि रसूल मुहम्मद और श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी को मेरे अन्दर बिठाकर सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य खोल दिए।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ १००९ ॥

अब तुम निकसो नींद से, आए पोहोंची सरत।
कौल किया था हक ने, सो आई कयामत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! श्री राजजी महाराज ने जो कयामत के समय आने का वायदा किया था वह समय आ गया है। अब तुम खेल से बाहर निकलो।

जबराईल हक हुकमें, ल्याया नामें वसीयत।
फुरमान फकीरों सफकत, ले आवे दुनी बरकत।। २ ।।

पारब्रह्म के हुकम से जबराईल फरिश्ता मक्का मदीना से वसीयतनामा लाए हैं जिनमें कुरान, पीरों की शफकत (कृपा) और दुनियां की बरकत मक्का से उठकर हिन्दुस्तान में आ गई है, का लेख है।

द्वार तोबा के बंद होएसी, अग्यारैं सदी आखिर।
जो होवे अरवा अर्स की, सो नींद करे क्यों कर।। ३ ।।

ग्यारहवीं सदी के अन्त में तोबा के दरवाजे बन्द हो जाएंगे (वाणी उतरनी बन्द हो जाएगी)। परमधाम की जो ब्रह्मसृष्टियां हैं वह अब कैसे सोती रहेंगी?

आए लैल के खेल में, लेने अर्स लज्जत।
सुख सांचे झूठे दुख में, लेने को एह बखत।। ४ ।।

रात्रि में खेल देखने के वास्ते आए थे ताकि परमधाम के सुखों की लज्जत मिल सके। परमधाम के सच्चे सुख को संसार के झूठे दुःख में बैठकर लेने का यह मौका है।

अपन बैठे बीच अर्स के, अर्स को नाहीं सुमार।
दसों दिस मन दौड़ाइए, काहूं न आवे पार।। ५ ।।

हम अखण्ड घर (परमधाम) में बैठे हैं। जो बेशुमार सुख देने वाला है। इसी दिशा से मन में विचार करके देखो तो उन सुखों की कोई सीमा नहीं है।

खसमें ख्वाब देखाइया, बीच अर्स अपने इत।
हक हादी रूहें मिलाए के, उड़ाए दई गफलत।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमको घर में ही बिठाकर सपने का खेल दिखाया है और अब श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानी और रूहों को मिलाकर सब संशय दूर कर दिए हैं।

ए खेल तो जरा है नहीं, सब है अर्स खसम।
बैठे इतहीं जागिए, उठो अर्स में तुम।। ७ ।।

यह खेल तो कुछ नहीं है, मिटने वाला है। अखण्ड तो श्री राजजी महाराज का परमधाम ही है। जब यहां जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से जाग जाएंगे, तो तुम्हारे मूल तन परमधाम में उठ बैठेंगे।

Nijanand App

अर्स बाग हौज जोए के, करो याद हक के सुख।
ज्यों पेड़ झूठे ख्वाब का, उड़ जाए सब दुख।। ८ ।।

अखण्ड घर परमधाम के बाग, बगीचे, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी तथा अपने धनी श्री राजजी महाराज के सुखों को याद करो। जिससे इस सपने के झूठे संसार के सभी दुःख जड़ से समाप्त हो जाएं।

असल आराम हिरदे मिने, अर्स को अखंड।
तब ए झूठे ख्वाब को, रहे न पिंड ब्रह्मांड।। ९ ।।

और फिर अखण्ड घर परमधाम के सच्चे सुख हृदय में आ जाएं। ऐसा होने से इस झूठे सपने के झूठे तन तथा ब्रह्माण्ड दोनों समाप्त हो जाएंगे।

कायम हक के अर्स में, बैठे अपने ठौर।
हक के इत वाहेदत में, कोई नाहीं काहूं और।। १० ।।

और फिर हम देखेंगे कि हम अपने अखण्ड घर परमधाम में अपने ठिकाने मूल-मिलावा में ही बैठे हैं और श्री राजजी महाराज की एकदिली श्यामा महारानी और रूहों के सिवाय और कोई नहीं है।

महामत कहे ए मोमिनो, इस्क लीजे हक।
असल अर्स के बीच में, हक का नाम आसिक।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मोमिनो! अपने धनी से सच्चा इश्क लो और अब यह जान लो कि अखण्ड परमधाम में पारब्रह्म ही आशिक है।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ १०२० ॥

किताब कुरान की, इनमें एते बाब हैं—खुलासा फुरमान का, गिरो दीन का, मेयराजनामे का, खुलासा इसलाम का, भिस्त सिफायत का बेवरा, हक की सूरत का, नाजी फिरके का, रूहों की बिने, नूर नूरतजल्ला, जहूरनामा, दोनामा, मीजान अर्स अजीम की महाकारन, मोमिन आए अर्स अजीम से, दोनामा के प्रकरण पांच किताब तमाम।

चौपाइयों तथा प्रकरणों का सम्पूर्ण संकलन

॥ प्रकरण ॥ ३६५ ॥ चौपाई ॥ ९४८२ ॥

॥ खुलासा सम्पूर्ण ॥

Nijanand App